B.Ed 4th Semester Exam Guide (Previous Year Solved)

Course: 1.4.10 Creating an Inclusive School

2 Marks Question

1. Define Special Education. বিশেষ শিক্ষার সংজ্ঞা দিন। विशेष शिक्षा की परिभाषा दें। **2018, 2020, 2022, 2023**

Ans: भूमिका: शिक्षा का मूल लक्ष्य प्रत्येक बालक की अंतर्निहित संभावनाओं का विकास करना है। लेकिन एक सामान्य कक्षा में बच्चों का एक समूह ऐसा होता है जो अपनी शारीरिक, मानसिक या सामाजिक विशेषताओं के कारण सामान्य शिक्षण विधियों में पिछड़ जाता है। इन विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के लिए जो नियोजित और वैज्ञानिक शिक्षण व्यवस्था की जाती है, उसे ही 'विशेष शिक्षा' कहा जाता है।

विशेष शिक्षा की मूल अवधारणा: विशेष शिक्षा सामान्य शिक्षा का ही एक परिवर्तित रूप है, जो विशिष्ट रणनीतियों और सामग्रियों पर आधारित होती है।

- **परिभाषा:** विशेष शिक्षा एक विशेष रूप से तैयार की गई निर्देशात्मक पद्धति है, जिसे अक्षम या विशिष्ट बच्चों (जैसे—दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित, बौद्धिक रूप से अक्षम या सीखने में अक्षम बच्चे) की अनूठी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बनाया गया है।
- **हलाहन और कॉफ़मैन (Hallahan & Kaufman) के अनुसार:** विशेष शिक्षा का अर्थ है— "एक विशेष रूप से तैयार की गई निर्देशात्मक व्यवस्था जो विशिष्ट बच्चों की अनूठी सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है।"
- **विशेषताएँ:**
    1. यह शिक्षार्थी-केंद्रित है और प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत क्षमता पर आधारित है।
    2. इसमें विशेष शिक्षण सामग्री (जैसे—ब्रेल, सांकेतिक भाषा) का उपयोग किया जाता है।
    3. इस शिक्षा में विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों और विशेषज्ञों (जैसे—स्पीच थेरेपिस्ट, फिजियोथेरेपिस्ट) की भूमिका अनिवार्य है।

www.dascoaching.in

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, विशेष शिक्षा कोई अलग द्वीप नहीं है, बल्कि यह विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को समाज और शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने का एक सोपान (सीढ़ी) है। आधुनिक समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) के संदर्भ में विशेष शिक्षा का महत्व अत्यधिक है, क्योंकि यह प्रत्येक बच्चे के शिक्षा के अधिकार को सुनिश्चित कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में मदद करती है।

2. Mention any four objectives of RCI for the education of children with special needs.
বিশেষ চাহিদাসম্পন্ন শিশুদের শিক্ষার জন্য RCI এর যে-কোনো চারটি উদ্দেশ্য লিখুন। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा हेतु RCI के कोई चार उद्देश्य लिखिए। **2018, 2021**

Ans: प्रस्तावना: भारतीय पुनर्वास परिषद (RCI) एक वैधानिक निकाय है, जिसका गठन 1992 में संसद के एक अधिनियम के माध्यम से किया गया था। इस परिषद का मुख्य उद्देश्य विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के लिए समावेशी और विशेष शिक्षा के मानकों को विनियमित, नियंत्रित और निर्धारित करना है।

<u>RCI के चार मुख्य उद्देश्य:</u>

1. **शिक्षकों और कर्मियों का प्रशिक्षण एवं मानकीकरण:** विशेष शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों, प्रशिक्षकों और पुनर्वास पेशेवरों के प्रशिक्षण के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम तैयार करना और उनके मानकों को नियंत्रित करना RCI का प्राथमिक उद्देश्य है। यह सुनिश्चित करता है कि विशेष बच्चों को कुशल और प्रशिक्षित व्यक्तियों के माध्यम से शिक्षा प्राप्त हो सके।
2. **पेशेवरों का पंजीकरण और केंद्रीय रजिस्टर का रखरखाव:** विशेष शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने के लिए योग्य और मान्यता प्राप्त व्यक्तियों के नाम 'केंद्रीय पुनर्वास रजिस्टर' (CRR) में दर्ज करना। इससे विशेष बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में अयोग्य व्यक्तियों के प्रवेश को रोकना संभव होता है।
3. **अनुसंधान और विकास को प्रोत्साहन:** विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा पद्धति को अधिक आधुनिक और वैज्ञानिक बनाने के लिए नियमित अनुसंधान और सर्वेक्षणों को प्रोत्साहित करना। इसके परिणामस्वरूप, विकलांगता के प्रकार के अनुसार नई शिक्षण सामग्री और रणनीतियों का नवाचार होता है।
4. **शिक्षण संस्थानों को मान्यता प्रदान करना:** विशेष शिक्षा या पुनर्वास से संबंधित पाठ्यक्रम संचालित करने के लिए उपयुक्त बुनियादी ढांचे वाले विश्वविद्यालयों या संस्थानों को अनुमोदन या मान्यता प्रदान करना। इसके माध्यम से देश भर में विशेष शिक्षा की गुणवत्ता बनाए रखना संभव होता है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, RCI केवल एक नियामक संस्था ही नहीं है, बल्कि यह विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के शिक्षा के अधिकार को सुनिश्चित करने का एक प्रमुख आधार है। शिक्षा के मानक निर्धारित करके और प्रशिक्षित मानव संसाधन तैयार करके, RCI एक समावेशी समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

3. What do you mean by "SLD"? 'SLD' বলতে কী বোঝেন? "SLD" से आप क्या समझते हैं? **2018, 2019, 2021**

Or, what do you understand by Specific Learning Disabilities (SLD)? নির্দিষ্ট শিখন অক্ষমতা বলতে আপনি কী বোঝেন? आप विशिष्ट अधिगम अक्षमता से क्या समझते हैं? **2024**

Ans: प्रस्तावना: समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) के संदर्भ में **'विशिष्ट अधिगम अक्षमता' (SLD)** एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणा है। यह मुख्य रूप से एक तंत्रिका संबंधी विकार (Neurological disorder) है जो बच्चे की सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने या गणितीय समस्याओं को हल करने की क्षमता को प्रभावित करता है।

विशिष्ट अधिगम अक्षमता की अवधारणा: SLD से तात्पर्य सीखने की समस्याओं के उस समूह से है जहाँ एक छात्र की बुद्धि सामान्य या सामान्य से अधिक होने के बावजूद, किसी विशेष क्षेत्र (जैसे- पढ़ना, लिखना या गणित) में दक्षता की कमी देखी जाती है। यह कोई शारीरिक विकलांगता या बौद्धिक पिछड़ापन नहीं है, बल्कि सूचना प्रसंस्करण (Information processing) की एक आंतरिक समस्या है।

SLD के मुख्य प्रकार:

1. **डिस्लेक्सिया (Dyslexia):** यह पठन संबंधी समस्या है। इसमें शब्दों को पहचानने या उच्चारण करने में कठिनाई होती है।
2. **डिस्ग्राफिया (Dysgraphia):** यह लेखन संबंधी समस्या है। यह स्पष्ट और सटीक रूप से लिखने में बाधा उत्पन्न करती है।
3. **डिस्कैलकुलिया (Dyscalculia):** यह गणितीय समस्या है। इसमें संख्याओं और गणना से संबंधित अवधारणाओं को समझने में कठिनाई होती है।

विशेषताएँ:

www.dascoaching.in

1. विद्यार्थी की बौद्धिक क्षमता और उसकी वास्तविक सफलता के बीच एक बड़ा अंतर दिखाई देता है।
2. यह जीवन भर बनी रह सकती है, लेकिन सही शिक्षण रणनीतियों के माध्यम से इसे नियंत्रित किया जा सकता है।
3. यह अक्षमता दृष्टि या श्रवण दोष के कारण उत्पन्न नहीं होती है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, SLD से प्रभावित बच्चे पिछड़े बच्चे नहीं हैं। उपयुक्त समावेशी वातावरण, विशेष शिक्षण पद्धतियों और सहानुभूति के माध्यम से इन छात्रों को मुख्यधारा की शिक्षा में सफलतापूर्वक जोड़ा जा सकता है। एक भावी शिक्षक के रूप में इन समस्याओं की पहचान करना और उसी के अनुरूप पाठ योजना बनाना अत्यंत आवश्यक है।

4. Give the legal definition of Visual Impairment. 'দৃষ্টিপ্রতিবন্ধী'র আইনগত সংজ্ঞা লিখুন। दृष्टिबाधा की कानूनी परिभाषा लिखिए। **2018, 2020, 2022**

Ans: प्रस्तावना: समावेशी शिक्षा के संदर्भ में, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान के लिए उनकी सटीक परिभाषा जानना अत्यंत आवश्यक है। भारत में दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों की रक्षा के लिए वर्तमान में 'दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016' (RPWD Act) का पालन किया जाता है। इसी अधिनियम के माध्यम से दृष्टिबाधिता की एक निश्चित कानूनी रूपरेखा प्रदान की गई है।

<u>दृष्टिबाधिता की कानूनी परिभाषा:</u> RPWD अधिनियम, 2016 के अनुसार, दृष्टिबाधिता को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया गया है— पूर्ण अंधता (Blindness) और अल्पदृष्टि (Low Vision)।

- **पूर्ण अंधता (Blindness):** यदि किसी व्यक्ति की दृष्टि निम्नलिखित शर्तों के अंतर्गत आती है, तो उसे कानूनी रूप से अंधा माना जाएगा:
    1. दृष्टि का पूर्ण अभाव।
    2. चश्मे या कॉन्टैक्ट लेंस के उपयोग के बाद भी बेहतर आंख की दृश्य तीक्ष्णता (Visual Acuity) 3/60 या 10/200 (स्नेलन चार्ट) से कम हो।
    3. दृष्टि क्षेत्र (Field of Vision) की सीमा 10 डिग्री से कम के कोण तक सीमित हो।
- **अल्पदृष्टि (Low Vision):** यदि उपचार या मानक चश्मे के उपयोग के बाद भी किसी व्यक्ति की दृष्टि निम्नलिखित सीमा के भीतर है:

1. बेहतर आंख की दृश्य तीक्ष्णता 6/18 से 6/60 से अधिक न हो या 20/60 से 20/200 (स्नेलन चार्ट) तक हो।
2. दृष्टि क्षेत्र की सीमा 10 डिग्री से 40 डिग्री के कोण तक हो।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, बी.एड. पाठ्यक्रम के अनुसार यह कानूनी परिभाषा अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसी के माध्यम से एक छात्र की विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं और सरकारी सुविधाओं (जैसे: आरक्षण या प्रमाण पत्र) की पात्रता निर्धारित होती है। सटीक मूल्यांकन के माध्यम से ही एक दृष्टिबाधित छात्र को सामान्य विद्यालय के सामान्य वातावरण में शामिल करना संभव है।

5. Mention any two problems of inclusion in real classroom situation. বাস্তব শ্রেণীকক্ষে অন্তর্ভুক্তিমূলক শিক্ষার যে কোনো দুটি সমস্যা উল্লেখ করুন। वास्तविक कक्षा में समावेशन की कोई दो समस्याएं लिखिए। **2018, 2021, 2023**

Ans: प्रस्तावना: समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जहाँ विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (CWSN) और सामान्य बच्चे एक ही वातावरण में साथ-साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं। हालाँकि सैद्धांतिक रूप से यह अवधारणा अत्यंत प्रभावी है, लेकिन पश्चिम बंगाल जैसे विकासशील राज्य की वास्तविक कक्षा परिस्थितियों में इसे लागू करते समय शिक्षकों और छात्रों को विभिन्न बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

<u>वास्तविक कक्षा में समावेशी शिक्षा की दो समस्याएँ:</u> वास्तविक कक्षा में समावेशन के मार्ग में आने वाली अनगिनत बाधाओं में से दो प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं:

1. बुनियादी ढाँचे और संसाधनों का अभाव: हमारे देश के अधिकांश सामान्य विद्यालयों का बुनियादी ढाँचा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के अनुकूल नहीं है।

- **भौतिक बाधाएँ:** अधिकांश स्कूलों में रैंप, विशेष शौचालय या लिफ्ट का अभाव है, जिससे अस्थि-बाधित (orthopedically disabled) बच्चों के आवागमन में कठिनाई होती है।
- **शिक्षण सामग्री का अभाव:** कक्षा में दृष्टिहीन छात्रों के लिए ब्रेल पुस्तकों या श्रवण-बाधितों के लिए हियरिंग एड और उपयुक्त ऑडियो-विजुअल उपकरणों की कमी समावेशन के मार्ग में एक बड़ी बाधा बनती है।

2. प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव: सामान्य विद्यालयों के शिक्षकों को अक्सर विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के मनोविज्ञान या उन्हें पढ़ाने की विशेष पद्धतियों (जैसे—सांकेतिक भाषा) के बारे में गहरा ज्ञान नहीं होता है।

- **शिक्षण पद्धति:** एक शिक्षक के लिए एक ही समय में सामान्य बच्चों और विशेष बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करना कठिन हो जाता है।
- **दृष्टिकोण:** उचित जागरूकता के अभाव में, कई बार शिक्षक इन बच्चों के प्रति सहानुभूति तो रखते हैं, लेकिन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से शिक्षा प्रदान नहीं कर पाते।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि समावेशी शिक्षा को सफल बनाने के लिए केवल कानून बनाना ही पर्याप्त नहीं है। विद्यालयों के बुनियादी ढाँचे में सुधार और नियमित व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षकों के कौशल में वृद्धि करना अत्यंत आवश्यक है। समाज की नकारात्मक मानसिकता को दूर करके और विद्यालय के वातावरण को मित्रवत बनाकर ही समावेशी शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को सार्थक किया जा सकता है।

6. Why should teachers have training in Inclusive Education? অন্তর্ভুক্তিমূলক শিক্ষায় শিক্ষকদের প্রশিক্ষণের প্রয়োজন কেন? समावेशी शिक्षा में शिक्षकों को प्रशिक्षण की आवश्यकता क्यों है? **2018, 2020, 2022**

Ans: प्रस्तावना: समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जहाँ सामान्य विद्यार्थियों के साथ-साथ विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (CWSN) और विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थी एक ही छत के नीचे शिक्षा प्राप्त करते हैं। इस विविधतापूर्ण कक्षा के संचालन के लिए शिक्षकों का विशेष प्रशिक्षण अनिवार्य है।

<u>प्रशिक्षण की आवश्यकता:</u>

1. **दृष्टिकोण में परिवर्तन:** प्रशिक्षण शिक्षकों में विद्यार्थियों के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करता है, जो समावेशीकरण की मुख्य शर्त है।
2. **शिक्षण विधियों का अनुकूलन:** सामान्य कक्षा में विभिन्न क्षमताओं वाले विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त शिक्षण-अधिगम रणनीतियों (जैसे- विभेदित निर्देश) को लागू करने के लिए प्रशिक्षण आवश्यक है।

3. **सहायक उपकरणों का उपयोग:** ब्रेल, श्रवण यंत्र या आईसीटी (ICT) जैसी सहायक तकनीकों का सही उपयोग सुनिश्चित करने में शिक्षक की दक्षता बढ़ती है।
4. **व्यक्तिगत शिक्षण योजना (IEP):** प्रत्येक विशेष आवश्यकता वाले बच्चे के लिए अलग शिक्षण योजना या 'Individualized Education Program' तैयार करने में प्रशिक्षित शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि केवल बुनियादी ढाँचा होने से ही समावेशी शिक्षा सफल नहीं होती। शिक्षकों का उचित प्रशिक्षण ही कक्षा में निष्पक्षता और समानता स्थापित कर सकता है और प्रत्येक बच्चे के पूर्ण विकास के अवसर सुनिश्चित करता है।

7. What do you mean by 'Case History'? 'ব্যক্তিগত ইতিহাস' পদ্ধতি বলতে কী বোঝেন? "केस हिस्ट्री" से आप क्या समझते हैं? **2018, 2020, 2022**

Ans: भूमिका: समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) व्यवस्था में प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत विविधता और समस्याओं को समझने के लिए जिस वैज्ञानिक डेटा संग्रह पद्धति का उपयोग किया जाता है, उसे आमतौर पर **केस हिस्ट्री (Case History)** या **व्यक्तिगत इतिहास पद्धति** कहा जाता है। यह मूल रूप से किसी व्यक्ति या बच्चे के जीवन का एक गहरा और निरंतर अन्वेषण है।

मुख्य चर्चा: व्यक्तिगत इतिहास पद्धति का अर्थ है किसी बच्चे के जन्म से पूर्व की स्थिति से लेकर वर्तमान समय तक उसके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और शैक्षिक विकास के सभी विवरणों का संग्रह और विश्लेषण करना।

1. इस पद्धति में बच्चे की **वंशानुक्रम (Heredity)**, पारिवारिक वातावरण, बचपन की बीमारियाँ, विकास के चरण और व्यवहार के स्वरूप के बारे में जानकारी ली जाती है।
2. आमतौर पर यह जानकारी साक्षात्कार (Interview), अवलोकन (Observation) और विभिन्न दस्तावेजों (जैसे- चिकित्सा रिपोर्ट) की समीक्षा के माध्यम से एकत्र की जाती है।
3. इसका मुख्य उद्देश्य बच्चे की किसी विशिष्ट समस्या या **अधिगम अक्षमता (Learning Disability)** के अंतर्निहित कारणों का पता लगाना और उसी के अनुसार उपचारात्मक कदम उठाना है।

www.dascoaching.in

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, शिक्षकों और मनोवैज्ञानिकों के लिए केस हिस्ट्री एक "दिशा-निशाने वाला मानचित्र" (Guiding Map) है। इसके माध्यम से एक शिक्षक विशेष आवश्यकता वाले बच्चे की क्षमताओं और सीमाओं की पहचान कर उसे सामान्य कक्षा में तालमेल बिठाने और सही शिक्षण सहायता प्रदान करने में सक्षम होता है।

8. What is the difference between Integrated and Inclusive Education? সমন্বিত এবং একীভূত শিক্ষার মধ্যে পার্থক্য কী? समेकित और समावेशी शिक्षा में क्या अंतर है? **2019, 2020, 2022, 2023**

Ans: भूमिका: शिक्षा के अधिकार को सार्वभौमिक बनाने और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को मुख्यधारा की शिक्षा में शामिल करने के लिए 'समान्वित शिक्षा' (Integrated Education) और 'समावेशी शिक्षा' (Inclusive Education) दो महत्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं। यद्यपि दोनों पद्धतियों का लक्ष्य एक ही है, लेकिन उनकी व्यावहारिक रणनीतियों और दर्शन में काफी अंतर है।

<u>समान्वित और समावेशी शिक्षा में अंतर:</u>

अंतर का आधार	**समान्वित शिक्षा (Integrated Education)**	**समावेशी शिक्षा (Inclusive Education)**
मूल दर्शन	यहाँ छात्र को मुख्यधारा के स्कूल के वातावरण के साथ तालमेल बिठाना पड़ता है।	यहाँ स्कूल के वातावरण और बुनियादी ढांचे को छात्र की आवश्यकता के अनुसार बदला जाता है।
पाठ्यक्रम	पाठ्यक्रम सामान्य बच्चों के अनुसार बनाया जाता है, जो विशेष बच्चों के लिए कठिन हो सकता है।	पाठ्यक्रम लचीला होता है और प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत जरूरतों के अनुसार बदला जाता है।
शिक्षक की भूमिका	सामान्य शिक्षक और विशेष शिक्षक के बीच समन्वय की कमी देखी जाती है।	सामान्य शिक्षक ही विशेष प्रशिक्षण के माध्यम से सभी बच्चों को एक साथ शिक्षा देते हैं।

www.dascoaching.in

बुनियादी ढांचा	बुनियादी ढांचे में कोई विशेष बदलाव नहीं किया जाता है।	बाधामुक्त वातावरण (रैंप, ब्रेल आदि) सुनिश्चित किया जाता है।
सहायता	छात्र को अलग से 'रिसोर्स रूम' (Resource Room) में सहायता दी जाती है।	कक्षा के भीतर ही सभी विविधताओं को स्वीकार करते हुए सहायता दी जाती है।

निष्कर्ष: अंततः यह कहा जा सकता है कि जहाँ समान्वित शिक्षा केवल सामान्य स्कूलों में विशेष बच्चों की उपस्थिति पर जोर देती है, वहीं समावेशी शिक्षा एक वैचारिक व्यवस्था है जो प्रत्येक बच्चे की विशिष्टता का सम्मान करती है और भेदभाव रहित शिक्षा का अधिकार सुनिश्चित करती है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समावेशी शिक्षा ही अधिक स्वीकार्य है।

9. Mention the year of establishment of RCI. Write the full name of SVNIRTAR. RCI-এর প্রতিষ্ঠা বছরের উল্লেখ করুন। SVNIRTAR-এর পুরো নাম লিখুন। RCI की स्थापना किस वर्ष हुई थी? SVNIRTAR का पूरा नाम लिखिए। **2019, 2021**

Ans: <u>प्रस्तावना:</u> भारत में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को मुख्यधारा की शिक्षा में शामिल करने और उनके अधिकारों व अवसरों को सुनिश्चित करने के लिए कई कानूनी निकाय और राष्ट्रीय स्तर के संस्थान महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इस व्यवस्था के विकास और विनियमन में **'भारतीय पुनर्वास परिषद' (RCI)** और **'स्वामी विवेकानंद राष्ट्रीय पुनर्वास प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान' (SVNIRTAR)** दो अत्यंत शक्तिशाली स्तंभ हैं।

<u>RCI की स्थापना (Establishment of RCI):</u> भारतीय पुनर्वास परिषद (RCI) की शुरुआत मूल रूप से **1986** में एक पंजीकृत सोसाइटी के रूप में हुई थी। हालांकि, सितंबर 1992 में पारित संसदीय अधिनियम (RCI अधिनियम, 1992) के माध्यम से इसे एक वैधानिक निकाय (Statutory Body) का दर्जा प्राप्त हुआ। इसने आधिकारिक तौर पर **22 जून, 1993** से एक वैधानिक निकाय के रूप में कार्य करना शुरू किया।

- **स्थापना वर्ष:** 1986 (सोसाइटी के रूप में); 1993 (वैधानिक निकाय के रूप में)।

SVNIRTAR का पूर्ण नाम (Full Name of SVNIRTAR): ओडिशा के कटक में स्थित यह राष्ट्रीय स्तर का संस्थान विशेष रूप से शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों के पुनर्वास और प्रशिक्षण के लिए कार्य करता है। इसका पूरा नाम है:

- **स्वामी विवेकानंद राष्ट्रीय पुनर्वास प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (Swami Vivekanand National Institute of Rehabilitation Training and Research)।**

निष्कर्ष: अंत में यह कहा जा सकता है कि RCI विशेष शिक्षा और पुनर्वास से संबंधित पाठ्यक्रमों की गुणवत्ता नियंत्रण और पेशेवर कर्मियों के पंजीकरण का कार्य करता है। वहीं दूसरी ओर, SVNIRTAR शारीरिक पुनर्वास के क्षेत्र में उच्च स्तरीय अनुसंधान और प्रशिक्षण प्रदान करता है। एक **समावेशी समाज (Inclusive Society)** के निर्माण में इन दोनों संस्थानों का योगदान अतुलनीय है, जिसने विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के शिक्षा के अधिकार को और अधिक सुदृढ़ किया है।

10. State any two names of priority areas associated with BMF. BMF-এর সাথে যুক্ত যে কোনো দুটি অগ্রাধিকার ক্ষেত্রের নাম উল্লেখ করুন। BMF से संबंधित किसी भी दो प्राथमिकता क्षेत्रों के नाम लिखिए। **2019, 2020, 2022**

Ans: प्रस्तावना: समावेशी शिक्षा प्रणाली में प्रत्येक विद्यार्थी के समान अधिकार सुनिश्चित करने के लिए एक बाधामुक्त और सहायक वातावरण बनाना अत्यंत आवश्यक है। पश्चिम बंगाल बाबा साहेब अंबेडकर शिक्षा विश्वविद्यालय (BSAEU) के पाठ्यक्रम के अनुसार, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) को मुख्यधारा की शिक्षा में सफलतापूर्वक शामिल करने के लिए विभिन्न रणनीतिक प्राथमिकता वाले क्षेत्रों का निर्धारण किया गया है।

BMF से जुड़े दो प्राथमिकता वाले क्षेत्र:

1. भौतिक पहुंच और बुनियादी ढांचा (Physical Accessibility and Infrastructure): एक समावेशी विद्यालय की मुख्य प्राथमिकता विद्यालय के बुनियादी ढांचे को इस तरह विकसित करना है कि किसी भी प्रकार की शारीरिक अक्षमता वाला बच्चा आसानी से आवाजाही कर सके। इसके दो मुख्य पहलू हैं:

- **रैंप और रेलिंग की स्थापना:** सीढ़ियों के साथ-साथ व्हीलचेयर के उपयोग के लिए ढालू रास्ता या रैंप बनाना।

- **दिव्यांग-अनुकूल शौचालय:** विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के उपयोग के योग्य शौचालयों का निर्माण करना।

2. शिक्षण-अधिगम सामग्री का अनुकूलन (Adaptation of Teaching-Learning Materials - TLM): छात्रों के सीखने की बाधाओं को दूर करने के लिए पाठ्यपुस्तकों और अन्य उपकरणों को उनके अनुकूल बनाना BMF के प्रमुख लक्ष्यों में से एक है।

- **ब्रेल और ऑडियो बुक्स:** दृष्टिबाधित छात्रों के लिए ब्रेल पाठ्यपुस्तकें और सुनने योग्य ऑडियो सामग्री की व्यवस्था करना।
- **सहायक तकनीक (Assistive Technology):** स्पीच-टू-टेक्स्ट (Speech to text) यंत्र या विशेष सॉफ्टवेयर का उपयोग करके सीखने की प्रक्रिया को सरल बनाना।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, भौतिक बुनियादी ढांचे का विकास और उपयुक्त शिक्षण सामग्री का प्रावधान न केवल विशेष बच्चों की सहायता करता है, बल्कि एक भेदभाव रहित शैक्षिक वातावरण बनाने में भी मदद करता है। इन प्राथमिकता वाले क्षेत्रों के कार्यान्वयन से विद्यालय का प्रत्येक छात्र अपनी सीमाओं को पार कर सामान्य छात्रों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर शिक्षा प्राप्त करने का अवसर पाता है।

11. Mention any two causes of Visual Impairment (VI). দৃষ্টিপ্রতিবন্ধকতার দুটি কারণ উল্লেখ করুন। दृष्टिबाधा के दो कारणों का उल्लेख कीजिए। **2019, 2021, 2022, 2024**

Ans: भूमिका: दृष्टिबाधिता (Visual Impairment) एक ऐसी शारीरिक स्थिति है जिसमें कोई व्यक्ति सामान्य चश्मा या लेंस के उपयोग के बाद भी सामान्य रूप से देख नहीं पाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, यह आंशिक या पूर्ण हो सकती है। समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) में बच्चों की विशेष आवश्यकताओं को समझने के लिए दृष्टिबाधिता के कारणों की पहचान करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

दृष्टिबाधिता के दो मुख्य कारण: दृष्टिबाधिता के कारणों को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जा सकता है—जन्मजात और अर्जित। नीचे दो महत्वपूर्ण कारणों पर चर्चा की गई है:

1. **आनुवंशिक या जन्मजात कारण (Hereditary or Congenital Causes):** कई मामलों में बच्चा जन्म से ही दृष्टिहीन पैदा होता है। यदि माता-पिता में कोई आनुवंशिक दोष है, तो वह संतान में संचारित हो सकता है। इसके अलावा, गर्भावस्था के दौरान माँ में कुपोषण, हानिकारक दवाओं के

प्रभाव या रूबेला (जर्मन खसरा) जैसी संक्रामक बीमारियों से माँ के संक्रमित होने पर बच्चे की आँखों की संरचना बाधित हो जाती है, जिससे दृष्टिबाधिता उत्पन्न होती है।

2. **अर्जित रोग या शारीरिक बीमारी (Acquired Diseases):** जन्म के बाद विभिन्न रोगों के कारण भी दृष्टि प्रभावित हो सकती है। इनमें से एक प्रमुख कारण विटामिन-ए (Vitamin A) की कमी है, जिसके कारण बच्चों को रतौंधी (Night blindness) हो जाती है और उचित उपचार के अभाव में यह स्थायी अंधेपन का रूप ले सकती है। इसके अलावा, वयस्कों में मोतियाबिंद (Cataract), ग्लूकोमा या डायबिटिक रेटिनोपैथी जैसी जटिलताएँ दृष्टि खोने के प्रमुख कारण हैं।

निष्कर्ष: अंततः यह कहा जा सकता है कि दृष्टिबाधिता कोई अभिशाप नहीं बल्कि एक शारीरिक सीमा है। सही समय पर रोग की पहचान, पौष्टिक आहार और उन्नत उपचार के माध्यम से कई मामलों में इस समस्या को रोकना संभव है। एक शिक्षक के रूप में, समावेशी कक्षा में इन छात्रों की पहचान करना और उनकी आवश्यकताओं के अनुसार विशेष शिक्षण की व्यवस्था करना हमारा नैतिक उत्तरदायित्व है।

12. Why and when are BASIC-MR and FACP used? কেন এবং কখন BASIC-MR এবং FACP ব্যবহৃত হয়? BASIC-MR और FACP का उपयोग क्यों और कब किया जाता है? **2019, 2021**

Ans: प्रस्तावना: बौद्धिक अक्षमता (Intellectual Disability) वाले बच्चों के सीखने की प्रगति को मापने और उनके लिए उपयुक्त व्यक्तिगत शैक्षणिक कार्यक्रम (IEP) तैयार करने के उद्देश्य से इन दो विशेष मूल्यांकन विधियों का उपयोग किया जाता है।

BASIC-MR (Behavioral Assessment Scales for Indian Children with Mental Retardation):

उपयोग का कारण: इसका उपयोग बच्चे के वर्तमान व्यवहार के स्तर और समस्याग्रस्त व्यवहारों की पहचान करने के लिए किया जाता है। इसके माध्यम से बच्चे की क्षमताओं और कमजोरियों के क्षेत्रों को निर्धारित किया जा सकता है। **कब उपयोग किया जाता है:**

- जब किसी बच्चे का बौद्धिक विकास धीमा हो और उसके अनुकूलन व्यवहार (Adaptive Behavior) के मूल्यांकन की आवश्यकता हो।
- बच्चे के विकास के चरणों के आधार पर शिक्षण योजना बनाने की शुरुआत में इसका उपयोग किया जाता है।

FACP (Functional Assessment Checklist for Programming):

उपयोग का कारण: FACP का मुख्य उद्देश्य बच्चे के कार्यात्मक कौशल (Functional Skills) जैसे—व्यक्तिगत, सामाजिक, शैक्षिक और व्यावसायिक कौशल को मापना है। यह बच्चे को आत्मनिर्भर बनाने में मदद करता है। **कब उपयोग किया जाता है-**

- दैनिक जीवन के आवश्यक कार्यों को सिखाने के लिए क्रमिक पाठ्यक्रम (पूर्व-प्राथमिक से पूर्व-व्यावसायिक) तैयार करते समय।
- शिक्षा सत्र की शुरुआत में लक्ष्य निर्धारित करने और वर्ष के अंत में उन लक्ष्यों की प्रगति की जाँच करने के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

निष्कर्ष: अंत में, यह कहा जा सकता है कि BASIC-MR और FACP विशेष शिक्षा प्रणाली के अनिवार्य उपकरण हैं। जहाँ BASIC-MR बच्चे के व्यवहार पर ध्यान केंद्रित करता है, वहीं FACP उसके व्यावहारिक और व्यावसायिक कौशल पर जोर देता है। इन दोनों पद्धतियों के सही अनुप्रयोग के माध्यम से ही एक विशेष आवश्यकता वाले बच्चे को समाज की मुख्यधारा के योग्य बनाया जा सकता है।

13. Define Intellectual Impairment. বৌদ্ধিক প্রতিস্পর্ধিতার সংজ্ঞা দিন। बौद्धिक अक्षमता की परिभाषा दें। **2019, 2020, 2021, 2023, 2025**

Ans: भूमिका: समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) के संदर्भ में बौद्धिक अक्षमता (Intellectual Disability) एक महत्वपूर्ण विषय है। यह मुख्य रूप से व्यक्ति के मानसिक विकास और सीखने की क्षमता की सीमाओं को दर्शाता है, जो 18 वर्ष की आयु से पहले प्रकट होती हैं।

परिभाषा: अमेरिकन एसोसिएशन ऑन इंटेलेक्चुअल एंड डेवलपमेंटल डिसेबिलिटीज (AAIDD) के अनुसार, बौद्धिक अक्षमता एक ऐसी स्थिति है जिसे मुख्य रूप से दो क्षेत्रों में सीमाओं द्वारा पहचाना जाता है:

1. **बौद्धिक कार्यप्रणाली (Intellectual Functioning):** औसत बुद्धि (IQ) की तुलना में काफी कम बुद्धि होना (आमतौर पर 70 से कम)। इसके परिणामस्वरूप तर्क करने, योजना बनाने और समस्या समाधान की क्षमता प्रभावित होती है।
2. **अनुकूलनकारी व्यवहार (Adaptive Behavior):** दैनिक सामाजिक मेलजोल, व्यावहारिक कौशल (जैसे—स्वयं की देखभाल) और वैचारिक कौशल के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सीमाएं होना।

सरल शब्दों में कहें तो, वह स्थिति जिसमें व्यक्ति का मानसिक विकास उसके साथियों की तुलना में धीमी गति से होता है और जिसके कारण उसका दैनिक जीवन प्रभावित होता है, उसे बौद्धिक अक्षमता कहा जाता है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, बौद्धिक अक्षमता कोई बीमारी नहीं है, बल्कि एक विशेष स्थिति है। उचित प्रशिक्षण, सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण और समावेशी वातावरण के माध्यम से ऐसे विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को समाज की मुख्य धारा में वापस लाना संभव है।

14. Mention any two objectives of RCI for the education of children with special needs.

বিশেষ চাহিদাসম্পন্ন শিশুদের শিক্ষার জন্য RCI-এর দুটি উদ্দেশ্য উল্লেখ করুন। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा के लिए RCI के दो उद्देश्य लिखिए। **2023**

Ans: प्रस्तावना: भारत में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा और पुनर्वास के मानकों को बनाए रखने में 'भारतीय पुनर्वास परिषद' या RCI (Rehabilitation Council of India) एक वैधानिक निकाय के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। 1993 में यह एक स्वायत्त निकाय बन गया। समावेशी शिक्षा प्रणाली को सफल बनाने और विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए यह परिषद विशिष्ट उद्देश्यों के साथ कार्य करती है।

RCI के दो मुख्य उद्देश्य: विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए RCI के अनेक उद्देश्यों में से दो प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. **प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का मानकीकरण और विनियमन:** RCI का प्राथमिक उद्देश्य विशेष शिक्षा (Special Education) और पुनर्वास से संबंधित विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यक्रम निर्धारित करना और पूरे भारत में उसकी समानता बनाए रखना है। यह सुनिश्चित करता है कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पढ़ाने वाले शिक्षकों और पेशेवरों को उन्नत और आधुनिक प्रशिक्षण मिले। प्रशिक्षण के इन मानकों को बनाए रखने से बच्चों के लिए सही शिक्षण पद्धति सुनिश्चित करना संभव हो पाता है।
2. **पेशेवरों का पंजीकरण और केंद्रीय रजिस्टर का रखरखाव:** विशेष शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले सभी कुशल पेशेवरों और शिक्षकों को केंद्रीय पुनर्वास रजिस्टर (CRR) में पंजीकृत करना RCI का एक मुख्य कार्य है। इसके परिणामस्वरूप केवल योग्य और मान्यता प्राप्त व्यक्ति ही विशेष

आवश्यकता वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए नियुक्त किए जा सकते हैं। यह शिक्षा की गुणवत्ता की रक्षा करने और बच्चों को गलत या अप्रशिक्षित शिक्षण विधियों से बचाने में मदद करता है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, RCI न केवल शिक्षकों को प्रशिक्षित करती है, बल्कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के समग्र विकास के लिए एक संरचनात्मक आधार भी तैयार करती है। उपरोक्त उद्देश्यों के पालन के माध्यम से ही समाज और शिक्षा के क्षेत्र में समावेश (Inclusion) की प्रक्रिया को वास्तव में साकार किया जा सकता है।

15. Mention any two causes of Hearing Impairment. শ্রবণ প্রতিস্পর্ধিতার দুটি কারণ লিখুন। श्रवण बाधा के दो कारण लिखिए। **2023**

Ans: प्रस्तावना: सामान्यतः यदि किसी व्यक्ति में सामान्य श्रवण क्षमता नहीं होती है, अर्थात यदि उसे सुनने में कोई समस्या होती है, तो उसे **श्रवण अक्षमता (Hearing Impairment)** कहा जाता है। यह आंशिक या पूर्ण हो सकती है। समावेशी शिक्षा के वातावरण में ऐसे छात्रों की पहचान करना और उनकी विशेष आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण की व्यवस्था करना एक भावी शिक्षक के मुख्य कर्तव्यों में से एक है।

श्रवण अक्षमता के दो मुख्य कारण: श्रवण अक्षमता के कारणों को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जा सकता है: जन्मजात और अर्जित। नीचे दो महत्वपूर्ण कारणों पर चर्चा की गई है-

1. **जन्मजात कारण (Congenital Causes):** यदि बच्चा जन्म के समय या जन्म से पहले ही सुनने की शक्ति खो देता है, तो उसे जन्मजात कारण कहा जाता है। इसका एक मुख्य कारण **वंशानुक्रम (Heredity)** है। यदि माता या पिता के परिवार में किसी को इस प्रकार की समस्या है, तो आनुवंशिक कारणों से बच्चा श्रवण बाधित हो सकता है। इसके अलावा, यदि गर्भावस्था के दौरान माँ रूबेला (जर्मन खसरा) जैसी बीमारी से पीड़ित होती है या किसी जहरीली दवा का सेवन करती है, तो बच्चे के श्रवण तंत्र का विकास बाधित हो सकता है।
2. **अर्जित कारण (Acquired Causes):** जन्म के बाद किसी कारण से सुनने की शक्ति क्षतिग्रस्त होने को अर्जित कारण कहा जाता है। इनमें **संक्रामक रोग और दुर्घटनाएँ** प्रमुख हैं। बचपन में खसरा, कण्ठमाला (Mumps) या मेनिन्जाइटिस जैसी जटिल बीमारियों के कारण कान की श्रवण तंत्रिकाएं क्षतिग्रस्त हो सकती हैं। इसके अलावा, लंबे समय तक तेज शोर वाले वातावरण में रहने या कान में

गंभीर चोट लगने से कान के पर्दे (Ear-drum) को नुकसान पहुँचता है, जिससे स्थायी बहरापन हो सकता है।

निष्कर्ष: अंत में यह कहा जा सकता है कि श्रवण अक्षमता केवल एक शारीरिक समस्या नहीं है, बल्कि यह छात्र के सामाजिक और शैक्षिक विकास में भी बाधा उत्पन्न करती है। गर्भावस्था के दौरान जागरूकता और बचपन में सही टीकाकरण व कान की देखभाल के माध्यम से कई मामलों में इस समस्या को रोका जा सकता है। समावेशी विद्यालयों में ऐसे छात्रों के लिए श्रवण यंत्रों (Hearing Aids) और विशेष शिक्षण विधियों का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है।

16. Mention any two skills required for teachers in inclusive setting. অন্তর্ভুক্তিমূলক ব্যবস্থায় শিক্ষকদের জন্য প্রয়োজনীয় দুটি দক্ষতার উল্লেখ করুন। समावेशी शिक्षा व्यवस्था में शिक्षकों को आवश्यक दो कौशलों का उल्लेख करें। **2023**

Ans: भूमिका: समावेशी शिक्षा प्रणाली एक ऐसा शिक्षण वातावरण है, जहाँ सामान्य छात्रों के साथ-साथ विशेष आवश्यकता वाले बच्चों या पिछड़े छात्रों को एक ही कक्षा में रखकर शिक्षा दी जाती है। इस विविधतापूर्ण कक्षा के प्रबंधन के लिए शिक्षकों को पारंपरिक शिक्षण विधियों के अलावा कुछ विशेष व्यावसायिक कौशलों में दक्ष होना आवश्यक है।

शिक्षकों के लिए दो आवश्यक कौशल:

1. अनुकूलन और संशोधन कौशल (Skill of Adaptation and Modification) एक समावेशी कक्षा में विभिन्न बौद्धिक और शारीरिक क्षमताओं वाले छात्र होते हैं। इसलिए, शिक्षक को पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धति और मूल्यांकन के मामले में लचीला होना चाहिए।

- **विवरण:** शिक्षक को प्रत्येक छात्र की सीखने की जरूरतों के अनुसार सामान्य पाठ्यक्रम को सरल बनाकर प्रस्तुत करना चाहिए। उदाहरण के लिए, दृष्टिबाधित छात्र के लिए श्रव्य सामग्री (Audio tools) का उपयोग करना या किसी कुशाग्र बुद्धि वाले छात्र के लिए विशेष कार्य योजना बनाने का कौशल होना अत्यंत आवश्यक है।

2. सहयोगात्मक कौशल (Collaborative Skill) समावेशी शिक्षा कोई एकल प्रयास नहीं है। इसमें शिक्षक को विभिन्न पेशेवरों के साथ समन्वय बनाकर चलना पड़ता है।

- **विवरण:** शिक्षक को विशेष शिक्षकों (Special Educators), मनोवैज्ञानिकों, चिकित्सकों और अभिभावकों के साथ नियमित संपर्क और सूचनाओं का आदान-प्रदान करना होता है। इस टीम वर्क के माध्यम से ही एक शिक्षक प्रत्येक बच्चे के लिए एक सहायक वातावरण तैयार करने में सक्षम होता है।

निष्कर्ष: अंततः यह कहा जा सकता है कि समावेशी शिक्षा प्रणाली को सफल बनाने के लिए शिक्षक के पास केवल विषय का ज्ञान होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि संवेदनशीलता और उचित रणनीतियों का प्रयोग भी अनिवार्य है। उपरोक्त दो कौशल शिक्षक को कक्षा में समानता बनाए रखने और प्रत्येक छात्र की पूर्ण क्षमता को विकसित करने में सहायता करते हैं।

17. Mention any two Acts formulated by the Govt. of India for the PWD. PWD-দের জন্য ভারত সরকার প্রণীত যে কোনো দুটি আইন উল্লেখ করুন। भारत सरकार द्वारा विकलांग व्यक्तियों के लिए बनाए गए किसी भी दो अधिनियमों का उल्लेख करें।**2024**

Ans: प्रस्तावना: भारत के लोकतांत्रिक ढांचे में समाज के सभी वर्गों के लिए समान अधिकार सुनिश्चित करने हेतु संविधान में विशेष प्रावधान किए गए हैं। दिव्यांग व्यक्तियों को सामाजिक मुख्यधारा में शामिल करने, उन्हें सुरक्षा प्रदान करने और भेदभाव को समाप्त करने के लिए भारत सरकार ने समय-समय पर कई ऐतिहासिक कानून बनाए हैं। ये कानून मुख्य रूप से उनकी शिक्षा, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं।

भारत सरकार द्वारा अधिनियमित दो प्रमुख कानून:

1. दिव्यांग व्यक्ति अधिनियम, 1995 (Persons with Disabilities Act, 1995): यह अधिनियम भारत में विशेष रूप से सक्षम व्यक्तियों के अधिकारों को स्थापित करने की दिशा में पहला बड़ा कदम था। इसकी मुख्य विशेषताएं हैं:

- अक्षमता के सात प्रकारों की पहचान की गई।
- दिव्यांग छात्रों के लिए 18 वर्ष की आयु तक मुफ्त शिक्षा का प्रावधान।
- सरकारी नौकरियों में दिव्यांगों के लिए 3% आरक्षण की व्यवस्था (जिसे अब संशोधित कर दिया गया है)।

2. दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 (Rights of Persons with Disabilities Act, 2016): 1995 के अधिनियम को अधिक आधुनिक और सशक्त बनाने के लिए यह नया कानून लाया गया। इसके मुख्य पहलू हैं:

- अक्षमता के प्रकारों को 7 से बढ़ाकर 21 कर दिया गया (जैसे- एसिड अटैक पीड़ित, पार्किंसंस रोग आदि)।
- सरकारी नौकरियों में आरक्षण 3% से बढ़ाकर 4% और उच्च शिक्षा में 5% कर दिया गया।
- 6 से 18 वर्ष की आयु के दिव्यांग बच्चों के लिए 'मुफ्त शिक्षा' अनिवार्य कर दी गई।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, 1995 और 2016 के ये दो कानून भारत में एक समावेशी समाज और शिक्षा व्यवस्था के निर्माण के आधार स्तंभ हैं। ये कानून दिव्यांग व्यक्तियों को केवल दया का पात्र न मानकर, उनके गरिमामय जीवन और मौलिक अधिकारों की कानूनी गारंटी प्रदान करते हैं। एक भावी शिक्षक के रूप में, एकीकृत शिक्षा प्रणाली के सफल कार्यान्वयन के लिए इन कानूनों की स्पष्ट समझ होना अत्यंत आवश्यक है।

18. What is 'Buddy System'? 'বাডি সিস্টেম' কী? 'बडी सिस्टम' क्या है? **2024**

Ans: भूमिका: समावेशी कक्षा में विविध शिक्षार्थियों के बीच आपसी बातचीत और सहयोग के माध्यम से सीखने का माहौल बनाना ही 'बडी सिस्टम' (Buddy System) का मुख्य लक्ष्य है। यह एक प्रकार की पीयर-सपोर्ट (Peer-support) पद्धति है जहाँ एक सक्षम छात्र और एक विशेष आवश्यकता वाले या पिछड़े छात्र को 'बडी' या जोड़ी के रूप में तैयार किया जाता है।

बड़ी सिस्टम की अवधारणा और महत्व: बडी सिस्टम एक सहकर्मी शिक्षण रणनीति है जहाँ दो या दो से अधिक छात्रों को एक साथ काम करने के लिए नियुक्त किया जाता है। मूल रूप से, एक विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (CWSN) को एक सामान्य छात्र के साथ जोड़ा जाता है ताकि वह कक्षा के सामान्य वातावरण के साथ तालमेल बिठा सके।

1. **शैक्षिक सहायता:** बडी या साथी छात्र अपने साथी को कक्षा के पाठ समझने, नोट्स लेने या होमवर्क पूरा करने में मदद करता है।
2. **सामाजिककरण:** इसके परिणामस्वरूप विशेष आवश्यकता वाले छात्रों में अलगाव की भावना दूर होती है और वे सामाजिक कौशल सीखते हैं।

3. **सुरक्षा और आत्मविश्वास:** नए वातावरण में या लंच ब्रेक के समय, साथी छात्र दूसरे को मानसिक सुरक्षा प्रदान करता है, जिससे दोनों में आत्मविश्वास बढ़ता है।

निष्कर्ष: अंत में यह कहा जा सकता है कि समावेशी विद्यालय की संस्कृति विकसित करने के लिए बडी सिस्टम एक शक्तिशाली उपकरण है। यह न केवल विशेष छात्रों की सहायता करता है, बल्कि सामान्य छात्रों में सहानुभूति, नेतृत्व और मानवीय गुणों का विकास करके एक संवेदनशील समाज के निर्माण में भी मदद करता है।

19. Distinguish between Special Education and Inclusive Education. বিশেষ শিক্ষা ও অন্তর্ভুক্তিমূলক শিক্ষার মধ্যে পার্থক্য নিরূপণ করুন। विशेष शिक्षा और समावेशी शिक्षा के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए। **2024**

Ans: भूमिका: शिक्षा का मुख्य लक्ष्य प्रत्येक बच्चे की क्षमता को विकसित करना है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए मुख्य रूप से दो शिक्षा प्रणालियाँ प्रचलित हैं—विशेष शिक्षा और समावेशी शिक्षा। इन दोनों प्रणालियों के दर्शन और कार्यान्वयन के तरीके पूरी तरह से भिन्न हैं।

विशेष शिक्षा बनाम समावेशी शिक्षा:

अंतर का आधार	विशेष शिक्षा (Special Education)	समावेशी शिक्षा (Inclusive Education)
छात्र की प्रकृति	यहाँ केवल विशिष्ट विकलांगता या विशेष आवश्यकता वाले बच्चे ही शिक्षा प्राप्त करते हैं।	यहाँ सामान्य बच्चे और विशेष आवश्यकता वाले बच्चे—दोनों एक साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं।
विद्यालय का वातावरण	यह एक अलग शिक्षा प्रणाली है, जो मुख्यधारा के स्कूलों से अलग वातावरण में संचालित होती है।	यह सामान्य स्कूलों के स्वाभाविक वातावरण में संचालित होती है और विविधता को स्वीकार करती है।
पाठ्यचर्या	छात्रों की अक्षमता के अनुसार पाठ्यचर्या अत्यधिक लचीली और विशेष रूप से तैयार होती है।	सभी के लिए समान पाठ्यचर्या होती है, लेकिन विशेष बच्चों के लिए आवश्यक सहायता की व्यवस्था होती है।
शिक्षक	केवल प्रशिक्षित विशेष शिक्षकों (Special Educators) द्वारा संचालित।	सामान्य शिक्षक और विशेष शिक्षक दोनों के सहयोग से शिक्षा प्रदान की जाती है।

दर्शन	इसका मुख्य आधार छात्र की समस्या या अक्षमता को महत्व देना है।	इसका मुख्य आधार सभी की भागीदारी के अधिकार और समानता को महत्व देना है।

निष्कर्ष: अंत में, यह कहा जा सकता है कि जहाँ विशेष शिक्षा एक विशिष्ट समूह को अलग करके शिक्षा के अवसर देती है, वहीं समावेशी शिक्षा समाज के सभी स्तरों के बच्चों को एक ही छत के नीचे लाने की बात करती है। आधुनिक शिक्षा शास्त्र में समावेशी शिक्षा को अधिक लोकतांत्रिक और प्रभावी माना जाता है।

20. Write any two characteristics of an Inclusive School. অন্তর্ভুক্তিমূলক বিদ্যালয়ের যে কোনো দুটি বৈশিষ্ট্য লিখুন। एक समावेशी विद्यालय की कोई दो विशेषताएँ लिखिए। **2024**

Ans: प्रस्तावना: समावेशी विद्यालय एक ऐसा शैक्षणिक संस्थान है जहाँ जाति, धर्म, वर्ण, लिंग या शारीरिक और मानसिक क्षमता की परवाह किए बिना सभी बच्चों को एक साथ शिक्षा प्रदान की जाती है। यह केवल विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य स्कूलों में प्रवेश दिलाना नहीं है, बल्कि प्रत्येक की आवश्यकता के अनुसार सीखने के वातावरण में बदलाव लाना है।

समावेशी विद्यालय की दो मुख्य विशेषताएँ:

1. **विविधता की स्वीकृति और लचीलापन:** समावेशी विद्यालय की मुख्य विशेषता छात्रों की व्यक्तिगत विविधता को बाधा के बजाय एक संसाधन के रूप में स्वीकार करना है। यहाँ पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धति और मूल्यांकन प्रणाली में पर्याप्त लचीलापन होता है। हर बच्चे के सीखने की गति और शैली अलग होती है—इस सत्य को स्वीकार करते हुए शिक्षक आवश्यकतानुसार **विभेदित निर्देश (Differentiated Instruction)** का उपयोग करते हैं।
2. **बाधामुक्त वातावरण और समान अवसर:** इस प्रकार के विद्यालयों में बुनियादी ढाँचे और मानसिक—दोनों तरह की बाधाओं को दूर करने का प्रयास किया जाता है। शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों के लिए जैसे रैंप (Ramp) या विशेष शौचालय की व्यवस्था होती है, वैसे ही कक्षा में एक मित्रवत वातावरण बनाया जाता है जहाँ कोई भी खुद को अलग-थलग या उपेक्षित महसूस न करे। सभी छात्रों के लिए समान भागीदारी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अधिकार सुनिश्चित करना ही इसका लक्ष्य है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, समावेशी विद्यालय सामाजिक एकजुटता स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम है। यह न केवल विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए, बल्कि सामान्य बच्चों में भी सहानुभूति, धैर्य और विविधता

के प्रति सम्मान विकसित करने में मदद करता है, जो एक लोकतांत्रिक समाज के निर्माण के लिए अनिवार्य है।

21. What is IEP? IEP বলতে আপনি কী বোঝেন? IEP से आप क्या समझते हैं? **2024**

Ans: <u>प्रस्तावना</u>: समावेशी शिक्षा प्रणाली में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) को मुख्यधारा के स्कूलों में शामिल करने के लिए एक विशेष शिक्षण रणनीति की आवश्यकता होती है। इसी आवश्यकता को पूरा करने के उद्देश्य से 'व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम' (IEP) का नवाचार हुआ है। यह मूल रूप से एक लिखित दस्तावेज़ है जो प्रत्येक विशेष बच्चे की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार तैयार किया जाता है।

<u>IEP की परिभाषा और अर्थ</u>: IEP का अर्थ है 'व्यक्तिगत शिक्षा योजना'। यह एक विशिष्ट लक्ष्य-आधारित रणनीति है, जो विशेष योग्यता वाले छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन के वर्तमान स्तर का मूल्यांकन करके उनके लिए उपयुक्त शिक्षण पद्धति की रूपरेखा तैयार करती है। यह कोई सामान्य कक्षा-आधारित शिक्षण नहीं है, बल्कि बच्चे की विशिष्ट अक्षमता या सीमाओं को ध्यान में रखते हुए उसके संभावित विकास को सुनिश्चित करने वाली एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है।

<u>IEP की मुख्य विशेषताएं:</u>

1. यह छात्र की ताकत और कमजोरियों की पहचान करता है।
2. इसमें अल्पकालिक और दीर्घकालिक शैक्षिक लक्ष्य (Goals) निर्धारित किए जाते हैं।
3. आवश्यकतानुसार विशेष सेवाओं, जैसे—स्पीच थेरेपी या ऑक्यूपेशनल थेरेपी का प्रावधान रखा जाता है।
4. इस योजना का निर्माण शिक्षक, अभिभावक और विशेषज्ञों के समन्वय से किया जाता है।

<u>निष्कर्ष</u>: निष्कर्षतः, BSAEU पाठ्यक्रम के अनुसार 'Creating an Inclusive School' कोर्स में IEP का महत्व अत्यधिक है। यह विविध कक्षाओं में पिछड़े छात्रों को समान अवसर प्रदान करने की एक प्रमुख कुंजी है, जो शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने और छात्र के आत्मविश्वास के निर्माण में सहायक भूमिका निभाती है।

www.dascoaching.in

22. Mention any two characteristics of special education. বিশেষ শিক্ষার যে কোনো দুটি বৈশিষ্ট্য উল্লেখ করো। विशेष शिक्षा की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। **2025**

Ans: <u>भूमिका</u>: विशेष शिक्षा (Special Education) एक विशेष रूप से नियोजित शिक्षण पद्धति है, जिसका उद्देश्य विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) की व्यक्तिगत सीखने की अक्षमताओं और सीमाओं को दूर करने में मदद करना है। यह सामान्य मुख्यधारा की शिक्षा से थोड़ा अलग और छात्र-केंद्रित होती है।

<u>विशेष शिक्षा की दो विशेषताएँ:</u>

1. **व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (IEP):** विशेष शिक्षा की प्रमुख विशेषताओं में से एक प्रत्येक बच्चे के लिए एक अलग और विशिष्ट शिक्षण योजना या IEP तैयार करना है। चूंकि प्रत्येक विशेष आवश्यकता वाले बच्चे की शारीरिक या मानसिक सीमाएं अलग होती हैं, इसलिए उनकी सीखने की क्षमता, रुचि और आवश्यकता के अनुसार विशेष पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति निर्धारित की जाती है।
2. **विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षक और शिक्षण तकनीक:** इस शिक्षा प्रणाली में सामान्य शिक्षकों के स्थान पर विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षक (Special Educators) शिक्षा प्रदान करते हैं। वे ब्रेल (Braille), सांकेतिक भाषा (Sign Language) या विशेष थेरेपी जैसी उन्नत तकनीकों के माध्यम से छात्रों को पढ़ाते हैं। इसके अलावा, यहाँ विशेष प्रकार की शिक्षण अधिगम सामग्री (TLM) और सहायक उपकरणों का उपयोग किया जाता है।

<u>निष्कर्ष</u>: निष्कर्षतः, विशेष शिक्षा केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को आत्मनिर्भर बनाना और उन्हें समाज की मुख्यधारा में वापस लाने की एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। यह समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) के एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में कार्य करती है।

23. Write down the full name of UNCRPD. UNCRPD-এর পুরো নাম লেখো। UNCRPD का पूर्ण रूप (पूरा नाम) लिखिए। **2025**

Ans: <u>प्रस्तावना:</u> 21वीं सदी में विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के अधिकारों की सुरक्षा और उनके सामाजिक समावेश के क्षेत्र में UNCRPD एक मील का पत्थर है। यह एक अंतरराष्ट्रीय दस्तावेज़ है जिसे विशेष रूप से विकलांग व्यक्तियों की गरिमा और समान अवसर सुनिश्चित करने के उद्देश्य से अपनाया गया है।

<u>UNCRPD का पूरा नाम:</u> UNCRPD का पूर्ण रूप है— **United Nations Convention on the Rights of Persons with Disabilities.** (हिंदी में: विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन)।

<u>चर्चा:</u> बी.एड. पाठ्यक्रम के तहत 'समावेशी विद्यालय' (Inclusive School) के निर्माण में UNCRPD की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसे 13 दिसंबर 2006 को अपनाया गया था और यह 2008 से प्रभावी हुआ। भारत सरकार ने 2007 में इस पर हस्ताक्षर किए थे। इस सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. **गरिमा की रक्षा:** विकलांग व्यक्तियों की अंतर्निहित गरिमा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का सम्मान करना।
2. **गैर-भेदभाव:** लिंग, जाति या शारीरिक अक्षमता के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव न करना।
3. **पूर्ण सहभागिता:** समाज के हर स्तर और शिक्षा के क्षेत्र में विकलांग बच्चों की पूर्ण और प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित करना।
4. **सुगम्यता (Accessibility):** भौतिक वातावरण, परिवहन और सूचना प्रौद्योगिकी तक विकलांगों की आसान पहुँच सुनिश्चित करना।

<u>निष्कर्ष:</u> निष्कर्षतः, UNCRPD केवल एक नाम नहीं है, बल्कि यह विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों का एक वैश्विक चार्टर है। एक समावेशी समाज और विद्यालय बनाने के लिए इस सम्मेलन के सिद्धांतों का पालन करना प्रत्येक भावी शिक्षक के लिए अनिवार्य है। यह हमें विकलांग व्यक्तियों को 'सहानुभूति के पात्र' के रूप में नहीं, बल्कि 'अधिकार संपन्न व्यक्ति' के रूप में देखना सिखाता है।

24. What is ADHD? ADHD की? ADHD क्या है? 2025

Ans: <u>प्रस्तावना:</u> समावेशी शिक्षा प्रणाली में बच्चों की सीखने की अक्षमता और व्यवहार संबंधी समस्याओं में ADHD एक प्रमुख समस्या है। यह एक तंत्रिका तंत्र के विकास से संबंधित विकार (Neurodevelopmental Disorder) है, जो मुख्य रूप से बचपन में प्रकट होता है और बच्चे के स्वाभाविक सीखने और समाजीकरण में बाधा उत्पन्न करता है।

www.dascoaching.in

ADHD की अवधारणा: ADHD का पूर्ण रूप 'attention deficit hyperactivity disorder' है। इसे हिंदी में **'ध्यान अभाव एवं अतिसक्रियता विकार'** कहा जाता है। इस विकार से प्रभावित बच्चों में मुख्य रूप से तीन लक्षण दिखाई देते हैं:

1. **एकाग्रता की कमी:** किसी विशिष्ट कार्य पर लंबे समय तक ध्यान केंद्रित न कर पाना और बहुत आसानी से विचलित हो जाना।
2. **अतिसक्रियता (Hyperactivity):** आवश्यकता से अधिक छटपटाहट महसूस करना, एक स्थान पर स्थिर होकर न बैठना या असामान्य चंचलता दिखाना।
3. **आवेगशीलता (Impulsivity):** किसी भी कार्य को करने से पहले उसके परिणाम के बारे में न सोचना या दूसरों के काम में बार-बार बाधा डालना।

निष्कर्ष: अंत में यह कहा जा सकता है कि एक समावेशी विद्यालय में शिक्षक को ADHD से प्रभावित छात्रों के प्रति सहनशील और धैर्यवान होना चाहिए। सही समय पर पहचान, विशेष शिक्षण पद्धतियों और प्रेम व सहानुभूति के माध्यम से इन बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा में सफलतापूर्वक शामिल करना संभव है।

25. Write down any two advantages of inclusive education for the society. সমাজের জন্য অন্তর্ভুক্তিমূলক শিক্ষার (Inclusive Education) যে কোনো দুটি সুবিধা লেখো। समाज के लिए समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) के कोई दो लाभ लिखिए। **2025**

Ans: प्रस्तावना: समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) से तात्पर्य एक ऐसी शिक्षा प्रणाली से है जहाँ जाति, धर्म, वर्ण, शारीरिक सक्षमता या अक्षमता की परवाह किए बिना सभी छात्रों को एक ही छत के नीचे शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है। यह व्यवस्था न केवल छात्र के विकास में, बल्कि एक स्वस्थ और भेदभाव रहित समाज के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

समाज के लिए दो मुख्य लाभ:

1. **सामाजिक एकजुटता और एकता की स्थापना:** समावेशी शिक्षा समाज में विविधता के प्रति सम्मान पैदा करती है। जब विभिन्न क्षमताओं वाले बच्चे बचपन से एक साथ बड़े होते हैं, तो उनके बीच सहानुभूति और सहयोग की मानसिकता विकसित होती है। यह समाज में प्रचलित कुरीतियों और भेदभाव को दूर कर एक मैत्रीपूर्ण और संगठित समाज बनाने में मदद करती है।

2. **मानवाधिकारों की सुरक्षा और लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास:** यह शिक्षा प्रणाली प्रत्येक नागरिक के शिक्षा के समान अधिकार को मान्यता देती है। समाज के उपेक्षित या दिव्यांग व्यक्तियों को मुख्यधारा में वापस लाकर यह लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करती है। इसके परिणामस्वरूप, समाज अधिक मानवीय और संवेदनशील बनता है, जो अंततः शोषण मुक्त समाज सुनिश्चित करता है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि समावेशी शिक्षा केवल एक शिक्षण पद्धति नहीं है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली हथियार है। समाज के हर स्तर पर समानता स्थापित करने और इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों का सामना करने में इस शिक्षा प्रणाली का महत्व अत्यधिक है।

26. What is dyslexia? डिसलेक्सिया (Dyslexia) क्या? डिस्लेक्सिया (Dyslexia) क्या है? **2025**

Ans: प्रस्तावना: समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) प्रणाली में 'सीखने की अक्षमता' या **Learning Disability** चर्चा का एक महत्वपूर्ण विषय है। इन सीखने की अक्षमताओं में 'डिस्लेक्सिया' (Dyslexia) सबसे प्रमुख है, जो मुख्य रूप से पढ़ने संबंधी समस्याओं से जुड़ी है।

डिस्लेक्सिया क्या है? 'डिस्लेक्सिया' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द *'Dys'* (कठिनाई) और *'Lexis'* (शब्द) से हुई है। यह एक तंत्रिका संबंधी (Neurological) समस्या है, जिसके कारण सामान्य बुद्धि होने के बावजूद एक छात्र को शब्दों को सही ढंग से पहचानने, वर्तनी (Spelling) लिखने और पाठ्यपुस्तकों को धाराप्रवाह पढ़ने में विशेष कठिनाई होती है।

प्रमुख विशेषताएँ:

1. **अक्षरों या वर्णों को पहचानने में गलती करना:** (जैसे: 'b' को 'd' या 'p' को 'q' समझना)।
2. **शब्दों के भीतर वर्णों के क्रम को समझने में कठिनाई होना।**
3. **पढ़ने की गति अत्यंत धीमी होना:** और पढ़ते समय शब्दों को छोड़ देना।
4. **लिखते समय समान उच्चारण वाले वर्णों के बीच भ्रम पैदा होना।**

निष्कर्ष: निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि डिस्लेक्सिया कोई मानसिक बीमारी या बुद्धि की कमी नहीं है, बल्कि यह एक विशिष्ट सीखने की अक्षमता है। एक शिक्षक के रूप में, कक्षा में ऐसे छात्रों के प्रति

संवेदनशील होना और **बहु-संवेदी (Multi-sensory) शिक्षण विधियों** के माध्यम से उनकी सहायता करना अत्यंत आवश्यक है, ताकि वे मुख्यधारा की शिक्षा में सफल हो सकें।

27. Mention any two weaknesses of peer tutoring. পিয়ার টিউটোরিং (Peer Tutoring)-এর যে কোনো দুটি সীমাবদ্ধতা বা দুর্বলতা উল্লেখ করো। पीयर ट्यूटरिंग (Peer Tutoring) की किन्हीं दो कमियों या कमजोरियों का उल्लेख कीजिए। **2025**

Ans: <u>प्रस्तावना:</u> पीयर ट्यूटरिंग (सहकर्मी शिक्षण) एक ऐसी सहयोगात्मक शिक्षण पद्धति है जिसमें एक छात्र (ट्यूटर) दूसरे छात्र (ट्यूटी) को किसी विशिष्ट विषय को समझने में मदद करता है। समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में यह अत्यंत प्रभावी है, फिर भी सही क्रियान्वयन के अभाव में इस पद्धति के कुछ नकारात्मक पक्ष या सीमाएँ देखने को मिलती हैं।

<u>पीयर ट्यूटरिंग की दो सीमाएँ:</u>

1. **गलत सूचना का आदान-प्रदान (Risk of Misinformation):** पीयर ट्यूटरिंग में ट्यूटर स्वयं एक छात्र होता है। कई बार उसकी अपनी अवधारणाएँ ही स्पष्ट नहीं होती हैं। इसके परिणामस्वरूप, वह अपने सहपाठी को गलत जानकारी या गलत तरीका सिखा सकता है। शिक्षक की अनुपस्थिति में यह गलती सुधारी नहीं जा पाती, जिससे सीखने की गुणवत्ता प्रभावित होती है।
2. **व्यक्तित्व का टकराव और हीन भावना (Personality Conflict and Inferiority):** छात्रों के बीच कई बार मैत्रीपूर्ण संबंधों के बजाय प्रभुत्व जमाने की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है। यदि ट्यूटर ट्यूटी पर हुक्म चलाने लगे, तो दोनों के बीच संबंधों में कड़वाहट आ सकती है। दूसरी ओर, जो छात्र सीख रहा है (ट्यूटी), वह हर समय दूसरों की मदद लेने के कारण हीन भावना का शिकार हो सकता है, जिससे उसका आत्मविश्वास कम हो जाता है।

<u>निष्कर्ष:</u> अंततः यह कहा जा सकता है कि पीयर ट्यूटरिंग की इन सीमाओं को दूर करने के लिए शिक्षक की नियमित निगरानी और सही दिशा-निर्देश अनिवार्य हैं। यदि ट्यूटरों को सही प्रशिक्षण दिया जाए और सीखने का वातावरण सहयोगात्मक हो, तो इन सीमाओं के बावजूद समावेशी कक्षाओं में इसे एक अनूठी रणनीति के रूप में माना जा सकता है।

www.dascoaching.in

5 Marks Question

1. What is the philosophical dimension of Inclusive Education? অন্তর্ভুক্তিমূলক শিক্ষার দার্শনিক মাত্রা কী? समावेशी शिक्षा का दार्शनिक आयाम क्या है? **2018, 2020, 2022**

Ans: प्रस्तावना: समावेशी शिक्षा केवल एक शिक्षण पद्धति नहीं है, बल्कि यह जीवन का एक दर्शन है। इस दर्शन का मूल मंत्र यह है कि समाज के प्रत्येक बच्चे को—उनकी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक या आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना—सामान्य छात्रों के साथ एक ही छत के नीचे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। यह शिक्षा के लोकतंत्रीकरण और मानवीकरण की एक अनूठी अभिव्यक्ति है।

दार्शनिक आयाम के मुख्य स्तंभ: समावेशी शिक्षा का दार्शनिक आधार मुख्य रूप से कुछ प्रमुख आदर्शों पर टिका है-

1. **मानवाधिकार का दर्शन:** इस दर्शन का मूल आधार यह है कि शिक्षा कोई दया या दान नहीं है, बल्कि यह एक मौलिक अधिकार है। 1948 के मानवाधिकारों के सार्वभौम घोषणापत्र और 1994 की 'सालामानका घोषणा' के अनुसार, प्रत्येक बच्चे को शिक्षा प्राप्त करने का जन्मसिद्ध अधिकार है। किसी अक्षमता का बहाना बनाकर बच्चे को सामान्य विद्यालय से वंचित करना नैतिक रूप से अनुचित है।
2. **लोकतांत्रिक आदर्श:** लोकतंत्र का मूल मंत्र समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व है। समावेशी शिक्षा विद्यालय में एक लघु समाज का निर्माण करती है जहाँ विविधता को स्वीकार किया जाता है। यह छात्रों के बीच सहिष्णुता और पारस्परिक सम्मान की भावना जगाती है, जो एक स्वस्थ लोकतांत्रिक समाज के गठन की पूर्व शर्त है।
3. **सामाजिक न्याय:** दार्शनिक दृष्टिकोण से, समावेशी शिक्षा सामाजिक बहिष्कार (Social Exclusion) को रोकती है। यह विश्वास करती है कि समाज या विद्यालय का वातावरण ही किसी व्यक्ति को 'विकलांग' बनाता है, उसकी शारीरिक सीमाएँ नहीं। इसलिए, पाठ्यक्रम और बुनियादी ढांचे में बदलाव करके सभी के लिए अवसर पैदा करना ही वास्तविक न्याय है।
4. **व्यक्तिगत विशिष्टता और विविधता की मान्यता:** इस दर्शन के अनुसार, "विविधता एक वास्तविकता है, समस्या नहीं।" प्राकृतिक रूप से हर मनुष्य अलग है। समावेशी शिक्षा इस विविधता का उत्सव मनाती है और मानती है कि मिश्रित-क्षमता वाली कक्षाएं छात्रों के अनुभवों को समृद्ध करती हैं।

www.dascoaching.in

5. **सहयोगात्मक अधिगम:** यहाँ प्रतिस्पर्धा के बजाय सहयोग के दर्शन को अधिक महत्व दिया जाता है। दार्शनिक स्तर पर यह माना जाता है कि जब छात्र एक-दूसरे की मदद करके सीखते हैं, तो उनमें सहानुभूति (Empathy) और मानवीय मूल्यों का विकास होता है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, समावेशी शिक्षा का दार्शनिक आयाम हमें सिखाता है कि अक्षमता मनुष्य के मन में होती है, शरीर में नहीं। यह एक ऐसे समावेशी समाज का सपना दिखाता है जहाँ 'विभेद' नहीं, बल्कि 'एकजुटता' ही मूलमंत्र है। BSAEU के पाठ्यक्रम के अनुसार, एक भावी शिक्षक के लिए इस दर्शन का महत्व अत्यधिक है, क्योंकि यह केवल कक्षा प्रबंधन ही नहीं, बल्कि दृष्टिकोण बदलने का मार्ग प्रशस्त करता है।

2. Write a short note on FACP. FACP সম্পর্কে সংক্ষিপ্ত টীকা লিখুন। FACP पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। **2018, 2021, 2024**

Ans: प्रस्तावना: विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN), विशेष रूप से बौद्धिक अक्षमता (Intellectual Disability) वाले बच्चों के वर्तमान कौशल स्तर को मापने के लिए उपयोग किया जाने वाला एक अत्यंत प्रभावी मूल्यांकन उपकरण FACP या 'फंक्शनल एसेसमेंट चेकलिस्ट फॉर प्रोग्रामिंग' है। इसे सिकंदराबाद, भारत में स्थित 'नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर द एम्पावरमेंट ऑफ पर्सन्स विद इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटीज' (NIEPID, जिसे पहले NIMH के नाम से जाना जाता था) द्वारा विकसित किया गया है। यह चेकलिस्ट मुख्य रूप से बच्चों के दैनिक जीवन के कार्यात्मक कौशल की जांच करने में मदद करती है।

FACP की मुख्य विशेषताएँ: FACP एक सामान्य बुद्धि लब्धि (IQ) मापक यंत्र नहीं है, बल्कि यह एक कौशल-आधारित मूल्यांकन पद्धति है। इसकी मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1. **स्तरीकरण:** इस उपकरण में बच्चों को उनकी आयु के अनुसार विभिन्न वर्गों में विभाजित किया गया है। जैसे— प्री-प्राइमरी (3-6 वर्ष), प्राइमरी-I (7-10 वर्ष), प्राइमरी-II (11-14 वर्ष), सेकेंडरी (15-18 वर्ष) और प्री-वोकेशनल।
2. **कौशल के क्षेत्र:** इसमें मुख्य रूप से पाँच क्षेत्रों या डोमेन पर ध्यान केंद्रित किया जाता है— व्यक्तिगत (Personal), सामाजिक (Social), शैक्षिक (Academic), व्यावसायिक (Occupational) और मनोरंजक (Recreational) कौशल।
3. **लचीलापन:** यह प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट आवश्यकताओं और क्षमताओं के अनुसार व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (IEP) तैयार करने में सहायता करता है।

4. **मूल्यांकन पद्धति:** इसमें विशिष्ट रंग कोड (जैसे— नीला, लाल, पीला आदि) का उपयोग करके बच्चे की प्रगति का ग्राफ तैयार किया जाता है, जो शिक्षकों और अभिभावकों के लिए समझना आसान होता है।

समावेशी शिक्षा में FACP का महत्व: एक समावेशी कक्षा में जहाँ विभिन्न प्रतिभाओं और क्षमताओं वाले बच्चे एक साथ पढ़ते हैं, वहाँ FACP शिक्षक के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है। यह पहचानता है कि बच्चे की सीमाएँ क्या हैं और उसके मजबूत पक्ष कौन से हैं। इसके परिणामस्वरूप, शिक्षक शिक्षण पद्धति में आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं और प्रत्येक बच्चे के लिए वास्तविक लक्ष्य निर्धारित कर सकते हैं। यह नियमित अंतराल पर बच्चे की उन्नति की निगरानी करने और अगले स्तर के प्रशिक्षण पर निर्णय लेने के लिए अनिवार्य है।

निष्कर्ष: अंत में, यह कहा जा सकता है कि विशेष शिक्षा के क्षेत्र में FACP केवल एक चेकलिस्ट नहीं है, बल्कि यह बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने का एक वैज्ञानिक माध्यम है। समावेशी शिक्षा प्रणाली को सफल बनाने और पिछड़े बच्चों को मुख्यधारा में वापस लाने के लिए FACP का सही प्रयोग अत्यंत आवश्यक है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के समग्र विकास को बनाए रखने के लिए यह मूल्यांकन पद्धति शिक्षकों और विशेष शिक्षकों के लिए एक अनिवार्य उपकरण है।

3. Explain how ICT facilitates learning of CWSN in an Inclusive setting. অন্তর্ভুক্তিমূলক শিক্ষায় ICT কিভাবে CWSN-এর শেখায় সহায়তা করে তা ব্যাখ্যা করুন। समावेशी शिक्षा में ICT कैसे CWSN के शिक्षण में सहायता करता है, स्पष्ट कीजिए। **2018, 2021**

Ans: प्रस्तावना: समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) का मुख्य लक्ष्य सामान्य बच्चों के साथ विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) को एक ही छत के नीचे लाकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने में ICT ने एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। यह सीखने की बाधाओं को दूर कर विशेष बच्चों को आत्मनिर्भर और कुशल बनाने में सहायता करता है।

समावेशी शिक्षा में ICT की भूमिका: ICT विभिन्न 'सहायक तकनीकों' (Assistive Technology) के माध्यम से CWSN बच्चों को सीखने में निम्नलिखित रूप से सहायता करता है:

1. **दृष्टिबाधित बच्चों के लिए:** दृष्टिहीन या कम दृष्टि वाले बच्चों के लिए ICT एक वरदान है। 'स्क्रीन रीडिंग सॉफ्टवेयर' (जैसे- JAWS, NVDA) कंप्यूटर स्क्रीन पर मौजूद लेख को ध्वनि में बदल देता है। इसके

अलावा, ब्रेल डिस्प्ले और डिजिटल ऑडियो बुक्स (जैसे- टॉकिंग बुक्स) उन्हें पाठ्य विषय समझने में मदद करते हैं।

2. **श्रवणबाधित बच्चों के लिए:** जिन्हें सुनने में कठिनाई होती है, उनके लिए 'स्पीच-टू-टेक्स्ट' (Speech-to-Text) तकनीक का उपयोग किया जाता है। शिक्षक की बातें तुरंत स्क्रीन पर लिखित रूप में उभर आती हैं। इसके अलावा, सांकेतिक भाषा (Sign Language) के वीडियो ट्यूटोरियल और विजुअल अलर्ट उन्हें सीखने में सक्रिय बनाते हैं।
3. **सीखने की अक्षमता (Learning Disability) को दूर करने में:** डिस्लेक्सिया या डिस्ग्राफिया से प्रभावित बच्चों के लिए 'स्पेल चेकर्स', 'वर्ड प्रेडिक्शन' और 'टेक्स्ट-टू-स्पीच' सॉफ्टवेयर बहुत प्रभावी हैं। यह उनके पढ़ने के डर को दूर करता है और सही वर्तनी लिखने में मदद करता है। मल्टीमीडिया प्रेजेंटेशन के माध्यम से कठिन विषय सरल हो जाते हैं।
4. **चलन संबंधी दिव्यांगता (Locomotor Disability) के समाधान में:** शारीरिक सीमाओं के कारण जो बच्चे सामान्य कीबोर्ड या माउस का उपयोग नहीं कर सकते, उनके लिए विशेष माउस, जॉयस्टिक या 'आई-ट्रैकिंग' (Eye-tracking) तकनीक का उपयोग किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप, वे दूसरों की सहायता के बिना कंप्यूटर के माध्यम से सीख सकते हैं।
5. **लचीला शिक्षण वातावरण (Flexible Learning):** ICT के माध्यम से छात्र अपनी गति (Self-paced learning) से सीख सकते हैं। वे रिकॉर्ड किए गए व्याख्यान या ऑनलाइन संसाधनों को जितनी बार चाहें देख और सुन सकते हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।
6. **सामाजिक अंतःक्रिया में वृद्धि:** विभिन्न शैक्षिक ऐप और सोशल प्लेटफॉर्म के माध्यम से विशेष आवश्यकता वाले बच्चे सामान्य बच्चों के साथ संपर्क स्थापित कर सकते हैं। यह उनके सामाजिक अलगाव को दूर करता है और समावेशी परिवेश को सार्थक बनाता है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि ICT केवल शिक्षा का एक माध्यम नहीं है, बल्कि यह विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए सशक्तिकरण का एक मार्ग है। हालांकि भारत जैसे देशों में बुनियादी ढांचे की कमी और उच्च लागत के कारण इसका उपयोग अभी भी सीमित है, लेकिन उचित प्रशिक्षण और सरकारी प्रयासों के माध्यम से यदि ICT को कक्षाओं में लागू किया जाए, तो समावेशी शिक्षा व्यवस्था का वास्तविक लक्ष्य पूरा किया जा सकता है।

www.dascoaching.in

4. As a teacher, how would you meet the needs of visually impaired children in an inclusive classroom? একজন শিক্ষক হিসেবে অন্তর্ভুক্তিমূলক শ্রেণিকক্ষে আপনি কীভাবে দৃষ্টি প্রতিবন্ধী শিক্ষার্থীদের প্রয়োজন মেটাবেন? एक शिक्षक के रूप में, समावेशी कक्षा में दृष्टिबाधित बच्चों की आवश्यकताओं को कैसे पूरा करेंगे। **2018, 2021**

Ans: <u>प्रस्तावना</u>: समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) का मुख्य उद्देश्य सभी बच्चों को, उनकी क्षमताओं की परवाह किए बिना, एक ही छत के नीचे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। चूंकि दृष्टिबाधित छात्र अपनी आंखों के माध्यम से जानकारी पूरी तरह या आंशिक रूप से ग्रहण नहीं कर सकते, इसलिए एक शिक्षक का मुख्य उत्तरदायित्व उनकी अन्य इंद्रियों (सुनने और स्पर्श करने) का उपयोग करके शिक्षण प्रक्रिया को आनंददायक और प्रभावी बनाना है।

<u>आवश्यक कदम</u>: एक शिक्षक के रूप में, समावेशी कक्षा में दृष्टिबाधित छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जाने चाहिए:

1. **बैठने की उचित व्यवस्था:** आंशिक रूप से दृष्टिबाधित छात्रों को कक्षा की पहली पंक्ति में बिठाया जाना चाहिए ताकि वे ब्लैकबोर्ड या शिक्षक के करीब रह सकें। इसके अलावा, कक्षा में पर्याप्त रोशनी सुनिश्चित की जानी चाहिए।
2. **श्रव्य सामग्रियों का उपयोग:** इन छात्रों के लिए सुनने योग्य शिक्षण सामग्री अत्यंत प्रभावी होती है। शिक्षक ब्लैकबोर्ड पर जो कुछ भी लिखें, उसे जोर से पढ़ें। रिकॉर्ड किए गए व्याख्यान, ऑडियो बुक्स और 'टॉकिंग कैलकुलेटर' के उपयोग से उनकी सीखने की प्रक्रिया आसान हो सकती है।
3. **स्पर्श-आधारित शिक्षण:** दृष्टिहीन छात्रों के लिए ब्रेल (Braille) पद्धति की पाठ्यपुस्तकों का उपयोग अनिवार्य है। इसके अलावा, मानचित्र, ग्लोब या ज्यामितीय आकृतियों को समझाने के लिए उभरे हुए (Embossed) चित्र या आरेख का उपयोग किया जाना चाहिए, जिन्हें वे स्पर्श करके महसूस कर सकें।
4. **व्यक्तिगत ध्यान और सहपाठी सहायता:** शिक्षक को प्रत्येक दृष्टिबाधित छात्र पर व्यक्तिगत ध्यान देना चाहिए। कक्षा में 'पियर ट्यूटरिंग' की व्यवस्था की जा सकती है, जहाँ एक सामान्य छात्र अपने दृष्टिबाधित मित्र को नोट्स लेने या विषय समझने में मदद करेगा।
5. **मूल्यांकन की वैकल्पिक पद्धति:** परीक्षा के मामले में इनके लिए मौखिक परीक्षा या ब्रेल टाइपराइटर की व्यवस्था होनी चाहिए। आवश्यकतानुसार 'राइटर' (लेखक) की अनुमति दी जानी चाहिए और उत्तर देने के लिए अतिरिक्त समय आवंटित किया जाना चाहिए।

www.dascoaching.in

6. **गतिशीलता और अभिविन्यास (Orientation):** शिक्षक को विद्यार्थी को कक्षा के फर्नीचर की बनावट और स्थिति के बारे में स्पष्ट जानकारी देनी चाहिए ताकि वह स्वतंत्र रूप से आवाजाही कर सके। कक्षा का वातावरण बाधा मुक्त होना चाहिए।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, दृष्टिबाधित बच्चों को सहानुभूति की नहीं, बल्कि समानुभूति और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। यदि एक शिक्षक धैर्यवान हो और उपयुक्त सहायक तकनीक (Assistive Technology) का उपयोग करे, तो ये विशेष आवश्यकता वाले बच्चे भी सामान्य बच्चों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर राष्ट्रीय विकास में योगदान दे सकेंगे। समावेशी शिक्षा की सफलता शिक्षक की इस सकारात्मक मानसिकता और रचनात्मक शिक्षण पद्धति पर निर्भर करती है।

5. Briefly discuss the National Policy on Disability 2006. প্রতিবন্ধীতার জাতীয় নীতি ২০০৬ সম্পর্কে সংক্ষেপে আলোচনা করুন। विकलांगता पर राष्ट्रीय नीति 2006 पर संक्षेप में चर्चा करें। **2018, 2020, 2022**

Ans: प्रस्तावना: भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने 10 फरवरी 2006 को **'विकलांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति' (National Policy for Persons with Disabilities)** की घोषणा की। यह नीति भारतीय संविधान में निहित गरिमा और समान अधिकारों के आदर्शों को आधार मानकर और संयुक्त राष्ट्र की घोषणाओं के अनुरूप तैयार की गई है। इसका मुख्य लक्ष्य विकलांग व्यक्तियों के लिए एक बाधामुक्त वातावरण तैयार करना और समाज में उनकी पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करना है।

प्रमुख लक्ष्य और विशेषताएँ: इस नीति के मुख्य पहलुओं की चर्चा नीचे दी गई है:

1. **निवारण और शीघ्र पहचान:** विकलांगता को रोकने के लिए आवश्यक जागरूकता बढ़ाने और जन्म से पूर्व एवं बाद के चरणों में उचित स्वास्थ्य सेवाओं के माध्यम से विकलांगता की पहचान करने पर जोर दिया गया है।
2. **पुनर्वास व्यवस्था:** विकलांग व्यक्तियों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास के लिए उपयुक्त पुनर्वास व्यवस्था की बात कही गई है। इसमें थेरेपी, कृत्रिम अंग प्रदान करना और परामर्श (Counseling) शामिल है।
3. **शिक्षा और समावेशन (Inclusive Education):** विकलांग बच्चों को सामान्य स्कूलों में शिक्षा के अवसर प्रदान करने पर जोर दिया गया है। इस नीति के तहत:

- सर्व शिक्षा अभियान के माध्यम से समावेशी शिक्षा का प्रसार।
- पाठ्यक्रम और परीक्षा प्रणाली में आवश्यक सुधार।
- विशेष शिक्षा और प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति।

4. **आर्थिक अधिकारिता और रोजगार:** विकलांग व्यक्तियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण की व्यवस्था करना और सरकारी नौकरियों में विशिष्ट आरक्षण (3%) बनाए रखना। इसके अलावा निजी क्षेत्रों में भी उनके रोजगार को प्रोत्साहित करने की नीति अपनाई गई है।
5. **बाधामुक्त वातावरण (Barrier-free Environment):** सार्वजनिक परिवहन, सड़कों, सरकारी भवनों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर रैंप, लिफ्ट और विशेष शौचालयों के निर्माण के माध्यम से विकलांग व्यक्तियों के आवागमन को सुगम बनाने का निर्देश दिया गया है।
6. **महिलाओं और बच्चों के लिए विशेष सुरक्षा:** विकलांग महिलाओं और बच्चों को शोषण से बचाना और उनकी शिक्षा एवं स्वास्थ्य के लिए विशेष परियोजनाएं शुरू करने पर महत्व दिया गया है।
7. **निजी और स्वयंसेवी संगठनों की भूमिका:** सरकार और गैर-सरकारी संगठनों (NGO) के बीच समन्वय के माध्यम से विकलांग कल्याण के लिए कार्य करने की बात कही गई है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, 2006 की यह राष्ट्रीय नीति भारत में विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों की रक्षा के क्षेत्र में एक मील का पत्थर है। यह केवल दया या सहानुभूति नहीं, बल्कि **'अधिकार-आधारित दृष्टिकोण' (Rights-based approach)** की बात करती है। हालाँकि कार्यान्वयन के मार्ग में कई चुनौतियाँ हैं, फिर भी यह नीति एक समावेशी समाज या 'Inclusive Society' के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती है।

6. Discuss the recommendations of NPE 1986 for children with special needs. বিশেষ চাহিদাসম্পন্ন শিশুদের জন্য NPE 1986-এর সুপারিশগুলি আলোচনা করুন। विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए NPE 1986 की सिफारिशों पर चर्चा कीजिए। **2019, 2020, 2022**

Ans: प्रस्तावना: 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE) भारत की शिक्षा व्यवस्था में एक युगांतरकारी कदम था। इस नीति का एक मुख्य उद्देश्य शिक्षा का समानुपातिक वितरण और असमानता को दूर करना था। विशेष रूप से, विकलांग और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को मुख्यधारा की शिक्षा से जोड़ने के लिए इस नीति में स्पष्ट दिशा-निर्देश दिए गए थे। 'समानता के लिए शिक्षा' (Education for Equality) अनुच्छेद के तहत इन बच्चों की शिक्षा पर विशेष बल दिया गया।

NPE 1986 की मुख्य सिफारिशें: विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए NPE 1986 की प्रमुख सिफारिशें निम्नलिखित हैं:

1. **सामान्य विद्यालयों में एकीकरण (Integration):** इस नीति में कहा गया है कि जिन बच्चों में विकलांगता का स्तर हल्का या मध्यम है, उन्हें सामान्य बच्चों के साथ सामान्य स्कूलों में ही शिक्षा दी जानी चाहिए। इससे उन्हें समाजीकरण का अवसर मिलेगा और वे हीन भावना से मुक्त रहेंगे।
2. **विशेष विद्यालयों की स्थापना (Special Schools):** गंभीर रूप से विकलांग बच्चों के लिए जिला मुख्यालयों पर पर्याप्त सुविधाओं से युक्त 'विशेष विद्यालय' स्थापित करने की सिफारिश की गई, ताकि वे अपनी आवश्यकतानुसार विशेष देखभाल और प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें।
3. **व्यवसायिक प्रशिक्षण (Vocational Training):** विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से उनकी व्यावसायिक शिक्षा पर जोर दिया गया। उनकी क्षमता के अनुसार विभिन्न तकनीकी और व्यावसायिक कौशल सिखाने की योजना बनाई गई।
4. **शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम (Teacher Training):** समावेशी शिक्षा प्रणाली को सफल बनाने के लिए सामान्य शिक्षकों के लिए विशेष ओरिएंटेशन प्रोग्राम और विशेष शिक्षकों के लिए उन्नत प्रशिक्षण की व्यवस्था की बात कही गई।
5. **स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका (Role of NGOs):** विकलांग बच्चों की शिक्षा के प्रसार और जागरूकता बढ़ाने में विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं या NGO की सक्रिय भागीदारी और प्रोत्साहन की सिफारिश की गई।
6. **बुनियादी ढांचे का विकास:** विद्यालय भवनों में विशेष बच्चों के आवागमन की सुविधा के लिए रैंप (Ramp) बनाने और विशेष शौचालयों की व्यवस्था करने का निर्देश दिया गया।

परवर्ती संशोधन (POA 1992): 1992 के 'प्रोग्राम ऑफ एक्शन' (POA) में इस नीति को और अधिक सुदृढ़ किया गया। इसमें 'Integrated Education for Disabled Children' (IEDC) परियोजना को और अधिक शक्तिशाली बनाने का प्रस्ताव दिया गया था।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि NPE 1986 के माध्यम से ही भारत में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के अधिकारों और शिक्षा की आवश्यकता को आधिकारिक तौर पर मजबूत पहचान मिली। हालाँकि बाद में NEP 2020 या RCI के दिशा-निर्देशों ने इसे और आधुनिक बनाया है, फिर भी 1986 की यह नीति ही भारत में एक 'समावेशी समाज' के निर्माण की प्राथमिक आधारशिला थी। इन सिफारिशों के लागू होने के

www.dascoaching.in

परिणामस्वरूप ही वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में विशेष आवश्यकता वाले बच्चे शिक्षा के समान अवसर प्राप्त करने में सक्षम हो रहे हैं।

7. Discuss the required competencies of a teacher for an inclusive classroom. অন্তর্ভুক্তিমূলক শ্রেণিকক্ষে পড়ানোর জন্য শিক্ষকের প্রয়োজনীয় দক্ষতাগুলি আলোচনা করুন। समावेशी कक्षा के लिए एक शिक्षक की आवश्यक दक्षताओं पर चर्चा करें। **2019, 2021, 2024**

Ans: <u>प्रस्तावना:</u> समावेशी शिक्षा केवल एक आदर्श नहीं है, बल्कि यह एक अधिकार है। इस व्यवस्था में विविधता को बाधा के रूप में नहीं बल्कि एक संसाधन के रूप में देखा जाता है। शिक्षक इस व्यवस्था के मुख्य मार्गदर्शक होते हैं। उनका दृष्टिकोण, सहानुभूति और पेशेवर कौशल ही यह निर्धारित करते हैं कि एक कक्षा कितनी समावेशी होगी।

<u>शिक्षक के आवश्यक कौशल:</u>

1. **विविधता के प्रति जागरूकता और सकारात्मक दृष्टिकोण:** शिक्षक को सबसे पहले यह अटूट विश्वास होना चाहिए कि प्रत्येक बच्चे में सीखने की क्षमता होती है। विद्यार्थियों के व्यक्तिगत अंतर, शारीरिक अक्षमता या सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना सभी के प्रति समान सम्मान प्रदर्शित करना शिक्षक का प्राथमिक कौशल है।
2. **अनुकूलित शिक्षण पद्धति (Differentiated Instruction):** एक सामान्य कक्षा में सभी विद्यार्थियों की ग्रहण करने की क्षमता समान नहीं होती। इसलिए, शिक्षक को शिक्षण के दौरान विभिन्न तरीके अपनाने चाहिए। जैसे— दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए श्रव्य (audio) सामग्री और श्रवणबाधित विद्यार्थियों के लिए दृश्य (visual) चार्ट या मॉडल का उपयोग करना।
3. **सहायक सामग्रियों का सही उपयोग:** समावेशी कक्षा में विभिन्न शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) या सहायक उपकरणों के उपयोग का कौशल होना अनिवार्य है। इसमें ब्रेल (Braille), सांकेतिक भाषा (Sign Language) और आधुनिक तकनीक जैसे— स्पीच-टू-टेक्स्ट सॉफ्टवेयर या ऑडियो-विजुअल माध्यम शामिल हैं।
4. **लचीली मूल्यांकन पद्धति:** पारंपरिक लिखित परीक्षा अक्सर विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की वास्तविक प्रतिभा का सही आकलन नहीं कर पाती है। शिक्षक का कौशल ऐसे मूल्यांकन की योजना बनाने में है (जैसे— मौखिक परीक्षा या प्रोजेक्ट), जहाँ प्रत्येक बच्चे को अपनी क्षमता प्रदर्शित करने का अवसर मिले।

5. **कक्षा प्रबंधन (Classroom Management):** कक्षा में ऐसा वातावरण बनाना जहाँ विद्यार्थी एक-दूसरे की सहायता करें। सहयोगात्मक शिक्षण (Collaborative Learning) और समूह गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों के बीच मित्रता का भाव बनाए रखना शिक्षक का एक बड़ा कौशल है।
6. **समन्वय और संचार कौशल:** शिक्षक को न केवल विद्यार्थियों के साथ, बल्कि अभिभावकों, विशेष शिक्षकों (Resource Teacher) और मनोवैज्ञानिकों के साथ भी निरंतर संपर्क बनाए रखना होता है। बच्चे की प्रगति के लिए आवश्यक सुझावों का आदान-प्रदान करने की क्षमता होना वांछनीय है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि समावेशी कक्षा में शिक्षक केवल एक निर्देश देने वाला व्यक्ति नहीं होता, बल्कि वह एक मार्गदर्शक और मित्र होता है। उनका धैर्य, संवेदनशीलता और रचनात्मकता किसी भी प्रतिकूल परिस्थिति को जीत सकती है। शिक्षक के ये विशेष कौशल ही अंततः एक भेदभाव रहित और समृद्ध समाज की नींव रखते हैं।

8. Mention in brief the probable causes of hearing impairment. শ্রবণ প্রতিবন্ধকতার সম্ভাব্য কারণগুলি সংক্ষেপে লিখুন। श्रवण बाधा के संभावित कारणों को संक्षेप में लिखिए। **2019, 2020, 2022**

Ans: प्रस्तावना: श्रवण विकलांगता (श्रवण बाधिता) से तात्पर्य किसी व्यक्ति की ध्वनि सुनने की अक्षमता या ध्वनि की तीव्रता को समझने की सीमा से है। यह आंशिक या पूर्ण हो सकती है। जब कोई व्यक्ति अपने श्रवण अंगों या सुनने की प्रक्रिया में क्षति के कारण सामान्य रूप से बात सुनने या समझने में असमर्थ होता है, तो उसे श्रवण विकलांगता कहा जाता है। यह समस्या जन्मजात हो सकती है या जन्म के बाद विभिन्न कारणों से उत्पन्न हो सकती है। समावेशी शिक्षा के वातावरण में ऐसे छात्रों की पहचान करना और उनकी विकलांगता के कारणों को जानना अत्यंत आवश्यक है।

श्रवण विकलांगता के मुख्य कारण: श्रवण विकलांगता के कारणों को मुख्य रूप से तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है-

1. जन्मपूर्व कारण (Pre-natal Causes): शिशु के जन्म से पहले माँ के गर्भ में रहने के दौरान कुछ कारणों से यह समस्या हो सकती है:

- **वंशानुक्रम (Heredity):** यदि माता-पिता या करीबी रिश्तेदारों में श्रवण दोष है, तो आनुवंशिक कारणों से बच्चे में श्रवणहीनता देखी जा सकती है।

- **माँ की बीमारी:** यदि गर्भावस्था के दौरान माँ रूबेला (जर्मन खसरा), साइटोमेगालोवायरस या सिफलिस जैसे संक्रामक रोगों से पीड़ित हो जाती है।
- **दवाओं का दुष्प्रभाव:** गर्भावस्था के दौरान डॉक्टर की सलाह के बिना उच्च शक्ति वाले एंटीबायोटिक या हानिकारक दवाओं का सेवन करने से भ्रूण के श्रवण यंत्र को नुकसान पहुँचता है।

2. जन्म के समय के कारण (Peri-natal Causes): जन्म के समय या उसके तुरंत बाद निम्नलिखित कारणों से बच्चा सुनने की क्षमता खो सकता है:

- **ऑक्सीजन की कमी (Anoxia):** जन्म के समय यदि शिशु के मस्तिष्क तक पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं पहुँचती है, तो श्रवण तंत्रिकाएं क्षतिग्रस्त हो सकती हैं।
- **समय से पहले जन्म और कम वजन:** यदि बच्चे का जन्म समय से पहले हो जाए या जन्म के समय वजन बहुत कम (1.5 किलो से कम) हो।
- **चोट:** प्रसव के दौरान फोरसेप्स के उपयोग से या किसी अन्य तरीके से शिशु के सिर पर चोट लगने के कारण।

3. जन्म के बाद के कारण (Post-natal Causes): जन्म के बाद किसी भी उम्र में विभिन्न कारणों से श्रवण विकलांगता हो सकती है:

- **संक्रामक रोग:** टाइफाइड, मेनिन्जाइटिस, कण्ठमाला (Mumps) या खसरा जैसी बीमारियों का सही समय पर इलाज न होने पर कान को स्थायी नुकसान पहुँचता है।
- **मध्य कान में संक्रमण (Otitis Media):** कान के अंदर मवाद जमा होने या सर्दी के कारण संक्रमण होने से सुनने की क्षमता कम हो जाती है।
- **अत्यधिक ध्वनि प्रदूषण:** लंबे समय तक उच्च शोर वाले वातावरण (जैसे- कारखाने का शोर या तेज संगीत सुनना) में रहने से श्रवण तंत्रिकाएं थक जाती हैं और बेकार हो जाती हैं।
- **दुर्घटना:** कान में तीली या कोई नुकीली वस्तु डालने से चोट लगना या कान के पर्दे पर सीधी चोट लगने से सुनने की शक्ति नष्ट हो सकती है।

निष्कर्ष: अंत में यह कहा जा सकता है कि श्रवण विकलांगता एक बहुआयामी समस्या है। कई मामलों में जागरूकता और उन्नत चिकित्सा के माध्यम से इस समस्या को रोकना संभव है। विशेष रूप से गर्भावस्था के दौरान माँ की सही देखभाल और बच्चों का टीकाकरण श्रवण विकलांगता की दर को काफी कम कर

www.dascoaching.in

सकता है। एक भावी शिक्षक के रूप में, श्रवण बाधित छात्रों के इन कारणों को समझना आवश्यक है, ताकि उनके प्रति सहानुभूति रखी जा सके और समावेशी कक्षा में उन्हें उपयुक्त शिक्षण वातावरण प्रदान किया जा सके।

9. Write a short note on classroom management in Inclusive Education. অন্তর্ভুক্তিমূলক শিক্ষায় শ্রেণিকক্ষ ব্যবস্থাপনা বিষয়ে সংক্ষিপ্ত টীকা লিখুন। समावेशी शिक्षा में कक्षा प्रबंधन पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। **2019, 2021**

Ans: <u>प्रस्तावना</u>: समावेशी शिक्षा में कक्षा प्रबंधन केवल अनुशासन बनाए रखने का विषय नहीं है, बल्कि यह एक सहायक और सकारात्मक सीखने का वातावरण बनाने की प्रक्रिया है। यहाँ विद्यार्थी की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक आवश्यकताओं को महत्व दिया जाता है। BSAEU पाठ्यक्रम के अनुसार, एक सफल शिक्षक को लचीला, धैर्यवान और विविधता के प्रति सम्मानजनक होना चाहिए।

<u>समावेशी कक्षा प्रबंधन की मुख्य रणनीतियाँ</u>: समावेशी शिक्षा में कक्षा प्रबंधन के मुख्य पहलुओं की चर्चा नीचे की गई है:

1. **भौतिक वातावरण का विन्यास:** कक्षा की संरचना ऐसी होनी चाहिए कि व्हीलचेयर उपयोगकर्ता या दृष्टिबाधित छात्र भी आसानी से आ-जा सकें। पर्याप्त प्रकाश, हवा और शोर-मुक्त वातावरण सुनिश्चित करना आवश्यक है। फर्नीचर को इस तरह व्यवस्थित किया जाना चाहिए जिससे समूह कार्य (Group Work) आसान हो सके।
2. **शिक्षण पद्धति का अनुकूलन:** शिक्षक को 'यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग' (UDL) का पालन करना चाहिए। इसका अर्थ है कि एक ही विषय को पढ़ाने के लिए विभिन्न तरीकों (जैसे- ऑडियो-विजुअल एड्स, ब्रेल, सांकेतिक भाषा या मूर्त मॉडल) का उपयोग करना चाहिए ताकि सभी प्रकार के छात्र विषय को समझ सकें।
3. **व्यक्तिगत शिक्षा योजना (IEP):** प्रत्येक विशेष आवश्यकता वाले बच्चे के लिए एक अलग 'व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम' (IEP) तैयार करना आवश्यक है। छोटे-छोटे लक्ष्य निर्धारित कर उन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
4. **सकारात्मक व्यवहारिक समर्थन:** दंड के बजाय सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ छात्रों के व्यवहार में सुधार करना चाहिए। छात्रों के बीच सहानुभूति और आपसी सहयोग की भावना विकसित करना महत्वपूर्ण है।

5. **सहयोगात्मक शिक्षण:** कक्षा में 'पियर ट्यूटरिंग' (Peer Tutoring) या सहपाठी शिक्षण व्यवस्था शुरू की जा सकती है। जहाँ सामान्य छात्र विशेष आवश्यकता वाले सहपाठियों की सहायता करेंगे, जिससे सामाजिक जुड़ाव बढ़ता है।
6. **समय प्रबंधन:** विशेष बच्चों के कार्य करने की गति को ध्यान में रखते हुए समय सारणी या रूटीन में लचीलापन होना अनिवार्य है।

निष्कर्ष: अंततः यह कहा जा सकता है कि समावेशी कक्षा प्रबंधन विविधता का उत्सव है। समावेशन तभी सफल होता है जब शिक्षक प्रत्येक बच्चे की विशिष्टता को स्वीकार करते हुए सीखने का वातावरण तैयार करते हैं। सही प्रबंधन न केवल विशेष आवश्यकता वाले बच्चों में, बल्कि सामान्य बच्चों में भी सहानुभूति और मानवीय मूल्यों का विकास करता है, जो एक स्वस्थ समाज के निर्माण का आधार है।

10. Mention and discuss any five barriers to inclusive education. অন্তর্ভুক্তিমূলক শিক্ষার পাঁচটি বাধা উল্লেখ করুন এবং আলোচনা করুন। समावेशी शिक्षा की पाँच बाधाओं का उल्लेख करें और चर्चा करें। **2019, 2020, 2022**

Ans: भूमिका: समावेशी शिक्षा एक समग्र और विविधतापूर्ण शिक्षण अवधारणा है, जिसका उद्देश्य सभी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है। यह विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों को शिक्षा के अवसर प्रदान करती है, लेकिन इसके क्रियान्वयन के दौरान कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है। यदि इन बाधाओं का समय पर समाधान नहीं किया गया तो समावेशी शिक्षा की सफलता प्रभावित हो सकती है।

समावेशी शिक्षा की पाँच बाधाएँ:

1. **शिक्षक प्रशिक्षण का अभाव:** समावेशी शिक्षा को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। कई शिक्षक अभी भी विशेष शिक्षा के लिए आवश्यक प्रशिक्षण और कौशल प्राप्त नहीं कर पाते, जिससे वे विभिन्न क्षमताओं वाले विद्यार्थियों के साथ प्रभावी ढंग से कार्य करने और आवश्यक सहयोग प्रदान करने में असमर्थ रहते हैं। यह कमी विद्यार्थियों के लिए उचित शिक्षा की कमी पैदा कर सकती है।

2. **अपर्याप्त सामग्री और उपकरण:** समावेशी शिक्षा के लिए विशेष संसाधन, तकनीक और सहायक उपकरणों की आवश्यकता होती है। कई विद्यालयों में ऐसी सुविधाओं का अभाव होता है, जिससे

विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों को उचित शिक्षा प्रदान करने में बाधा आती है। उदाहरण के लिए, ब्रेल पुस्तकें, विशेष शिक्षा सॉफ्टवेयर और अनुकूलन उपकरणों की कमी हो सकती है।

3. **अभिभावक और समाज का समर्थन न होना:** समावेशी शिक्षा की सफलता अभिभावकों और समाज के सहयोग पर निर्भर करती है। कई बार अभिभावक और समाज के सदस्य समावेशी शिक्षा के प्रति सही समझ और समर्थन नहीं देते, जिससे शिक्षण गतिविधियों और वातावरण पर असर पड़ता है। यह कमी विद्यार्थियों की प्रेरणा और सहयोग की कमी का कारण बन सकती है।

4. **शिक्षा प्रणाली में अज्ञानता और अनावश्यक बाधाएँ:** कुछ शैक्षिक संस्थान और शिक्षा प्रणालियाँ समावेशी शिक्षा से संबंधित कानूनों और नीतियों से अवगत नहीं होतीं। इसके कारण वे आवश्यक सहयोग और वातावरण तैयार करने में असमर्थ रहते हैं। साथ ही, कुछ संस्थानों की सीमित धारणाएँ भी समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन में बाधा बनती हैं।

5. **आर्थिक सीमाएँ:** समावेशी शिक्षा पर अक्सर आर्थिक सीमाएँ प्रभाव डालती हैं। यदि विद्यालयों के पास विशेष प्रशिक्षण, संसाधन और सहयोग सेवाएँ प्रदान करने के लिए पर्याप्त बजट न हो, तो समावेशी शिक्षा का सफल क्रियान्वयन कठिन हो जाता है। यह आर्थिक कमी विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के लिए पर्याप्त सहायता सुनिश्चित करने में बाधा उत्पन्न करती है।

उपसंहार: समावेशी शिक्षा व्यापक शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, लेकिन इसके सफल क्रियान्वयन में अनेक चुनौतियाँ आती हैं। शिक्षक प्रशिक्षण, पर्याप्त संसाधन, अभिभावक एवं समाज का सहयोग, कानून और नीतियों की जागरूकता तथा आर्थिक सहयोग सुनिश्चित करके इन बाधाओं को दूर किया जा सकता है। समावेशी शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समन्वित प्रयास और उचित योजना आवश्यक है।

11. Briefly discuss the advantages of inclusive education for the individual and society.
ব্যক্তি ও সমাজের ক্ষেত্রে অন্তর্ভুক্তিমূলক শিক্ষার সুবিধাগুলি সংক্ষেপে আলোচনা করুন। व्यक्ति और समाज के लिए समावेशी शिक्षा के लाभों पर संक्षेप में चर्चा कीजिए। **2023**

Ans: <u>प्रस्तावना</u>: समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) एक ऐसी आधुनिक शिक्षा प्रणाली है जहाँ जाति, धर्म, वर्ण, लिंग या शारीरिक और मानसिक क्षमता के भेदभाव के बिना सभी छात्रों को एक ही छत के नीचे सामान्य विद्यालयों में शिक्षा के अवसर प्रदान किए जाते हैं। यह न केवल विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए है, बल्कि हर बच्चे के अधिकारों को सुनिश्चित करने का एक प्रयास है। इस प्रणाली का दूरगामी प्रभाव व्यक्ति और समाज दोनों पर दिखाई देता है।

<u>व्यक्ति के लिए लाभ (Benefits for the Individual):</u> समावेशी शिक्षा व्यक्तिगत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है-

1. **समाजीकरण के अवसर:** जब विशेष आवश्यकता वाले बच्चे सामान्य बच्चों के साथ मिलकर पढ़ते हैं, तो उनके बीच मेलजोल और दोस्ती का रिश्ता बनता है। इससे उनका अकेलापन दूर होता है और सामाजिक कौशल में वृद्धि होती है।
2. **आत्मविश्वास में वृद्धि:** सामान्य विद्यालयों के स्वाभाविक वातावरण में शिक्षा ग्रहण करने से बच्चों के मन से हीन भावना दूर होती है और उनका आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास कई गुना बढ़ जाता है।
3. **शैक्षिक सुधार:** समावेशी वातावरण में प्रतिस्पर्धी भावना और सहपाठियों की सहायता (Peer Tutoring) से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के सीखने की प्रक्रिया तेज होती है।
4. **विविधता के प्रति सम्मान:** सामान्य बच्चे बचपन से ही भिन्नता या विविधता से परिचित होने के कारण दूसरों के प्रति सहानुभूति और संवेदनशीलता विकसित करते हैं।

<u>समाज के लिए लाभ (Benefits for the Society):</u> व्यापक समाज के विकास में इस शिक्षा प्रणाली का महत्व अत्यधिक है-

1. **सामाजिक एकजुटता की स्थापना:** समावेशी शिक्षा समाज में मौजूद भेदभाव को दूर कर एकता और भाईचारे की भावना पैदा करती है। यह एक भेदभाव रहित समाज के निर्माण में सहायक है।
2. **मानवाधिकारों की स्थापना:** प्रत्येक बच्चे को शिक्षा का अधिकार है—यह लोकतांत्रिक मूल्य समावेशी शिक्षा के माध्यम से ही समाज में स्थापित होता है।
3. **भ्रांतियों का निवारण:** यह शिक्षा विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के बारे में समाज में प्रचलित अंधविश्वासों और गलत धारणाओं को दूर करने में मदद करती है। इसके परिणामस्वरूप समाज उन्हें दया के बजाय सम्मान की दृष्टि से देखना सीखता है।

www.dascoaching.in

4. **आर्थिक आत्मनिर्भरता:** इस प्रणाली के माध्यम से जब सभी छात्र कुशल नागरिक बनते हैं, तो वे भविष्य में देश की अर्थव्यवस्था में योगदान दे सकते हैं और समाज पर बोझ नहीं बनते।

निष्कर्ष: अंततः यह कहा जा सकता है कि समावेशी शिक्षा केवल एक शिक्षण पद्धति नहीं है, बल्कि यह एक मानवीय दृष्टिकोण है। व्यक्तिगत जीवन के विकास और समाज के नैतिक व संरचनात्मक परिवर्तन के लिए इसकी आवश्यकता निर्विवाद है। एक स्वस्थ, सशक्त और प्रगतिशील समाज के निर्माण की मुख्य कुंजी सभी बच्चों को समान महत्व देते हुए समावेशी शिक्षा का विस्तार करना है।

12. What are the main objectives of RTE Act, 2009 in the context of inclusive education?
অন্তর্ভুক্তিমূলক শিক্ষার প্রেক্ষিতে RTE Act, 2009-এর মূল উদ্দেশ্যগুলি কী কী? समावेशी शिक्षा के संदर्भ में RTE अधिनियम, 2009 के मुख्य उद्देश्य क्या हैं। **2023**

Ans: प्रस्तावना: 26 अगस्त 2009 को भारत सरकार ने 'निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम' (RTE Act) पारित किया, जो 1 अप्रैल 2010 से प्रभावी हुआ। इस कानून का मुख्य आधार भारतीय संविधान का अनुच्छेद 21A है। समावेशी शिक्षा का मुख्य लक्ष्य जाति, धर्म, वर्ण, लिंग या शारीरिक और मानसिक अक्षमता की परवाह किए बिना प्रत्येक बच्चे को एक ही छत के नीचे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। RTE अधिनियम ने इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक कानूनी ढांचा प्रदान किया है।

उद्देश्य: समावेशी शिक्षा के प्रसार में RTE अधिनियम, 2009 के मुख्य उद्देश्य नीचे दिए गए हैं:

1. **सार्वभौमिक अवसर और अनिवार्य शिक्षा:** 6 से 14 वर्ष की आयु के प्रत्येक बच्चे के लिए नजदीकी विद्यालय में निःशुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा सुनिश्चित करना। यह पिछड़े और वंचित बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा में लाने में मदद करता है।
2. **विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के अधिकार (CWSN):** 2012 के संशोधन के अनुसार, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के सामान्य स्कूलों में पढ़ने के अधिकार और आवश्यकतानुसार 'होम-बेस्ड एजुकेशन' (गृह-आधारित शिक्षा) के अवसर को सुनिश्चित किया गया है।
3. **प्रवेश में भेदभाव का अभाव:** किसी भी बच्चे को प्रवेश के समय स्क्रीनिंग टेस्ट या साक्षात्कार (इन्टरव्यू) का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसके अलावा, किसी प्रमाण पत्र या दस्तावेज की कमी के कारण शिक्षा से वंचित नहीं किया जा सकता, जो समावेशी समाज की मुख्य शर्त है।

4. **25 प्रतिशत सीटों का आरक्षण:** निजी और विशिष्ट स्कूलों में आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (EWS) और वंचित समूहों के बच्चों के लिए 25 प्रतिशत सीटें आरक्षित रखना। यह सामाजिक समावेशन (Social Inclusion) की दिशा में एक बड़ा कदम है।
5. **बुनियादी ढांचा और पर्यावरण विकास:** प्रत्येक विद्यालय में समावेशी शिक्षा के अनुकूल वातावरण तैयार करना। जैसे— दिव्यांग बच्चों के लिए रैंप (Ramp), उपयुक्त शौचालय और आवश्यक शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) की व्यवस्था करना।
6. **मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न पर रोक:** स्कूलों में बच्चों को किसी भी प्रकार का शारीरिक दंड या मानसिक उत्पीड़न नहीं दिया जा सकता। भयमुक्त और बाल-केंद्रित वातावरण तैयार करना इस कानून के प्रमुख उद्देश्यों में से एक है।
7. **शिक्षक-छात्र अनुपात और प्रशिक्षण:** सही अधिगम के लिए एक निश्चित शिक्षक-छात्र अनुपात (1:30) बनाए रखना और शिक्षकों को समावेशी शिक्षा प्रदान करने के लिए विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था करना।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि RTE अधिनियम, 2009 केवल एक कानून नहीं है, बल्कि समावेशी शिक्षा के प्रसार के लिए एक शक्तिशाली हथियार है। यह शिक्षा के अधिकार को मौलिक अधिकार बनाकर समाज के हर स्तर के बच्चे के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने का संकल्प लेता है। हालाँकि बुनियादी ढांचे की कुछ सीमाएं आज भी मौजूद हैं, फिर भी इस कानून का सही क्रियान्वयन एक भेदभाव रहित और संवेदनशील समाज के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

13. What are the preventive measures for hearing impairment? শ্রবণ প্রতিবন্ধকতার প্রতিরোধমূলক ব্যবস্থা কী কী? श्रवण बाधा की रोकथाम के उपाय क्या हैं? **2023**

Ans: प्रस्तावना: श्रवणबाधिता (सुनने की अक्षमता) एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति सुनने की शक्ति को आंशिक या पूर्ण रूप से खो देता है। यह न केवल व्यक्ति की संवाद करने की क्षमता को प्रभावित करता है, बल्कि उसके सामाजिक और बौद्धिक विकास में भी बाधा डालता है। समावेशी शिक्षा प्रणाली में श्रवणबाधित बच्चों को मुख्यधारा में लाने से भी अधिक महत्वपूर्ण है सही समय पर निवारक उपाय करना, ताकि इस बाधा को उत्पन्न होने से रोका जा सके।

<u>निवारक उपायों का वर्गीकरण:</u> श्रवणबाधिता को रोकने के उपायों को मुख्य रूप से तीन स्तरों में विभाजित किया जा सकता है: जन्मपूर्व, जन्म के समय और जन्म के बाद।

1. जन्मपूर्व सावधानी (Pre-natal Measures):

- **टीकाकरण:** गर्भवती माँ का रूबेला या जर्मन खसरा जैसी बीमारियों के खिलाफ टीकाकरण सुनिश्चित किया जाना चाहिए, क्योंकि गर्भावस्था के दौरान ये संक्रमण शिशु की श्रवण शक्ति को नष्ट कर सकते हैं।
- **दवाओं के प्रयोग में सावधानी:** डॉक्टर की सलाह के बिना गर्भावस्था के दौरान किसी भी एंटीबायोटिक या भारी दवा का सेवन नहीं करना चाहिए।
- **पोषण और स्वास्थ्य:** गर्भवती माँ के लिए पर्याप्त पोषण और रक्त के Rh फैक्टर की जाँच करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

2. जन्मकालीन सावधानी (Natal Measures):

- **सुरक्षित प्रसव:** प्रसव अनुभवी डॉक्टर या प्रशिक्षित दाई के माध्यम से कराया जाना चाहिए ताकि शिशु के सिर पर चोट न लगे या ऑक्सीजन की कमी (Asphyxia) न हो।
- **जन्म के तुरंत बाद देखभाल:** यदि जन्म के बाद शिशु लंबे समय तक न रोए या शरीर नीला पड़ जाए, तो तुरंत चिकित्सा व्यवस्था करनी चाहिए।

3. जन्म-पश्चात सावधानी (Post-natal Measures):

- **संक्रामक रोगों से बचाव:** खसरा, चेचक, कण्ठमाला (Mumps) या दिमागी बुखार (Meningitis) जैसी बीमारियों से बच्चे की रक्षा करनी चाहिए और समय पर टीकाकरण करवाना चाहिए।
- **कान की स्वच्छता:** कान साफ करने के लिए तीली, पंख या किसी नुकीली वस्तु का उपयोग करने से बचना चाहिए। कान में गंदा पानी या सरसों का तेल डालना अनुचित है।
- **ध्वनि प्रदूषण पर नियंत्रण:** बच्चे को तेज आवाज वाले पटाखों या लाउडस्पीकर के शोर से दूर रखना चाहिए। लंबे समय तक हेडफोन के उपयोग के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता बढ़ानी चाहिए।

www.dascoaching.in

- **शीघ्र पहचान:** बच्चे की ध्वनि के प्रति प्रतिक्रिया देने की क्षमता का नियमित अवलोकन करना चाहिए। किसी भी संदेह की स्थिति में तुरंत 'ऑडियोलॉजिस्ट' की सलाह लेनी चाहिए।

निष्कर्ष: अंततः यह कहा जा सकता है कि श्रवणबाधिता को रोकने की मुख्य कुंजी जागरूकता है। सही समय पर टीकाकरण, गर्भवती माँ की विशेष देखभाल और बच्चों की नियमित स्वास्थ्य जाँच इस समस्या को काफी हद तक कम कर सकती है। एक समावेशी समाज के निर्माण का प्राथमिक कदम एक स्वस्थ और अक्षमता-मुक्त भावी पीढ़ी का निर्माण करना है, जिसमें निवारक उपाय अग्रणी भूमिका निभाते हैं।

14. Write down the probable causes of visual impairment (VI). দৃষ্টিজনিত প্রতিবন্ধকতার সম্ভাব্য কারণগুলি লিখুন। दृष्टि बाधा के संभावित कारणों को लिखिए। **2023**

Ans: प्रस्तावना: दृष्टि मनुष्य की पाँच इंद्रियों में से एक प्रमुख अंग है, जो पर्यावरण से जानकारी एकत्र करने में मदद करती है। जब कोई व्यक्ति सामान्य चश्मा या कॉन्टैक्ट लेंस का उपयोग करने के बाद भी सामान्य रूप से देखने में असमर्थ होता है, तो उसे दृष्टि अक्षमता (Visual Impairment) कहा जाता है। यह समस्या जन्मजात हो सकती है या बाद के जीवन में किसी बीमारी या दुर्घटना के कारण भी हो सकती है। समावेशी शिक्षा के लिए इन कारणों की पहचान करना अनिवार्य है।

दृष्टि अक्षमता के मुख्य कारण: दृष्टि अक्षमता के कारणों को आमतौर पर तीन मुख्य श्रेणियों में बांटा जा सकता है-

1. जन्मजात या वंशानुगत कारण (Congenital/Hereditary Causes):

- **वंशानुगत:** माता-पिता के जीन की समस्याओं के कारण बच्चा जन्मजात अंधापन या कम दृष्टि के साथ पैदा हो सकता है।
- **गर्भावस्था के दौरान संक्रमण:** यदि माँ गर्भावस्था के पहले तीन महीनों के दौरान रूबेला (जर्मन खसरा), सिफलिस या टोक्सोप्लाज्मोसिस जैसी बीमारियों से संक्रमित होती है, तो नवजात की दृष्टि को नुकसान पहुँच सकता है।
- **अपरिपक्व जन्म:** समय से पहले जन्मे बच्चों (Premature birth) की आंखों का रेटिना पूरी तरह से विकसित नहीं होता है, जिससे 'रेटिनोपैथी ऑफ प्रीमैच्योरिटी' (ROP) हो सकता है।

2. रोग संबंधी कारण (Disease Related Causes):

- **मोतियाबिंद (Cataract):** बुढ़ापे या मधुमेह के प्रभाव के कारण आंखों का लेंस धुंधला हो जाता है, जो दृष्टि हानि का एक प्रमुख कारण है।
- **ग्लूकोमा (Glaucoma):** आंख के अंदर तरल पदार्थ के दबाव में असामान्य वृद्धि के कारण ऑप्टिक तंत्रिका क्षतिग्रस्त हो जाती है और व्यक्ति धीरे-धीरे अंधा हो जाता है।
- **विटामिन-ए की कमी:** लंबे समय तक विटामिन-ए युक्त भोजन की कमी से बच्चों में रतौंधी और बाद में कॉर्निया की गंभीर क्षति (Xerophthalmia) हो सकती है।
- **डायबिटिक रेटिनोपैथी:** उच्च रक्त शर्करा के कारण रेटिना की सूक्ष्म रक्त वाहिकाएं क्षतिग्रस्त हो जाती हैं, जिससे दृष्टि चली जाती है।

3. पर्यावरणीय और अन्य कारण (Environmental and Other Causes):

- **दुर्घटना:** खेलकूद, पटाखे फोड़ने या कारखानों में काम करते समय आंखों में चोट लगने या रसायनों के प्रवेश करने से दृष्टि जा सकती है।
- **सूर्य की पराबैंगनी किरणें:** लंबे समय तक सीधे तेज धूप में काम करने से रेटिना और कॉर्निया को नुकसान होने की संभावना रहती है।
- **संक्रमण:** यदि ट्रेकोमा या कंजंक्टिवाइटिस जैसे संक्रामक नेत्र रोगों का ठीक से इलाज नहीं किया जाता है, तो दीर्घकालिक अंधापन हो सकता है।

निष्कर्ष: अंत में यह कहा जा सकता है कि दृष्टि अक्षमता केवल एक शारीरिक सीमा नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और शैक्षिक विकास के मार्ग में भी एक बड़ी बाधा है। हालांकि, आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की प्रगति और सही समय पर निदान के माध्यम से कई मामलों में इस अक्षमता को रोका जा सकता है। एक समावेशी स्कूल के शिक्षक के रूप में इन कारणों का ज्ञान होने से बच्चों की विशेष जरूरतों की पहचान करना और उनके लिए उपयुक्त सीखने का माहौल बनाना आसान हो जाता है।

15. Mention the measures schools should take for inclusive education. অন্তর্ভুক্তিমূলক শিক্ষার জন্য বিদ্যালয়গুলি কী কী ব্যবস্থা গ্রহণ করবে তা উল্লেখ করুন। समावेशी शिक्षा के लिए विद्यालयों को कौन-कौन से उपाय करने चाहिए, उल्लेख करें। **2023**

Ans: भूमिका: समावेशी शिक्षा एक ऐसी शैक्षिक नीति है जो सभी विद्यार्थियों की विविधता को स्वीकार करती है और सभी के लिए समान शैक्षिक अवसर सुनिश्चित करती है। इसका मुख्य उद्देश्य दिव्यांग और

अन्य विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों को सामान्य शिक्षण वातावरण में शामिल करना है। समावेशी शिक्षा एक समग्र और सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण है, जो प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमता और आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान करती है।

विद्यालयों के लिए समावेशी शिक्षा की व्यवस्था:

1. **उपयुक्त अवसंरचना:** विद्यालय को शारीरिक रूप से सुलभ बनाया जाना चाहिए। रैम्प, लिफ्ट और विशेष प्रकार के शौचालय का निर्माण आवश्यक है। कक्षाओं, पुस्तकालय और खेल के मैदानों को इस प्रकार बनाया जाना चाहिए कि सभी विद्यार्थी, विशेषकर व्हीलचेयर उपयोग करने वाले, आसानी से आ-जा सकें।

2. **विशेष शिक्षकों की नियुक्ति:** दिव्यांग विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विशेष शिक्षा में प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति आवश्यक है। ये शिक्षक विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण पद्धति और रणनीतियों का उपयोग करने में सक्षम होंगे। साथ ही, सामान्य शिक्षकों को भी समावेशी शिक्षा का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

3. **व्यक्तिगत शिक्षण योजना (IEP):** प्रत्येक विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थी के लिए अलग शिक्षण योजना तैयार की जानी चाहिए। इस योजना में विद्यार्थी की शक्तियाँ, कमजोरियाँ और शैक्षिक लक्ष्य स्पष्ट रूप से लिखे जाने चाहिए। IEP के माध्यम से शिक्षक विद्यार्थी की प्रगति का नियमित मूल्यांकन कर सकते हैं।

4. **शिक्षण सामग्री की विविधता:** शिक्षण सामग्री केवल दृष्टि या श्रवण पर आधारित न होकर विविध होनी चाहिए। ब्रेल पुस्तकें, ऑडियो पुस्तकें, बड़े अक्षरों की पुस्तकें और स्पर्शनीय नक्शे का उपयोग किया जा सकता है। मल्टीमीडिया और तकनीक का प्रयोग सभी विद्यार्थियों के लिए सीखना आसान बनाता है।

www.dascoaching.in

5. **सकारात्मक कक्षा संस्कृति:** विद्यालय का वातावरण ऐसा होना चाहिए जहाँ विद्यार्थी विविधता का सम्मान करना सीखें। नियमित चर्चाएँ, समूह प्रोजेक्ट और सहानुभूति-आधारित गतिविधियाँ विद्यार्थियों को एक-दूसरे से जोड़ती हैं और समाज की मुख्य धारा में सम्मिलित करती हैं।

6. **प्रौद्योगिकीय सहायता:** डिजिटल लैब और ऑनलाइन प्लेटफार्म के माध्यम से विद्यार्थियों की तकनीकी दक्षता बढ़ाई जा सकती है। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए स्क्रीन रीडर तथा श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए सबटाइटल या सांकेतिक भाषा दुभाषिए की व्यवस्था होनी चाहिए।

7. **अभिभावकों का सहयोग:** विद्यालय और अभिभावकों के बीच नियमित संवाद और सहयोग आवश्यक है। अभिभावकों की राय और सुझावों को शामिल किया जाना चाहिए। इससे घर और विद्यालय दोनों में एक सहयोगी शिक्षण वातावरण का निर्माण होता है।

8. **पाठ्यक्रम की लचीलापन:** पाठ्यक्रम इस प्रकार तैयार होना चाहिए कि यह सभी विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त हो। यह केवल परीक्षा-आधारित न होकर प्रोजेक्ट आधारित और अनुभवात्मक शिक्षा को प्रोत्साहित करे। इससे विद्यार्थी अपनी गति से सीख सकते हैं और उनकी रचनात्मकता बढ़ती है।

उपसंहार: समावेशी शिक्षा शिक्षा का एक मौलिक हिस्सा है, जो समाज के सभी वर्गों के विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान करती है। विद्यालयों में इन व्यवस्थाओं का प्रभावी कार्यान्वयन न केवल विविधता का सम्मान करता है, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र विकास और शिक्षा की गुणवत्ता को भी बढ़ाता है। यह एक समग्र और सहानुभूतिपूर्ण शिक्षा प्रदान करता है, जो समाज में समानता और स्वीकृति की भावना को बढ़ावा देता है।

16. Briefly discuss the various factors affecting inclusion. অন্তর্ভুক্তিকরণে প্রভাব বিস্তারকারী বিভিন্ন উপাদান সংক্ষেপে আলোচনা করুন। समावेशन को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों पर संक्षेप में चर्चा कीजिए। **2024**

Ans: भूमिका: अंतर्भाव (Inclusion) एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें समाज के सभी सदस्यों को — उनकी जाति, धर्म, वर्ण, लिंग, शारीरिक या मानसिक क्षमता, आर्थिक स्थिति अथवा अन्य किसी विशेषता की परवाह किए बिना — समान अवसर और अधिकार दिए जाते हैं। यह एक उन्नत, विविधतापूर्ण और न्यायपूर्ण समाज के

निर्माण के लिए आवश्यक है। अंतर्भाव की अवधारणा केवल शिक्षा या कार्यक्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज के हर क्षेत्र में लागू होती है। इस चर्चा में हम अंतर्भाव को प्रभावित करने वाले कुछ प्रमुख कारकों पर विचार करेंगे।

अंतर्भाव को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारक:

1. **सामाजिक दृष्टिकोण:** समाज की प्रचलित मानसिकता और दृष्टिकोण अंतर्भाव के प्रमुख निर्धारक हैं। यदि समाज विविधता को सकारात्मक रूप से स्वीकार करता है और भेदभावपूर्ण सोच का विरोध करता है, तो अंतर्भाव आसान हो जाता है। इसके विपरीत, यदि भिन्नताओं को बाधा के रूप में देखा जाता है, तो यह अंतर्भाव की राह में अड़चन पैदा करता है।

2. **सरकारी नीतियाँ और कानून:** अंतर्भाव को वास्तविकता में बदलने के लिए सरकारी नीतियाँ और कानून अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। जब सरकार भेदभाव-विरोधी कानून बनाती है और समावेशी शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और रोजगार सुनिश्चित करने वाली नीतियाँ अपनाती है, तो अंतर्भाव की दिशा में प्रभावी प्रगति होती है।

3. **आर्थिक स्थिति:** किसी देश या समाज की आर्थिक स्थिति अंतर्भाव पर गहरा प्रभाव डालती है। गरीबी और संसाधनों का असमान वितरण अक्सर हाशिए पर खड़े समूहों को और पीछे धकेल देता है। इसके विपरीत, आर्थिक स्थिरता और समानता अवसरों के समान वितरण को सुनिश्चित करती है।

4. **शिक्षा व्यवस्था:** शिक्षा अंतर्भाव का एक सशक्त उपकरण है। एक समावेशी शिक्षा व्यवस्था भिन्न क्षमताओं वाले विद्यार्थियों को विशेष सहायता प्रदान करती है और उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने में मदद करती है। यह भेदभाव कम करने और आपसी समझ बढ़ाने में भी सहायक है।

5. **आधारभूत संरचना की सुविधाएँ:** शारीरिक या मानसिक रूप से दिव्यांग व्यक्तियों के लिए रैम्प, लिफ्ट, शौचालय और सुगम परिवहन जैसी सुविधाएँ अंतर्भाव को गति देती हैं। इन सुविधाओं की अनुपस्थिति में वे समाज में सामान्य रूप से भाग लेने से वंचित रह जाते हैं।

6. **प्रौद्योगिकी और डिजिटल पहुँच:** आधुनिक प्रौद्योगिकी और डिजिटल पहुँच ने अंतर्भाव को एक नया आयाम दिया है। ऑनलाइन शिक्षा, रोजगार और संचार ने हाशिए पर खड़े समूहों के लिए नए अवसर उत्पन्न किए हैं। लेकिन यदि डिजिटल असमानता बनी रहती है, तो ये अवसर केवल कुछ विशेष वर्ग तक ही सीमित रह जाते हैं।

7. **मीडिया की भूमिका:** मीडिया समाज की दृष्टि निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि मीडिया विविधता और अंतर्भाव के सकारात्मक पहलुओं को प्रस्तुत करे और रूढ़ियों को तोड़े, तो समाज का दृष्टिकोण बदल सकता है। इसके विपरीत, गलत जानकारी और अंधविश्वास अंतर्भाव की राह में बाधा उत्पन्न करते हैं।

8. **परिवार और समुदाय का सहयोग:** अंतर्भाव की प्रक्रिया में परिवार और समुदाय का सहयोग आवश्यक है। जब परिवार और समुदाय भिन्न विशेषताओं वाले सदस्यों को स्वीकार करते हैं और प्रोत्साहित करते हैं, तो वे आत्मविश्वास प्राप्त करते हैं और समाज में सक्रिय भागीदारी कर पाते हैं।

उपसंहार: अंतर्भाव एक निरंतर और बहुआयामी प्रक्रिया है जो समाज के प्रत्येक स्तर पर कार्य करती है। इसे केवल किसी एक नीति या कानून से प्राप्त नहीं किया जा सकता, बल्कि इसके लिए सामूहिक प्रयास और विभिन्न कारकों के बीच समन्वय आवश्यक है। इस चर्चा से स्पष्ट है कि जहाँ एक ओर सरकारी नीतियाँ, कानून और अवसंरचना विकास जैसे बाहरी कारक अंतर्भाव को प्रभावित करते हैं, वहीं दूसरी ओर सामाजिक दृष्टिकोण, मानसिक बाधाएँ और मीडिया की भूमिका जैसे आंतरिक कारक भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं।

17. Discuss in brief the general principles of UNCRPD, 2006. UNCRPD, 2006-এর সাধারণ নীতিসমূহ সংক্ষেপে আলোচনা করুন। UNCRPD, 2006 के सामान्य सिद्धांतों पर संक्षेप में चर्चा करें। **2024**

Ans: **प्रस्तावना:** विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCRPD), 2006, एक ऐतिहासिक अंतर्राष्ट्रीय संधि है जिसे विकलांग व्यक्तियों के मानवाधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने के लिए अपनाया गया है। यह विकलांगता को केवल दान या चिकित्सा का विषय न मानकर एक मानवाधिकार मुद्दे के रूप में मान्यता देता है। यह सम्मेलन समाज में विकलांग व्यक्तियों की गरिमा, समावेश और पूर्ण एवं प्रभावी भागीदारी के अधिकार का समर्थन करता है। यह राष्ट्रों को यह सुनिश्चित करने

के लिए बाध्य करता है कि विकलांग व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के अपने अधिकारों का आनंद ले सकें। UNCRPD के सिद्धांत विकलांग व्यक्तियों के लिए एक समावेशी दुनिया के निर्माण में मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं।

UNCRPD (2006) के सामान्य सिद्धांत: UNCRPD के अनुच्छेद 3 में आठ मुख्य सिद्धांतों का उल्लेख किया गया है, जो एक समावेशी समाज के निर्माण में सहायक हैं। ये निम्नलिखित हैं:

1. **अंतर्निहित गरिमा के प्रति सम्मान (Respect for inherent dignity):** प्रत्येक विकलांग व्यक्ति की अपनी गरिमा और अपनी पसंद चुनने की स्वतंत्रता होती है। दूसरों की सहायता के बिना अपने निर्णय स्वयं लेने का अधिकार (स्वायत्तता) इस सिद्धांत का मुख्य आधार है।
2. **गैर-भेदभाव (Non-discrimination):** विकलांगता के आधार पर किसी भी व्यक्ति के साथ कोई भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए। शिक्षा, रोजगार या सामाजिक क्षेत्रों में सभी को समान अवसर मिलने चाहिए।
3. **पूर्ण और प्रभावी भागीदारी (Full and effective participation):** विकलांग व्यक्तियों को समाज की मुख्यधारा में शामिल किया जाना चाहिए। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि वे सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में बिना किसी बाधा के भाग ले सकें।
4. **विविधता के प्रति सम्मान (Respect for difference):** विकलांगता को मानव विविधता के एक हिस्से के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। यह दृष्टिकोण विकसित करना आवश्यक है कि विकलांग व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग हैं।
5. **अवसर की समानता (Equality of opportunity):** समाज के हर स्तर पर विकलांग और गैर-विकलांग व्यक्तियों के लिए समान अवसर सुनिश्चित किए जाने चाहिए। इसका लक्ष्य विशेष लाभ देना नहीं, बल्कि न्याय के आधार पर अधिकार प्रदान करना है।
6. **सुगम्यता (Accessibility):** भौतिक वातावरण (सड़कें, भवन), परिवहन, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) को विकलांग व्यक्तियों के लिए आसानी से उपयोग करने योग्य बनाने पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
7. **पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता (Equality between men and women):** विकलांग महिलाएं अक्सर दोहरे भेदभाव का शिकार होती हैं। इसलिए, इस सिद्धांत के अनुसार विकलांग महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए समान अधिकार सुनिश्चित किए गए हैं।

www.dascoaching.in

8. **बच्चों की विकसित होती क्षमताओं के प्रति सम्मान (Respect for the evolving capacities of children):** विकलांग बच्चों की पहचान की रक्षा करना और उनके विचारों को महत्व देना इस सिद्धांत की एक प्रमुख विशेषता है। उनके अधिकारों की रक्षा में राज्य को सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

निष्कर्ष: अंततः यह कहा जा सकता है कि UNCRPD (2006) के ये सिद्धांत केवल कागजों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि एक समावेशी विद्यालय और समाज के निर्माण की मुख्य शक्ति हैं। यदि इन सिद्धांतों को उचित रूप से लागू किया जाए, तो विकलांग व्यक्ति दया के पात्र न बनकर सम्मान के साथ सिर उठाकर जी सकेंगे। बी.एड (B.Ed) पाठ्यक्रम में इस विषय को शामिल करने का मुख्य उद्देश्य भविष्य के शिक्षकों में विकलांगता के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाना और भेदभाव रहित शैक्षिक वातावरण तैयार करना है।

18. Describe assistive and adaptive devices and technologies used to teach visually and hearing-impaired students. দৃষ্টিপ্রতিবন্ধী ও শ্রবণপ্রতিবন্ধী শিক্ষার্থীদের শেখাতে ব্যবহৃত সহায়ক ও অভিযোজনযোগ্য প্রযুক্তি ও যন্ত্রপাতির বর্ণনা দিন। दृष्टिबाधित और श्रवणबाधित छात्रों को पढ़ाने के लिए उपयोग किए जाने वाले सहायक और अनुकूलन उपकरणों और प्रौद्योगिकियों का वर्णन करें। **2024**

Ans: प्रस्तावना: एकीककृत या समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) प्रणाली में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को मुख्यधारा की शिक्षा से जोड़ने के लिए **'सहायक तकनीक' (Assistive Technology)** और **'अनुकूलन उपकरण' (Adaptive Devices)** अपरिहार्य हैं। ये तकनीकें छात्रों की शारीरिक सीमाओं को पार कर सीखने की प्रक्रिया को सरल और प्रभावी बनाती हैं।

दृष्टिबाधित छात्रों के लिए तकनीक: दृष्टिबाधित छात्रों के सीखने का मुख्य माध्यम **स्पर्श (Tactile)** और **श्रवण (Auditory)** है। उनके लिए उपयोग की जाने वाली प्रमुख तकनीकें हैं:

1. **ब्रेल तकनीक (Braille Technology):** यह दृष्टिहीन छात्रों के पढ़ने का मुख्य माध्यम है। वर्तमान में 'ब्रेल टाइपराइटर' (Perkins Brailler) के अलावा इलेक्ट्रॉनिक **'रिफ्रेशेबल ब्रेल डिस्प्ले'** का उपयोग किया जाता है, जो कंप्यूटर के टेक्स्ट को ब्रेल में बदल देता है।
2. **स्क्रीन रीडर सॉफ्टवेयर:** कंप्यूटर या स्मार्टफोन की स्क्रीन पर जो लिखा होता है, यह उसे बोलकर सुनाता है। जैसे— **JAWS** और **NVDA**।

3. **टॉकिंग बुक्स और ऑडियो लाइब्रेरी:** पाठ्यपुस्तकों को ऑडियो प्रारूप में बदलकर छात्रों को सुनाया जाता है। इस क्षेत्र में **DAISY** (डिजिटल एक्सेसिबल इंफॉर्मेशन सिस्टम) अत्यंत प्रभावी है।
4. **मैग्नीफायर (Magnifiers):** कम दृष्टि (Low Vision) वाले छात्रों के लिए ऑप्टिकल या वीडियो मैग्नीफायर का उपयोग किया जाता है, जो अक्षरों के आकार को कई गुना बढ़ा देते हैं।
5. **स्पर्शनीय ग्राफिक्स (Tactile Graphics):** विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों या मानचित्रों को महसूस करने के लिए उभरी हुई या खुरदरी रेखाओं वाले चित्रों का उपयोग किया जाता है।

<u>श्रवणबाधित छात्रों के लिए तकनीक:</u> श्रवणबाधित छात्रों के मामले में **दृश्य माध्यम (Visual)** और ध्वनि की तीव्रता बढ़ाने पर जोर दिया जाता है:

1. **श्रवण यंत्र (Hearing Aids):** यह ध्वनि को प्रवर्धित (Amplify) करता है जिससे छात्र को सुनने में मदद मिलती है। आधुनिक डिजिटल हियरिंग एड बाहरी शोर को कम करके केवल आवश्यक आवाज सुनने में मदद करते हैं।
2. **एफ.एम. सिस्टम (FM System):** कक्षा में शिक्षक एक माइक्रोफोन का उपयोग करते हैं और छात्र एक रिसीवर के माध्यम से सीधे शिक्षक की आवाज सुन सकता है, जिससे कक्षा का शोर बाधक नहीं बनता।
3. **स्पीच-टू-टेक्स्ट:** शिक्षक जो कह रहे हैं, वह सॉफ्टवेयर के माध्यम से तुरंत टेक्स्ट में परिवर्तित होकर छात्र के टैबलेट या कंप्यूटर स्क्रीन पर दिखाई देने लगता है।
4. **कैप्शनिंग और सबटाइटल्स:** शैक्षिक वीडियो में सबटाइटल्स होने से श्रवणबाधित छात्र विषय वस्तु को आसानी से समझ सकते हैं।
5. **इंडक्शन लूप सिस्टम:** यह एक विशेष तार की कुंडली है जो कक्षा में चुंबकीय क्षेत्र बनाती है और सीधे छात्र के हियरिंग एड तक ध्वनि पहुँचाती है।

<u>निष्कर्ष:</u> निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आधुनिक तकनीक का सही उपयोग दृष्टि और श्रवणबाधित छात्रों के आत्मविश्वास को बढ़ाता है और उन्हें सामान्य छात्रों के समकक्ष बनाता है। हालांकि, केवल उपकरणों की उपस्थिति ही पर्याप्त नहीं है; शिक्षकों को इन तकनीकों के उपयोग में कुशल होना चाहिए और स्कूलों में आवश्यक बुनियादी ढांचा सुनिश्चित करना चाहिए, तभी समावेशी शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य सफल होगा।

www.dascoaching.in

19. Briefly discuss the sociological dimensions of inclusive education. অন্তর্ভুক্তিমূলক শিক্ষার (Inclusive education) সমাজতাত্ত্বিক দিকগুলো সংক্ষেপে আলোচনা করুন।समावेशी शिक्षा (Inclusive education) के समाजशास्त्रीय आयामों की संक्षेप में चर्चा कीजिए। **2025**

Ans: <u>प्रस्तावना:</u> समावेशी शिक्षा केवल एक शैक्षिक रणनीति नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक आंदोलन है। समाजशास्त्र के दृष्टिकोण से, समावेशी शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो समाज के हाशिए पर रहने वाले, विशेष आवश्यकता वाले और पिछड़े छात्रों को मुख्यधारा की शिक्षा में शामिल करके एक भेदभाव रहित समाज के निर्माण की बात करती है। यह सामाजिक न्याय और समान अधिकार के दर्शन पर आधारित है।

<u>समाजशास्त्रीय आयाम:</u> समावेशी शिक्षा के प्रमुख समाजशास्त्रीय आयाम नीचे दिए गए हैं:

1. **सामाजिक एकीकरण (Social Integration):** समावेशी शिक्षा का मुख्य लक्ष्य विभाजित समाज को एकजुट करना है। जब विशेष आवश्यकता वाले बच्चे और सामान्य बच्चे एक ही छत के नीचे पढ़ते हैं, तो उनके बीच आपसी मेलजोल बढ़ता है। यह सामाजिक दूरी को कम करके एकजुटता की भावना पैदा करता है।
2. **सामाजिक न्याय और समानता (Social Justice and Equality):** समानता समाजशास्त्र के स्तंभों में से एक है। समावेशी शिक्षा जाति, धर्म, वर्ण, लिंग या शारीरिक अक्षमता की परवाह किए बिना प्रत्येक बच्चे के शिक्षा के अधिकार को मान्यता देती है। यह समाज के 'लेबलिंग' (Labeling) या अंधविश्वासों को दूर कर प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा की रक्षा करती है।
3. **लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास (Democracy):** एक लोकतांत्रिक समाज में प्रत्येक व्यक्ति को समान भागीदारी का अधिकार होता है। समावेशी विद्यालय एक लघु समाज की तरह कार्य करते हैं, जहाँ छात्र सहिष्णुता, सहानुभूति और विविधता के प्रति सम्मान प्रदर्शित करना सीखते हैं।
4. **सामाजिक बाधाओं का निवारण (Removal of Social Barriers):** समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, विकलांगता केवल एक शारीरिक दोष नहीं है, बल्कि समाज द्वारा निर्मित एक बाधा है। समावेशी शिक्षा इन सामाजिक बाधाओं (जैसे—नकारात्मक दृष्टिकोण, बुनियादी ढांचे की कमी) की पहचान कर उन्हें दूर करने का प्रयास करती है।

www.dascoaching.in

5. **अधिकार-आधारित दृष्टिकोण (Rights-based Approach):** यह दान या दया पर नहीं, बल्कि मानवाधिकारों पर आधारित है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, यह बच्चे को समाज के एक सक्रिय और उत्पादक सदस्य के रूप में विकसित करने का मार्ग प्रशस्त करता है।

निष्कर्ष: अंत में यह कहा जा सकता है कि समावेशी शिक्षा का समाजशास्त्रीय महत्व अत्यधिक है। यह केवल कक्षा के शिक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक विविध समाज के निर्माण की आधारशिला है। यदि समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से इस व्यवस्था को सफलतापूर्वक लागू किया जाए, तभी एक समावेशी समाज का निर्माण संभव होगा, जहाँ 'अलगाव' नहीं बल्कि 'सह-अस्तित्व' मूलमंत्र होगा।

20. Briefly compare between integrated education and inclusive education. সমন্বিত শিক্ষা (Integrated education) এবং অন্তর্ভুক্তিমূলক শিক্ষার মধ্যে সংক্ষেপে তুলনা করুন। एकीकृत शिक्षा (Integrated education) और समावेशी शिक्षा के बीच संक्षिप्त तुलना कीजिए। **2025**

Ans: प्रस्तावना: आधुनिक शिक्षा प्रणाली में प्रत्येक छात्र के शिक्षा के अधिकार को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार के शिक्षण परिवेशों का उदय हुआ है। अतीत में, विकलांग बच्चों को मुख्यधारा के सामान्य स्कूलों में लाने के प्राथमिक प्रयास को **'एकीकृत शिक्षा' (Integrated Education)** कहा जाता था। लेकिन वर्तमान में उस व्यवस्था की सीमाओं को पार करते हुए जिस भेदभाव-रहित और सभी के लिए उपयोगी आधुनिक शिक्षा धारा की शुरुआत हुई है, उसे ही **'समावेशी शिक्षा' (Inclusive Education)** कहा जाता है। मूल रूप से, 'छात्र की क्षमता' बनाम 'विद्यालय का बुनियादी ढांचा'—यही इन दोनों व्यवस्थाओं के बीच मुख्य अंतर का आधार है।

तुलना: एकीकृत शिक्षा बनाम समावेशी शिक्षा:

विषय	एकीकृत शिक्षा (Integrated Education)	समावेशी शिक्षा (Inclusive Education)
मूल अवधारणा	विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य स्कूल के माहौल में ढालने पर जोर देती है।	यह एक अधिकार-आधारित व्यवस्था है जहाँ सभी विविध छात्र एक साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं।

दृष्टिकोण	यहाँ माना जाता है कि कमी छात्र में है, इसलिए बच्चे को स्कूल के अनुसार ढलना पड़ता है।	यहाँ माना जाता है कि कमी शिक्षा प्रणाली में है, इसलिए स्कूल का माहौल छात्र की आवश्यकतानुसार बदलता है।
बुनियादी ढांचा	स्कूल के सामान्य ढांचे में बहुत अधिक बदलाव नहीं किया जाता है।	छात्रों की आवश्यकता के अनुसार स्कूल के ढांचे, पाठ्यक्रम और शिक्षण रणनीतियों में व्यापक बदलाव किया जाता है।
शिक्षक और शिक्षण	सामान्य शिक्षक ही पढ़ाते हैं, लेकिन विशेष सहायता के लिए अलग से विशेष शिक्षकों की आवश्यकता हो सकती है।	सामान्य और विशेष शिक्षक संयुक्त रूप से कार्य करते हैं (**Co-teaching**) और लचीली शिक्षण विधियों का उपयोग किया जाता है।
लागत और जटिलता	यह अपेक्षाकृत कम खर्चीली है क्योंकि इसमें सीमित ढांचागत परिवर्तन होते हैं।	बुनियादी ढांचे में बदलाव और प्रशिक्षित कर्मियों की आवश्यकता के कारण यह शुरुआत में खर्चीली हो सकती है।
सफलता का पैमाना	यदि बच्चा सामान्य पाठ्यक्रम में सफल हो पाता है, तभी उसे शामिल रखा जाता है।	प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत उन्नति और सामाजिक भागीदारी को ही सफलता का पैमाना माना जाता है।

<u>मुख्य अंतर</u>

1. **केंद्र बिंदु:** एकीकृत शिक्षा के केंद्र में **'बच्चा'** होता है, जिसे बदलना पड़ता है। दूसरी ओर, समावेशी शिक्षा के केंद्र में **'पूरी प्रणाली'** होती है, जो बच्चे की जरूरत के अनुसार बदलती है।
2. **सहयोग:** एकीकृत शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चे अकेलापन महसूस कर सकते हैं क्योंकि वे अक्सर सामान्य छात्रों से पिछड़ जाते हैं। समावेशी शिक्षा में **सहकर्मी शिक्षण (Peer Learning)** और समूह कार्यों के माध्यम से सामाजिक जुड़ाव बनाया जाता है।
3. **उद्देश्य:** एकीकृत शिक्षा का लक्ष्य केवल विशेष बच्चों को सामान्य स्कूल में स्थान देना था। समावेशी शिक्षा का लक्ष्य जाति, धर्म, वर्ण, लिंग और शारीरिक क्षमता के भेदभाव के बिना सभी को एक ही छत के नीचे लाना है।

<u>निष्कर्ष:</u> निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि एकीकृत शिक्षा, समावेशी शिक्षा का एक प्रारंभिक चरण था। जहाँ एकीकृत शिक्षा केवल विशेष बच्चों को सामान्य स्कूल में स्थान देने की बात करती है, वहीं समावेशी शिक्षा शिक्षा के अधिकार को मान्यता देते हुए प्रत्येक बच्चे के लिए समान सम्मान वाला वातावरण सुनिश्चित करती है। वर्तमान लोकतांत्रिक समाज में **'सभी के लिए शिक्षा' (Education for All)** के लक्ष्य को पूरा

www.dascoaching.in

करने के लिए समावेशी शिक्षा का कोई विकल्प नहीं है। यह न केवल कक्षा की विविधता को स्वीकार करती है, बल्कि उस विविधता के उत्सव के माध्यम से एक संवेदनशील समाज का निर्माण करती है।

21. Write down the roles of RCI for the education of children with disabilities. প্রতিবন্ধী শিশুদের শিক্ষার ক্ষেত্রে RCI-এর ভূমিকাগুলি লিখুন। विकलांग बच्चों की शिक्षा के लिए RCI की भूमिकाओं को लिखिए। **2025**

Ans: <u>प्रस्तावना:</u> भारतीय पुनर्वास परिषद (RCI) भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के तहत एक वैधानिक निकाय है। इसकी स्थापना 1992 में संसद के एक अधिनियम के माध्यम से की गई थी। विकलांग व्यक्तियों के पुनर्वास और विशेष शिक्षा के मानकों में सुधार के लिए RCI एक केंद्रीय स्तंभ के रूप में कार्य करता है। विशेष रूप से समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) और विशेष शिक्षा के प्रसार में यह संस्था अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

<u>विकलांग बच्चों की शिक्षा में RCI के मुख्य कार्य:</u> विकलांग बच्चों की शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में RCI की भूमिकाएँ नीचे दी गई हैं-

1. **पाठ्यक्रम निर्धारण और गुणवत्ता नियंत्रण:** RCI विशेष शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का पाठ्यक्रम निर्धारित करता है। बी.एड. (विशेष शिक्षा), डी.एड. (विशेष शिक्षा) आदि पाठ्यक्रमों की रूपरेखा इस तरह तैयार की जाती है ताकि भावी शिक्षक विकलांग बच्चों की विशेष आवश्यकताओं को समझ सकें और उसी के अनुसार शिक्षण कर सकें।
2. **शिक्षक और कर्मियों का प्रशिक्षण:** विकलांग बच्चों की शिक्षा के लिए कुशल शिक्षकों की आवश्यकता होती है। RCI देश भर के विभिन्न संस्थानों में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को मंजूरी देता है और नियमित निरीक्षण के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता बनाए रखता है। प्रशिक्षित शिक्षकों को एक **केंद्रीय पुनर्वास रजिस्टर (CRR)** में पंजीकृत किया जाता है।
3. **अनुसंधान और नवाचार:** RCI विकलांग बच्चों के सीखने के तरीकों को और सरल बनाने के लिए निरंतर अनुसंधान को प्रोत्साहित करता है। नए सहायक उपकरणों (Assistive Devices) और आधुनिक तकनीक के उपयोग के माध्यम से विकलांग बच्चों को मुख्यधारा की शिक्षा में कैसे लाया जाए, इस पर यह संस्था दिशा-निर्देश प्रदान करती है।

4. **पुनर्वास विशेषज्ञों को मान्यता प्रदान करना:** RCI न केवल सामान्य शिक्षकों, बल्कि स्पीच थेरेपिस्ट, क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट और पुनर्वास कार्यकर्ताओं के लिए भी पेशेवर योग्यता के मानक तय करता है। इसके परिणामस्वरूप, विकलांग बच्चों को सही और वैज्ञानिक सहायता प्राप्त होती है।
5. **बाधाओं को दूर करना और जागरूकता बढ़ाना:** RCI समावेशी स्कूलों में विकलांग बच्चों के लिए उपयुक्त वातावरण (बाधा-मुक्त वातावरण) बनाने की सलाह देता है। इसके अलावा, समाज और अभिभावकों के बीच विकलांगता के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए विभिन्न कार्यशालाओं और सेमिनारों का आयोजन करता है।

निष्कर्ष: अंत में, यह कहा जा सकता है कि विकलांग बच्चों के लिए केवल स्कूल स्थापित करने से लक्ष्य पूरा नहीं होता है; इसके लिए कुशल शिक्षकों और वैज्ञानिक शिक्षण विधियों की आवश्यकता होती है। RCI अपने कड़े पर्यवेक्षण और प्रशिक्षण ढांचे के माध्यम से इस कमी को पूरा करता है। विशेष शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और विकलांग बच्चों को समाज की मुख्यधारा में वापस लाने में RCI का योगदान निर्विवाद है। इसका सही क्रियान्वयन ही भारत के समावेशी शिक्षा के सपने को साकार कर सकता है।

22. What are the categories of Hearing Impairment? Elucidate the cause of Hearing Impairment after birth. শ্রবণ প্রতিবন্ধকতার বিভাগগুলো কী কী? জন্মের পরবর্তী সময়ে শ্রবণ প্রতিবন্ধকতার কারণগুলো ব্যাখ্যা করুন। श्रवण दोष (Hearing Impairment) की श्रेणियाँ क्या हैं? जन्म के बाद श्रवण दोष के कारणों की व्याख्या कीजिए। **2025**

Ans: प्रस्तावना: श्रवण बाधिता (Hearing Impairment) से तात्पर्य किसी व्यक्ति की सुनने की अक्षमता या सुनने की शक्ति में कमी से है। यह केवल एक शारीरिक समस्या नहीं है, बल्कि यह संचार, भाषा सीखने और सामाजिक मेलजोल में भी बाधा उत्पन्न करती है। विशेष रूप से समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) के संदर्भ में, श्रवण बाधित छात्रों की आवश्यकताओं को समझने के लिए इस अक्षमता के प्रकारों और कारणों का गहन ज्ञान होना आवश्यक है।

श्रवण बाधिता के वर्गीकरण: श्रवण बाधिता को मुख्य रूप से दो आधारों पर विभाजित किया जा सकता है: श्रवण हानि के प्रकार के अनुसार और सुनने की तीव्रता के अनुसार।

क. प्रकार के अनुसार वर्गीकरण:

1. **चालकीय श्रवण दोष (Conductive Hearing Loss):** जब बाहरी कान या मध्य कान की समस्याओं के कारण ध्वनि तरंगें आंतरिक कान तक नहीं पहुँच पाती हैं।
2. **संवेदी-तंत्रिकागत श्रवण दोष (Sensorineural Hearing Loss):** जब आंतरिक कान का 'कॉकलीया' (Cochlea) या श्रवण तंत्रिका क्षतिग्रस्त हो जाती है। यह आमतौर पर स्थायी होता है।
3. **मिश्रित श्रवण दोष (Mixed Hearing Loss):** जब चालकीय और संवेदी-तंत्रिकागत—दोनों प्रकार की समस्याएँ एक साथ मौजूद होती हैं।

ख. तीव्रता या स्तर के अनुसार वर्गीकरण (WHO के अनुसार):

1. **सौम्य (Mild):** 26-40 डेसिबल (dB) की श्रवण हानि।
2. **मध्यम (Moderate):** 41-55 डेसिबल (dB) की श्रवण हानि।
3. **गंभीर (Severe):** 71-90 डेसिबल (dB) की श्रवण हानि।
4. **अति गंभीर (Profound):** 90 डेसिबल से अधिक की श्रवण हानि।

<u>जन्म के पश्चात श्रवण बाधिता के कारण:</u> जन्म के बाद विभिन्न पर्यावरणीय और शारीरिक कारणों से व्यक्ति की सुनने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। इसके मुख्य कारण हैं-

1. **संक्रामक रोग:** बचपन में खसरा (Measles), कण्ठमाला (Mumps), दिमागी बुखार (Meningitis) या चेचक जैसे संक्रामक रोग सुनने की शक्ति को गंभीर रूप से नुकसान पहुँचा सकते हैं।
2. **ओटिटिस मीडिया (Otitis Media):** यह मध्य कान का एक संक्रमण है जहाँ मवाद या पानी जमा हो जाता है। सही उपचार न होने पर इससे स्थायी रूप से सुनने की शक्ति खो सकती है।
3. **तीव्र ध्वनि प्रदूषण:** कारखानों का शोर, कान के पास पटाखों का फटना या लंबे समय तक तेज आवाज में हेडफोन के उपयोग से आंतरिक कान की तंत्रिका कोशिकाएं क्षतिग्रस्त हो जाती हैं।
4. **चोट के कारण:** कान में तीखी वस्तु डालना, दुर्घटना के कारण सिर में चोट लगना या कान के पर्दे को नुकसान पहुँचने से सुनने की शक्ति कम हो जाती है।
5. **दवाओं के दुष्प्रभाव:** कुछ तेज एंटीबायोटिक या स्टेरॉयड दवाएं (Ototoxic drugs) कान की नसों को नुकसान पहुँचा सकती हैं।
6. **वृद्धावस्था:** उम्र बढ़ने के साथ प्राकृतिक रूप से सुनने की क्षमता कम हो जाती है, जिसे 'प्रिसबायकुसिस' (Presbycusis) कहा जाता है।

www.dascoaching.in

निष्कर्ष: अंततः यह कहा जा सकता है कि श्रवण बाधिता एक बहुआयामी समस्या है। सही समय पर पहचान और उपयुक्त श्रवण यंत्रों या थेरेपी के माध्यम से इस बाधा को दूर किया जा सकता है। एक शिक्षक के रूप में हमारा उत्तरदायित्व इन छात्रों की पहचान करना और कक्षा में उनके लिए एक सहायक और समावेशी वातावरण तैयार करना है, ताकि वे मुख्यधारा की शिक्षा के साथ कदम से कदम मिला सकें।

23. What is Curricular adaptation? Suggest the plus curriculum for visually impaired children. পাঠ্যক্রম অভিযোজন (Curricular adaptation) কী? দৃষ্টিহীন শিশুদের জন্য 'প্লাস কারিকুলাম' (Plus curriculum) সম্পর্কে পরামর্শ দিন। पाठ्यचर्या अनुकूलन (Curricular adaptation) क्या है? दृष्टिबाधित बच्चों के लिए 'प्लस करिकुलम' (Plus curriculum) का सुझाव दीजिए। **2025**

Ans: प्रस्तावना: एक समावेशी शिक्षा प्रणाली (Inclusive Education) में प्रत्येक छात्र की क्षमता और आवश्यकता के अनुसार शिक्षा के अवसर सुनिश्चित करना अनिवार्य है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य विद्यालयों में सामान्य छात्रों के साथ अध्ययन के योग्य बनाने के लिए प्रचलित पाठ्यक्रम में जो परिवर्तन या परिमार्जन किए जाते हैं, उन्हें **'पाठ्यक्रम अनुकूलन' (Curricular Adaptation)** कहा जाता है। यह मूल रूप से सीखने की बाधाओं को दूर करने और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को छात्र के अनुकूल बनाने की एक वैज्ञानिक तकनीक है।

पाठ्यक्रम अनुकूलन (Curricular Adaptation): पाठ्यक्रम अनुकूलन एक ऐसी लचीली प्रक्रिया है जहाँ छात्र की सीखने की अक्षमता या विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए मुख्य पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु, शिक्षण विधियों, मूल्यांकन के प्रकार और पर्यावरणीय व्यवस्थाओं में आवश्यक सुधार किए जाते हैं।

इसकी मुख्य विशेषताएं हैं:

1. **शिक्षण सामग्री में परिवर्तन:** जैसे दृष्टिबाधितों के लिए ब्रेल या श्रव्य सहायता सामग्री का उपयोग।
2. **समय सीमा में परिवर्तन:** कार्य पूरा करने के लिए अतिरिक्त समय प्रदान करना।
3. **लक्ष्यों और उद्देश्यों का पुनर्निर्धारण:** छात्र की क्षमता के अनुसार पाठ की गहराई निर्धारित करना।
4. **मूल्यांकन पद्धतियों में लचीलापन:** मौखिक परीक्षा या वैकल्पिक परीक्षणों की व्यवस्था करना।

<u>दृष्टिबाधित बच्चों के लिए 'प्लस करिकुलम' (Plus Curriculum):</u> दृष्टिबाधित बच्चे सामान्य पाठ्यक्रम की कई चीजों को सीधे ग्रहण नहीं कर सकते। उन्हें स्वतंत्र रूप से आने-जाने और समाज की मुख्यधारा में ढलने के लिए मूल पाठ्यक्रम के अतिरिक्त जो विशेष कौशल सिखाए जाते हैं, उन्हें **'प्लस करिकुलम'** कहा जाता है। दृष्टिबाधित बच्चों के लिए प्लस करिकुलम के महत्वपूर्ण पहलू नीचे दिए गए हैं:

1. **ब्रेल पठन और लेखन:** दृष्टिबाधित बच्चों की शिक्षा का मुख्य माध्यम ब्रेल है। प्लस करिकुलम में ब्रेल पद्धति के सही उपयोग, ब्रेल स्लेट और स्टाइलस चलाने और ब्रेल टाइपराइटर के उपयोग पर विशेष जोर दिया जाता है।
2. **अभिविन्यास और गतिशीलता (Orientation and Mobility):** दृष्टिबाधित बच्चों की दूसरों पर निर्भरता कम करने के लिए उन्हें स्वतंत्र आवाजाही की तकनीक सिखाई जाती है। इसमें **सफेद छड़ी (White Cane)** का उपयोग, ध्वनि के स्रोत का अनुसरण करके दिशा का निर्धारण और स्पर्श के माध्यम से पर्यावरण को पहचानने का प्रशिक्षण शामिल है।
3. **दैनिक जीवन कौशल (Daily Living Skills - DLS):** अपने व्यक्तिगत कार्य जैसे—कपड़े पहनना, खान-पान की आदतें, व्यक्तिगत स्वच्छता बनाए रखना और पैसे पहचानकर लेन-देन करने जैसे आवश्यक जीवन कौशल इस पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग हैं।
4. **इंद्रिय प्रशिक्षण (Sensory Training):** दृष्टि की कमी को पूरा करने के लिए शेष इंद्रियों—स्पर्श, श्रवण, गंध और स्वाद—को तेज और प्रभावी बनाने के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। स्पर्श के माध्यम से ज्यामितीय आकृतियों या मानचित्रों को समझने का कौशल इसी के माध्यम से विकसित होता है।
5. **सहायक तकनीक का उपयोग (Use of Assistive Technology):** आधुनिक युग में टॉकिंग कैलकुलेटर, स्क्रीन रीडिंग सॉफ्टवेयर (जैसे- JAWS, NVDA) और स्मार्टफोन के विशेष ऐप्स के उपयोग का प्रशिक्षण प्लस करिकुलम में शामिल है, जो उन्हें सूचना प्रौद्योगिकी में कुशल बनाता है।

<u>निष्कर्ष:</u> निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पाठ्यक्रम अनुकूलन और प्लस करिकुलम एक-दूसरे के पूरक हैं। जहाँ पाठ्यक्रम अनुकूलन विषय-वस्तु को सुलभ बनाता है, वहीं प्लस करिकुलम दृष्टिबाधित छात्र को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाता है। यदि बी.एड (BSAEU) पाठ्यक्रम में शामिल इन विशेष शिक्षा पद्धतियों को सफलतापूर्वक लागू किया जाता है, तो एक समावेशी समाज के निर्माण का सपना साकार होगा।

www.dascoaching.in

10 Marks Question

1. Identify the barriers for educational and social inclusion. Discuss how to overcome these barriers. শিক্ষাগত ও সামাজিক অন্তর্ভুক্তিকরণে বাধাসমূহ চিহ্নিত করুন। কিভাবে এই বাধাসমূহ দূর করা যায় তা আলোচনা করুন। शैक्षिक और सामाजिक समावेशन की बाधाओं की पहचान करें। इन बाधाओं को कैसे दूर किया जाए, इस पर चर्चा करें। **2018, 2020, 2022**

Ans: प्रस्तावना: समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) का मुख्य लक्ष्य विविधता को स्वीकार करना और प्रत्येक विद्यार्थी को—उनकी शारीरिक, मानसिक या सामाजिक स्थिति की परवाह किए बिना—सामान्य विद्यालयों की मुख्यधारा में शामिल करना है। आधुनिक समाज में 'सभी के लिए शिक्षा' सुनिश्चित करने हेतु समावेशन एक अनिवार्य प्रक्रिया है। हालांकि, इस महान उद्देश्य को सफल बनाने के मार्ग में कई बाधाएँ हैं। शैक्षिक और सामाजिक समावेशन की प्रमुख बाधाओं और उन्हें दूर करने के उपायों पर नीचे विस्तार से चर्चा की गई है।

शैक्षिक और सामाजिक समावेशन की प्रमुख बाधाएँ: समावेशन के मार्ग की बाधाओं को मुख्य रूप से चार भागों में बांटा जा सकता है-

1. **मनोवैज्ञानिक या दृष्टिकोण संबंधी बाधाएँ (Attitudinal Barriers):** यह समावेशन के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। शिक्षकों, अभिभावकों और सामान्य समाज के लोगों के बीच विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की क्षमताओं के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण या पूर्वाग्रह देखा जाता है। कई बार उन्हें समाज पर बोझ माना जाता है, जिससे उनका आत्मविश्वास कम हो जाता है।
2. **ढांचागत या भौतिक बाधाएँ (Physical/Structural Barriers):** अधिकांश विद्यालय और सामाजिक संस्थान सामान्य लोगों की सुविधा के अनुसार बनाए गए हैं। रैंप (Ramp), उपयुक्त शौचालय, चौड़े दरवाजे या ब्रेल संकेतों का अभाव विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए विद्यालय में प्रवेश हेतु बड़ी बाधा बनता है।
3. **पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति संबंधी बाधाएँ (Curricular Barriers):** एक अनम्य और नीरस पाठ्यक्रम समावेशन में बाधक है। यदि पाठ्यक्रम केवल औसत छात्रों को ध्यान में रखकर बनाया जाता है, तो विशेष आवश्यकता वाले या पिछड़े छात्र इससे वंचित रह जाते हैं। उपयुक्त शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) का अभाव भी एक बड़ी समस्या है।

www.dascoaching.in

4. **आर्थिक और नीतिगत बाधाएँ (Economic and Policy Barriers):** समावेशी बुनियादी ढांचा तैयार करने के लिए पर्याप्त धन की कमी अक्सर बाधा बनती है। इसके अतिरिक्त, सरकारी नीतियां होने के बावजूद कई मामलों में उनके सही कार्यान्वयन में कमी देखी जाती है।

<u>बाधाओं को दूर करने के उपाय (Strategies to Overcome Barriers):</u> समावेशन को सफल बनाने के लिए निम्नलिखित कदम उठाने आवश्यक हैं-

1. **जागरूकता बढ़ाना और दृष्टिकोण में बदलावः** समाज और विद्यालय के सभी स्तरों पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। कार्यशालाओं के माध्यम से शिक्षकों और अभिभावकों को यह समझाना होगा कि प्रत्येक बच्चे को सीखने का समान अधिकार है। सहानुभूतिपूर्ण वातावरण बनाना होगा।
2. **बुनियादी ढांचे का विकासः** विद्यालयों को 'बाधा मुक्त वातावरण' (Barrier-free environment) के रूप में विकसित करना होगा। रैंप का निर्माण, चौड़े प्रवेश द्वार, श्रवण और दृष्टि सहायता उपकरण और विशेष शौचालयों की व्यवस्था करनी होगी।
3. **लचीला पाठ्यक्रम और मूल्यांकन पद्धतिः** पाठ्यक्रम को छात्रों की आवश्यकताओं के अनुसार लचीला बनाना चाहिए। बहु-संवेदी शिक्षण पद्धति (Multisensory approach) का उपयोग करना होगा। मूल्यांकन के लिए केवल लिखित परीक्षा न लेकर मौखिक, प्रोजेक्ट या रचनात्मक कार्यों के माध्यम से उनके कौशल की जांच करनी चाहिए।
4. **शिक्षक प्रशिक्षण (Teacher Training):** शिक्षकों के लिए समावेशी शिक्षा या विशेष शिक्षा पर विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए। उन्हें कक्षा में विविध छात्रों को संभालने की तकनीक सीखनी होगी।
5. **सहयोगात्मक अधिगम (Collaborative Learning):** कक्षा में सहकर्मी शिक्षण (Peer Tutoring) और सहयोगात्मक शिक्षण का वातावरण बनाना चाहिए। इससे सामान्य छात्र अपने विशेष आवश्यकता वाले मित्रों की मदद करना सीखेंगे और सामाजिक एकजुटता बढ़ेगी।

<u>निष्कर्षः</u> अंततः यह कहा जा सकता है कि समावेशन केवल एक शैक्षिक रणनीति नहीं है, बल्कि एक मानवाधिकार है। शैक्षिक और सामाजिक बाधाओं को दूर करके एक भेदभाव रहित समाज का निर्माण संभव है। यदि सरकार, शिक्षक, अभिभावक और समाज मिलकर आगे आएं, तो प्रत्येक बच्चा अपनी पूर्ण

www.dascoaching.in

क्षमता का विकास कर सकेगा और 'एक समावेशी स्कूल बनाने' (Creating an Inclusive School) का सपना साकार होगा।

2. Discuss the desirable skills of teachers of secondary schools for inclusive education.
মাধ্যমিক স্তরে অন্তর্ভুক্তিমূলক শিক্ষার জন্য শিক্ষকদের বাঞ্ছনীয় দক্ষতাগুলি আলোচনা করুন।
समावेशी शिक्षा के लिए माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की वांछनीय योग्यताओं पर चर्चा करें। **2018, 2021**

Ans: **<u>प्रस्तावना:</u>** समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) एक ऐसी आधुनिक शिक्षा प्रणाली है जहाँ सामान्य विद्यार्थियों के साथ-साथ विशेष आवश्यकता वाले बच्चे और विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थी एक ही छत के नीचे एक साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं। माध्यमिक स्तर पर किशोरों में होने वाले परिवर्तनों और पाठ्यक्रम की जटिलता के कारण समावेशी वातावरण बनाए रखना काफी चुनौतीपूर्ण होता है। इस वातावरण में एक शिक्षक की भूमिका केवल सूचना प्रदाता की नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक और सहायक की होती है। **BSAEU** पाठ्यक्रम के अनुसार, समावेशी विद्यालय बनाने के लिए शिक्षकों को कुछ विशेष वांछनीय कौशलों की आवश्यकता होती है।

<u>माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों के वांछनीय कौशल</u>: समावेशी शिक्षा के सफल कार्यान्वयन के लिए एक माध्यमिक शिक्षक में निम्नलिखित कौशल होना अत्यंत आवश्यक है-

1. विविधता के प्रति जागरूकता और सकारात्मक दृष्टिकोण: शिक्षक का मुख्य कौशल कक्षा की विविधता (Diversity) को स्वीकार करना है। प्रत्येक छात्र की सीखने की क्षमता, शारीरिक स्थिति और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अलग हो सकती है। शिक्षक को यह विश्वास करना चाहिए कि प्रत्येक बच्चे में सीखने का अधिकार और क्षमता है।

2. विभेदित निर्देश पद्धति (Differentiated Instruction): सभी छात्र एक ही तरीके से नहीं सीखते। इसलिए, शिक्षक को विभिन्न शिक्षण विधियों—जैसे **श्रव्य (Auditory), दृश्य (Visual) और गतिज (Kinesthetic)** पद्धतियों के संयोजन में कुशल होना चाहिए। जटिल विषयों को छोटे भागों में बाँटने की क्षमता उनमें होनी चाहिए।

3. व्यक्तिगत शिक्षा योजना (IEP) का निर्माण: विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए **'Individualized Education Program' (IEP)** अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक को प्रत्येक छात्र की सीमाओं और संभावनाओं

की पहचान कर उनके लिए अलग लक्ष्य निर्धारित करने और पाठ्यक्रम को लचीला बनाने का कौशल सीखना चाहिए।

4. सहायक तकनीक का उपयोग (Assistive Technology): आधुनिक समावेशी शिक्षा में तकनीक का उपयोग अनिवार्य है। दृष्टिबाधितों के लिए ब्रेल या स्क्रीन रीडर और श्रवण बाधितों के लिए हियरिंग एड या स्पीच-टू-टेक्स्ट सॉफ़्टवेयर के बारे में शिक्षक को पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए।

5. कक्षा प्रबंधन और समूह शिक्षण: माध्यमिक स्तर की बड़ी कक्षाओं में अनुशासन बनाए रखने के साथ-साथ सहयोगात्मक वातावरण बनाना एक बड़ा कौशल है। शिक्षक को ऐसे समूह बनाने चाहिए जहाँ सक्षम और अक्षम छात्र एक-दूसरे की मदद कर सकें (**Peer Tutoring**)।

6. मूल्यांकन तकनीकों का विविधीकरण: पारंपरिक लिखित परीक्षा सभी के लिए प्रभावी नहीं हो सकती है। इसलिए, शिक्षक को मौखिक परीक्षा, प्रोजेक्ट, मॉडल निर्माण या अवलोकन के माध्यम से छात्र की प्रगति का मूल्यांकन करने में सक्षम होना चाहिए।

7. संचार और सहयोग (Communication and Collaboration): एक शिक्षक को न केवल छात्रों के साथ, बल्कि विशेष शिक्षकों (Resource Teacher), डॉक्टरों, मनोवैज्ञानिकों और अभिभावकों के साथ भी नियमित संपर्क बनाए रखना चाहिए। उन्हें एक कुशल परामर्शदाता (Counselor) की भूमिका भी निभानी होती है।

निष्कर्ष: समावेशी शिक्षा प्रणाली में माध्यमिक स्तर के शिक्षक की जिम्मेदारी बहुत व्यापक है। केवल किताबी ज्ञान या सामान्य बी.एड डिग्री से इन चुनौतियों का सामना करना संभव नहीं है। इसके लिए धैर्य, रचनात्मकता और निरंतर कुछ नया सीखने की मानसिकता की आवश्यकता होती है। जब शिक्षक उपरोक्त कौशलों में पारंगत होंगे, तभी एक भेदभाव रहित और समृद्ध शिक्षा प्रणाली विकसित हो पाएगी।

3. Briefly discuss the use of technology for inclusive education. অন্তর্ভুক্তিমূলক শিক্ষার ক্ষেত্রে প্রযুক্তির ব্যবহার সংক্ষেপে আলোচনা করুন। समावेशी शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग पर संक्षेप में चर्चा करें। **2019, 2021**

Ans: प्रस्तावना: इक्कीसवीं सदी में समावेशी शिक्षा का मुख्य लक्ष्य प्रत्येक विद्यार्थी को—उनकी शारीरिक, मानसिक या सामाजिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना—एक ही कक्षा में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना

है। आधुनिक तकनीक या सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में उभरी है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) को सामान्य बच्चों के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ाने में तकनीक एक क्रांतिकारी बदलाव लाई है, जो शैक्षिक असमानता को दूर करने में सहायक है।

समावेशी शिक्षा में प्रौद्योगिकी के बहुआयामी उपयोग: समावेशी कक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग को मुख्य रूप से कुछ प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है-

1. सहायक तकनीक (Assistive Technology) विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सीखने की सीमाओं को दूर करने के लिए सहायक तकनीक अनिवार्य है।

- **दृष्टिबाधित छात्रों के लिए:** ब्रेल डिस्प्ले, स्क्रीन रीडिंग सॉफ्टवेयर (जैसे- NVDA, JAWS) और ऑडियो बुक्स के माध्यम से वे पाठ्यपुस्तकों को सुन और समझ सकते हैं।
- **श्रवणबाधित छात्रों के लिए:** हियरिंग एड, वीडियो कैप्शनिंग और स्पीच-टू-टेक्सट कन्वर्टर का उपयोग किया जाता है, जो शिक्षक की बातों को लिखित रूप में उनके सामने प्रस्तुत करते हैं।
- **अधिगम अक्षमता (Learning Disability) वाले बच्चों के लिए:** डिस्लेक्सिया या डिस्ग्राफिया से प्रभावित बच्चों के लिए स्पेल-चेकर और टेक्सट-टू-स्पीच सॉफ्टवेयर अत्यंत प्रभावी हैं।

2. अनुकूलित शिक्षण पद्धति (Adaptive Learning) तकनीक के माध्यम से पाठ्यक्रम को प्रत्येक छात्र की आवश्यकता के अनुसार अनुकूलित (Customize) किया जा सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) संचालित सॉफ्टवेयर छात्र की सीखने की गति का विश्लेषण करता है और उसे उसी के अनुसार अगले चरण का कार्य देता है। इसके परिणामस्वरूप, पिछड़ने वाले छात्र अपनी लय में सीख सकते हैं।

3. मल्टीमीडिया का उपयोग कक्षा में केवल व्याख्यान के बजाय चित्रों, एनिमेशन, वीडियो और ग्राफिक्स का उपयोग समावेशी शिक्षा को अधिक जीवंत बनाता है। यह विशेष रूप से ऑटिज़्म या ध्यान अभाव (ADHD) वाले बच्चों को पाठ में ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है।

4. गेमिफिकेशन या खेल-खेल में शिक्षा शैक्षिक खेलों और सिमुलेशन के उपयोग के माध्यम से जटिल विषयों को सरल बनाया जाता है। यह छात्रों के बीच आपसी सहयोग को बढ़ाता है और प्रतिस्पर्धा के डर को दूर कर सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है।

5. दूरस्थ शिक्षा और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जो छात्र शारीरिक बीमारी या भौगोलिक दूरी के कारण स्कूल आने में असमर्थ हैं, उनके लिए गूगल क्लासरूम, ज़ूम या विभिन्न लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS) वरदान के समान हैं। इसके माध्यम से वे घर बैठे ही समावेशी शिक्षा का हिस्सा बन सकते हैं।

समावेशी शिक्षा में तकनीक का महत्व:

1. **आत्मविश्वास में वृद्धि:** तकनीक के उपयोग से विशेष आवश्यकता वाले बच्चे दूसरों पर निर्भरता कम करके आत्मनिर्भर बनते हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।
2. **व्यक्तिगत ध्यान:** शिक्षक तकनीक का उपयोग करके प्रत्येक छात्र की विशेष आवश्यकताओं पर अलग से ध्यान दे सकते हैं।
3. **संचार में सुधार:** जो बोलने में असमर्थ हैं, वे 'वैकल्पिक और संवर्धित संचार' (AAC) ऐप का उपयोग करके अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं।

निष्कर्ष: अंततः यह कहा जा सकता है कि समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में तकनीक केवल एक उपकरण नहीं है, बल्कि यह समानता और अवसर का एक सेतु (Bridge) है। हालाँकि, केवल तकनीक की उपस्थिति ही पर्याप्त नहीं है; इसके सही अनुप्रयोग के लिए शिक्षकों का उचित प्रशिक्षण और विद्यालय के बुनियादी ढांचे (Infrastructure) का विकास अत्यंत आवश्यक है। सही योजना और तकनीक के मेल से एक वास्तविक समावेशी समाज और विद्यालय बनाना संभव है, जहाँ "सबके लिए शिक्षा" का नारा वास्तव में साकार होगा।

4. Discuss the types and uses of aids and appliances used for educational rehabilitation of children with special needs. বিশেষ চাহিদাসম্পন্ন শিশুর শিক্ষামূলক পুনর্বাসনে ব্যবহৃত বিভিন্ন প্রকারের সহযোগী সরঞ্জামের সম্বন্ধে এবং এর ব্যবহার সম্বন্ধে আলোচনা করুন। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के शैक्षिक पुनर्वास के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरणों और सहायक साधनों के प्रकारों और उनके उपयोगों पर चर्चा करें। **2019, 2020**

Ans: प्रस्तावना: शैक्षिक पुनर्वास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) की अंतर्निहित क्षमताओं को विकसित कर उन्हें शिक्षा की मुख्यधारा में शामिल किया जाता है। इन बच्चों की शारीरिक या मानसिक सीमाओं को दूर करने और सीखने की प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए जिन विशेष यांत्रिक या अयांत्रिक तकनीकों और सामग्रियों का उपयोग किया जाता है, उन्हें **सहायक और**

अनुकूलक उपकरण (Assistive and Adaptive Devices) कहा जाता है। समावेशी शिक्षा प्रणाली में ये उपकरण बच्चों की आत्मनिर्भरता बढ़ाते हैं।

<u>सहायक उपकरणों के प्रकार और उपयोग:</u>

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की विविधताओं के अनुसार, सहायक उपकरणों को मुख्य रूप से निम्नलिखित श्रेणियों में बांटा जा सकता है:

1. दृष्टिबाधित और अल्पदृष्टि वाले बच्चों के लिए उपकरण (Visual Impairment):

- **ब्रेल उपकरण:** बच्चे ब्रेल स्लेट और स्टाइलस (Stylus) का उपयोग करके लिख सकते हैं। वर्तमान में गणित की शिक्षा के लिए 'टेलर फ्रेम' (Taylor Frame) अत्यंत लोकप्रिय है।
- **ऑडियो डिवाइस:** टॉकिंग बुक (Talking Book), ऑडियो रिकॉर्डर और स्क्रीन रीडिंग सॉफ्टवेयर (जैसे- JAWS, NVDA) कंप्यूटर पर लिखे टेक्स्ट को पढ़कर सुनाने में मदद करते हैं।
- **आवर्धक उपकरण (Magnifying Tools):** कम दृष्टि वाले बच्चों के लिए मैग्निफाइंग ग्लास या लेंस का उपयोग किया जाता है ताकि वे सामान्य अक्षरों को बड़ा करके देख सकें।

2. श्रवण बाधित बच्चों के लिए उपकरण (Hearing Impairment):

- **श्रवण यंत्र (Hearing Aid):** यह ध्वनि को बढ़ाकर कान तक पहुँचाने में मदद करता है। इसमें पॉकेट मॉडल या कान के पीछे वाले मॉडल (BTE) प्रमुख हैं।
- **स्पीच ट्रेनर:** बोलने की हिचकिचाहट दूर करने और सही उच्चारण सीखने के लिए शिक्षक स्पीच ट्रेनर का उपयोग करते हैं।
- **लूप सिस्टम:** कक्षा में गूँज को कम करने और शिक्षक की आवाज़ को सीधे छात्र के श्रवण यंत्र तक पहुँचाने के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

3. अस्थिबाधित या चलन बाधित बच्चों के लिए उपकरण (Orthopaedic Impairment):

- **व्हीलचेयर और ट्राइसाइकिल:** स्कूल में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए इनका उपयोग किया जाता है।

www.dascoaching.in

- **अनुकूलित फर्नीचर:** बच्चे की शारीरिक बनावट के अनुसार विशेष ऊँचाई वाले डेस्क, कुर्सी या बैठने की सीटें बनाई जाती हैं।
- **संशोधित पेन/पेंसिल:** यदि उंगलियों के संचालन में समस्या हो, तो मोटे ग्रिप वाले पेंसिल या होल्डर का उपयोग किया जाता है।

4. बौद्धिक और सीखने की अक्षमता वाले बच्चों के लिए उपकरण (ID & Learning Disabilities):

- **विकासात्मक किट:** रंग, आकार और आकृति की पहचान के लिए पहेलियाँ (Puzzles), फ्लैश कार्ड और ब्लॉक डिज़ाइन का उपयोग किया जाता है।
- **टैबलेट और लैपटॉप:** विशेष ऐप्स के माध्यम से खेल-खेल में अक्षर पहचानना या गिनती सिखाई जाती है।
- **दर्पण (Mirror):** चेहरे के हाव-भाव और होंठों की हलचल देखकर बोलना सीखने के लिए दर्पण एक अत्यंत प्रभावी उपकरण है।

<u>शैक्षिक पुनर्वास में इन उपकरणों का महत्व:</u>

1. **सीखने की प्रक्रिया में भागीदारी:** इन उपकरणों के उपयोग से ये बच्चे सामान्य बच्चों की तरह ही पढ़ाई में सक्रिय रूप से भाग ले सकते हैं।
2. **आत्मविश्वास में वृद्धि:** दूसरों पर निर्भरता कम होने से बच्चे के भीतर स्वावलंबन और आत्मविश्वास पैदा होता है।
3. **संचार स्थापना:** विशेष रूप से मूक-बधिर या ऑटिज़्म से पीड़ित बच्चों के लिए सांकेतिक भाषा या पिक्चर बोर्ड संचार के माध्यम के रूप में कार्य करते हैं।

<u>निष्कर्ष:</u> अंततः यह कहा जा सकता है कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को मुख्यधारा में वापस लाने में सहायक उपकरण केवल यांत्रिक सामग्री नहीं, बल्कि उनके सशक्तिकरण के हथियार हैं। हालाँकि, केवल उपकरणों की आपूर्ति पर्याप्त नहीं है; शिक्षकों और अभिभावकों को इनके सही उपयोग के प्रति जागरूक होना होगा। यदि सरकारी और निजी स्तर पर ये आधुनिक तकनीकें बच्चों तक आसानी से पहुँचाई जा सकें, तभी समावेशी शिक्षा का लक्ष्य पूरा होगा और एक भेदभाव रहित समाज का निर्माण संभव होगा।

www.dascoaching.in

5. Explain various methods used for educational rehabilitation of children with special needs. বিশেষ চাহিদাসম্পন্ন শিশুদের পুনর্বাসনে ব্যবহৃত নানাবিধ পদ্ধতির ব্যাখ্যা করুন। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के शैक्षिक पुनर्वास के लिए प्रयुक्त विभिन्न विधियों को समझाइए। **2022**

Ans: <u>प्रस्तावना:</u> शैक्षिक पुनर्वास से तात्पर्य उस नियोजित प्रक्रिया से है, जिसके माध्यम से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक सीमाओं को दूर कर उन्हें सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा के अवसर प्रदान किए जाते हैं। यह केवल अक्षर ज्ञान नहीं, बल्कि बच्चे के आत्मविश्वास बढ़ाने और समाजीकरण का एक माध्यम है। PWD अधिनियम (1995) और बाद के RPwD अधिनियम (2016) के अनुसार, प्रत्येक बच्चे को समान स्तर की शिक्षा पाने का अधिकार है।

<u>शैक्षिक पुनर्वास की प्रमुख पद्धतियाँ:</u>

1. **व्यक्तिगत शिक्षण योजना (IEP):** यह पुनर्वास की सबसे महत्वपूर्ण पद्धति है। प्रत्येक विशेष बच्चे की ज़रूरतें और सीमाएँ अलग होती हैं, इसलिए उनके लिए एक निश्चित लक्ष्य निर्धारित कर पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है। इसमें बच्चे के वर्तमान प्रदर्शन का आकलन करके अल्पकालिक और दीर्घकालिक शैक्षिक लक्ष्य तय किए जाते हैं।
2. **बहु-संवेदी शिक्षण पद्धति (Multi-Sensory Approach):** विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को अक्सर एक विशिष्ट इंद्रिय के माध्यम से सीखने में कठिनाई होती है। इस पद्धति में दृष्टि, श्रवण, स्पर्श और गंध—इन सभी इंद्रियों का उपयोग करके पाठ पढ़ाया जाता है। जैसे—ब्रेल पद्धति (दृष्टिहीनों के लिए) या सैंड-ट्रे (Sand-tray) का उपयोग।
3. **सहायक तकनीक का उपयोग:** तकनीक ने विशेष बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को आसान बना दिया है।
   - **श्रवण बाधित:** हियरिंग एड या एफएम सिस्टम।
   - **दृष्टि बाधित:** स्क्रीन रीडिंग सॉफ्टवेयर (जैसे—JAWS), ऑडियो बुक।
   - **शारीरिक दिव्यांग:** विशेष प्रकार के की-बोर्ड या जॉयस्टिक।
4. **पाठ्यक्रम अनुकूलन (Curriculum Adaptation):** सामान्य पाठ्यक्रम को विशेष बच्चों के अनुकूल बनाने का नाम ही अनुकूलन है। इसमें पाठ्य विषय को छोटे-छोटे हिस्सों में बाँटना (Task Analysis), अतिरिक्त समय देना और मूल्यांकन पद्धति में लचीलापन लाना शामिल है।

www.dascoaching.in

5. **सहकर्मी शिक्षण और मित्र-प्रणाली (Peer Tutoring & Buddy System):** समावेशी कक्षा में सामान्य छात्रों और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किए जाते हैं। जब सक्षम छात्र विशेष बच्चों की पढ़ाई में मदद करते हैं, तो दोनों में सामाजिक मूल्यों और सहानुभूति का विकास होता है।
6. **विशेष शिक्षक और थेरेपिस्ट की भूमिका:** शैक्षिक पुनर्वास में सामान्य शिक्षक के साथ-साथ रिसोर्स टीचर, स्पीच थेरेपिस्ट और ऑक्युपेशनल थेरेपिस्ट के समन्वित प्रयासों की आवश्यकता होती है। वे बच्चों की बोलने की झिझक दूर करने या मांसपेशियों के विकास में सहायता करते हैं।
7. **बाधा-मुक्त वातावरण का निर्माण:** विद्यालय का बुनियादी ढाँचा ऐसा होना चाहिए कि विशेष बच्चे आसानी से आवाजाही कर सकें। जैसे—रैंप (Ramp) बनाना, चौड़े दरवाजे और शौचालयों में विशेष हैंडल लगाना। उपयुक्त वातावरण के बिना शैक्षिक पुनर्वास असंभव है।

निष्कर्ष: अंत में यह कहा जा सकता है कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का शैक्षिक पुनर्वास केवल सरकारी कानून नहीं, बल्कि एक मानवीय उत्तरदायित्व है। यदि ऊपर बताई गई पद्धतियों को सही बुनियादी ढाँचे और संवेदनशीलता के साथ लागू किया जाए, तो ये बच्चे समाज की मुख्यधारा में खुद को स्थापित करने में सक्षम होंगे। समावेशी शिक्षा की सफलता शिक्षकों, अभिभावकों और समाज के सकारात्मक दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। सही पुनर्वास के माध्यम से ही एक बच्चे की 'अक्षमता' उसकी 'विशेष क्षमता' में बदल सकती है।

6. Explain the importance of multisensory teaching and reflective teaching in Inclusive Education. অন্তর্ভুক্তিমূলক শিক্ষাক্ষেত্রে বহুসংবেদনশীল শিক্ষাদান এবং প্রতিফলিত শিক্ষার গুরুত্ব ব্যাখ্যা করুন। समावेशी शिक्षा में बहु-इंद्रिय शिक्षण और परावर्ती शिक्षण के महत्व को समझाइए। **2023**

Ans: प्रस्तावना: समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) एक ऐसी प्रणाली है जहाँ सामान्य विद्यार्थियों के साथ-साथ विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (CWSN) और विभिन्न सामाजिक-आर्थिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के छात्र एक ही कक्षा में साथ मिलकर शिक्षा प्राप्त करते हैं। इस विविधतापूर्ण वातावरण में हर छात्र की सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पारंपरिक शिक्षण पद्धतियाँ हमेशा पर्याप्त नहीं होतीं। इसलिए, समावेशी परिवेश को प्रभावी बनाने के लिए **बहु-संवेदी शिक्षण (Multisensory Teaching)** और **चिंतनशील शिक्षण (Reflective Teaching)** को अनिवार्य उपकरण माना जाता है।

शिक्षण में बहु-संवेदी और चिंतनशील शिक्षण का महत्व:

1. बहु-संवेदी शिक्षण (Multisensory Teaching): यह एक ऐसी तकनीक है जिसमें विद्यार्थी की एक से अधिक इंद्रियों (जैसे— देखना, सुनना, स्पर्श और गति) को एक साथ सक्रिय करने का प्रयास किया जाता है। समावेशी शिक्षा में इसका महत्व इस प्रकार है-

1. **सीखने की विविधता का समाधान:** कक्षा में कुछ छात्र देखकर (Visual), कुछ सुनकर (Auditory) और कुछ करके (Kinesthetic) सीखते हैं। यह पद्धति सभी के लिए विषय को सुलभ बनाती है।
2. **विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सहायता:** डिस्लेक्सिया या ADHD जैसी सीखने की अक्षमता वाले बच्चों के लिए यह अत्यंत प्रभावी है। उदाहरण के लिए, किसी अक्षर को स्पर्श करते हुए उसे पढ़ना मस्तिष्क में सूचना को तेजी से अंकित करता है।
3. **स्मृति प्रतिधारण में वृद्धि:** जब जानकारी कई तंत्रिका मार्गों से मस्तिष्क तक पहुँचती है, तो उसे लंबे समय तक याद रखना आसान हो जाता है।
4. **सक्रिय भागीदारी:** इस पद्धति में छात्र निष्क्रिय श्रोता के बजाय सक्रिय भागीदार बनते हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।

2. चिंतनशील शिक्षण (Reflective Teaching): यह एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ शिक्षक अपनी शिक्षण पद्धतियों का नियमित अवलोकन और मूल्यांकन करते हैं और आवश्यकतानुसार उनमें बदलाव लाते हैं। समावेशी शिक्षा में इसका महत्व-

1. **छात्र की आवश्यकता को समझना:** शिक्षक चिंतन के माध्यम से समझ सकते हैं कि किस छात्र के लिए कौन सी पद्धति काम कर रही है।
2. **व्यावसायिक विकास:** अपनी गलतियों और सफलताओं का विश्लेषण करने से शिक्षक के कौशल में वृद्धि होती है और वे लचीली शिक्षण योजनाएँ बना पाते हैं।
3. **व्यक्तिगत ध्यान (Individualized Attention):** चिंतनशील होने से शिक्षक हर छात्र की सीमाओं और जरूरतों के प्रति जागरूक रहते हैं।
4. **शिक्षण पद्धति का अनुकूलन:** यदि छात्र कोई विषय नहीं समझ पाते, तो शिक्षक अगले प्रयास में नई रणनीतियों (जैसे सहपाठी शिक्षण) का उपयोग कर सकते हैं।

www.dascoaching.in

3. दोनों का समन्वय: समावेशी विद्यालयों में इन दोनों अवधारणाओं का मेल शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाता है। जब शिक्षक **चिंतनशील** होता है, तब वह समझ पाता है कि एक ही तरीका सबके लिए काम नहीं करेगा, और तभी वह **बहु-संवेदी** विधियों का सहारा लेता है।

निष्कर्ष: समावेशी शिक्षा का मूल आधार **लचीलापन** और **अनुकूलनशीलता** है। बहु-संवेदी शिक्षण छात्रों की भिन्न क्षमताओं का सम्मान करता है, जबकि चिंतनशील शिक्षण शिक्षक को एक जागरूक मार्गदर्शक बनाता है। **BSAEU** पाठ्यक्रम के अनुसार, 'सबके लिए शिक्षा' के सपने को साकार करने के लिए एक सफल शिक्षक के रूप में इन दोनों पद्धतियों का प्रयोग नितांत आवश्यक है।

7. Discuss the skills and competencies of teacher and teacher educators for secondary education in inclusive settings. অন্তর্ভুক্তিমূলক ব্যবস্থাপনায় মাধ্যমিক শিক্ষাক্ষেত্রে শিক্ষক ও শিক্ষক প্রশিক্ষকদের প্রয়োজনীয় দক্ষতা ও সক্ষমতাগুলি আলোচনা করুন। समावेशी व्यवस्था में माध्यमिक शिक्षा के लिए शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षकों की आवश्यक दक्षताओं और क्षमताओं पर चर्चा करें। **2023**

Ans: प्रस्तावना: समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जहाँ सामान्य विद्यार्थी और विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (CWSN) एक ही छत के नीचे एक साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं। माध्यमिक स्तर पर किशोरावस्था के मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों के कारण यह व्यवस्था और भी चुनौतीपूर्ण हो जाती है। बाबा साहेब अंबेडकर शिक्षा विश्वविद्यालय (BSAEU) के पाठ्यक्रम के अनुसार, एक समावेशी विद्यालय के निर्माण में शिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

माध्यमिक स्तर पर समावेशी प्रबंधन में शिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए आवश्यक कौशल और क्षमताएं नीचे दी गई हैं:

1. शिक्षकों के कौशल और क्षमताएं: माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के पास केवल विषय का ज्ञान होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि विविध कक्षाओं के प्रबंधन के लिए विशेष कौशल होना आवश्यक है-

1. **छात्र विविधता की पहचान:** एक शिक्षक को यह पहचानना चाहिए कि किस छात्र की सीखने की अक्षमता या विशेष आवश्यकता क्या है। व्यक्तिगत मतभेदों के प्रति संवेदनशील होना एक प्राथमिक कौशल है।

2. **पाठ्यचर्या अनुकूलन (Curriculum Adaptation):** सामान्य पाठ्यक्रम को इस तरह बदलना कि वह विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए सुबोध हो। जैसे—दृष्टिबाधित छात्रों के लिए मौखिक या ब्रेल पद्धति और श्रवण बाधितों के लिए दृश्य सामग्री का उपयोग।
3. **सहयोगात्मक अधिगम (Collaborative Learning):** समूह कार्य या 'Peer Tutoring' के माध्यम से छात्रों के बीच भाईचारे की भावना पैदा करने का कौशल। इससे सामान्य छात्र अपने विशेष मित्रों की मदद करना सीखते हैं।
4. **सहायक तकनीक का उपयोग:** आधुनिक तकनीक जैसे स्क्रीन रीडर, हियरिंग एड या विशेष सॉफ्टवेयर के उपयोग में शिक्षक को कुशल होना चाहिए।
5. **मनोवैज्ञानिक सहायता:** माध्यमिक स्तर के छात्र किशोरावस्था से गुजरते हैं। इस समय CWSN की हीन भावना को दूर करने और उनका आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए शिक्षक को एक कुशल परामर्शदाता की भूमिका निभानी होती है।

2. शिक्षक प्रशिक्षकों के कौशल और क्षमताएं: शिक्षक प्रशिक्षक वे होते हैं जो भविष्य के शिक्षकों को समावेशी शिक्षा के लिए तैयार करते हैं। उनके कौशल इस प्रकार हैं-

1. **प्रशिक्षण रणनीतियों का निर्धारण:** शिक्षकों को व्यावहारिक प्रशिक्षण (Hands-on training) देना कि विविध कक्षा को कैसे संभालना है। केवल सैद्धांतिक चर्चा नहीं, बल्कि केस स्टडी के माध्यम से समाधान सिखाने की क्षमता होनी चाहिए।
2. **नीतियों और कानूनों की समझ:** भारतीय संविधान की धाराओं, RCI अधिनियम (1992), PWD अधिनियम (1995) और RPWD अधिनियम (2016) के बारे में गहरा ज्ञान ताकि वे शिक्षकों को कानूनी अधिकारों के प्रति जागरूक कर सकें।
3. **मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन:** पारंपरिक परीक्षाओं के बजाय समावेशी मूल्यांकन (जैसे—रचनात्मक मूल्यांकन, CCE) की तकनीक सिखाने का कौशल।
4. **सहयोगात्मक नेटवर्किंग:** डॉक्टरों, फिजियोथेरेपिस्ट, स्पीच थेरेपिस्ट और अभिभावकों के साथ शिक्षक कैसे समन्वय स्थापित करें, यह दिशा दिखाना प्रशिक्षकों का कार्य है।
5. **शोधपरक मानसिकता:** समावेशी शिक्षा की नई पद्धतियों और वैश्विक स्तर पर अपनाए गए सर्वोत्तम अभ्यासों (Best Practices) पर शोध करना और उन्हें शिक्षकों तक पहुँचाना।

www.dascoaching.in

निष्कर्ष: अंततः, समावेशी शिक्षा केवल एक पद्धति नहीं, बल्कि एक दर्शन है। माध्यमिक स्तर पर इसकी सफलता शिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षकों की ईमानदारी और व्यावसायिकता पर निर्भर करती है। जब एक शिक्षक प्रत्येक छात्र की अंतर्निहित क्षमता का सम्मान करता है और प्रशिक्षक उस मानसिकता को बनाने में मदद करता है, तभी एक वास्तविक 'समावेशी विद्यालय' बन पाता है। यह न केवल विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए, बल्कि समाज के सभी छात्रों में सहानुभूति और सहिष्णुता बढ़ाने में सहायक होता है।

8. State the problems of Inclusion in the real classroom situation. Briefly discuss the remedial ways for addressing them. বাস্তব শ্রেণীকক্ষ পরিস্থিতিতে অন্তর্ভুক্তিকরণের সমস্যাগুলি চিহ্নিত করুন। এই সমস্যাগুলির প্রতিকারের উপায় সংক্ষেপে আলোচনা করুন। वास्तविक कक्षा स्थिति में समावेशन की समस्याओं को बताइए। इन समस्याओं से निपटने के उपायों पर संक्षेप में चर्चा करें। **2024**

Ans: <u>प्रस्तावना:</u> समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) एक ऐसी आधुनिक शिक्षा प्रणाली है, जहाँ लिंग, धर्म, जाति या शारीरिक और मानसिक क्षमता की परवाह किए बिना प्रत्येक छात्र को एक ही कक्षा में एक साथ शिक्षा प्रदान की जाती है। बाबासाहेब अंबेडकर शिक्षा विश्वविद्यालय (BSAEU) के पाठ्यक्रम के अनुसार, 'एक समावेशी विद्यालय का निर्माण' (Creating an Inclusive School) विषय भविष्य के शिक्षकों को इस विविधतापूर्ण कक्षा के प्रबंधन का प्रशिक्षण देता है। हालांकि यह धारणा सैद्धांतिक रूप से बहुत प्रभावी लगती है, लेकिन वास्तविक कक्षा की स्थितियों में इसे लागू करते समय शिक्षकों और प्रशासन को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

<u>वास्तविक कक्षा की स्थितियों में समावेशन की समस्याएँ:</u> वास्तविक कक्षाओं में समावेशन प्रक्रिया को लागू करने के मार्ग में मुख्य बाधाएँ नीचे दी गई हैं-

1. **बुनियादी ढांचे का अभाव:** भारत जैसे विकासशील देश में अधिकांश सामान्य सरकारी या निजी स्कूलों का बुनियादी ढांचा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के लिए उपयुक्त नहीं है। जैसे— रैंप की कमी, लिफ्ट की अनुपस्थिति या विशेष प्रकार के शौचालयों का अभाव समावेशन के मार्ग में बड़ी बाधा है।
2. **नकारात्मक दृष्टिकोण:** सहपाठियों, अभिभावकों और कई बार शिक्षकों में भी विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण या सहानुभूति की कमी देखी जाती है। सामान्य छात्रों के अभिभावकों को अक्सर लगता है कि यदि उनके बच्चे विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ पढ़ेंगे, तो शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है।

www.dascoaching.in

3. **उचित प्रशिक्षण की कमी:** समावेशी कक्षा में सामान्य और विशेष आवश्यकता वाले—दोनों तरह के बच्चों को संभालने के लिए जिस विशेष कौशल या प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है, वह अधिकांश सामान्य शिक्षकों के पास नहीं है। परिणामस्वरूप, वे अक्सर इन बच्चों की सीखने की जरूरतों को समझने में विफल रहते हैं।
4. **बड़ी कक्षाएं और छात्रों की अधिकता:** हमारे देश की सामान्य कक्षाओं में छात्रों की संख्या बहुत अधिक होती है। एक शिक्षक के लिए 30-40 छात्रों के बीच 2-3 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों पर अलग से ध्यान देना लगभग असंभव हो जाता है।
5. **पाठ्यक्रम की अनम्यता (कठोरता):** वर्तमान पाठ्यक्रम मुख्य रूप से सामान्य छात्रों की योग्यता और गति के अनुसार तैयार किया गया है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए यह पाठ्यक्रम अक्सर कठिन हो जाता है। मूल्यांकन के तरीकों में विविधता की कमी भी समावेशन को कठिन बनाती है।
6. **संसाधनों की सीमाएँ:** समावेशी शिक्षा के लिए आवश्यक शिक्षण सामग्री (जैसे—ब्रेल पुस्तकें, श्रवण यंत्र, विशेष सॉफ्टवेयर) अक्सर स्कूलों में आसानी से उपलब्ध नहीं होती हैं।

<u>समस्या समाधान के उपाय</u>: इन समस्याओं को दूर करने और समावेशन को सफल बनाने के लिए निम्नलिखित कदम उठाने की आवश्यकता है-

1. **बुनियादी ढांचे का विकास:** स्कूल भवनों को **'बाधा-मुक्त' (Barrier-free)** बनाया जाना चाहिए। प्रत्येक स्कूल में रैंप, चौड़े दरवाजे और विशेष शौचालयों की व्यवस्था अनिवार्य की जानी चाहिए।
2. **शिक्षक प्रशिक्षण:** शिक्षकों के लिए नियमित 'इन-सर्विस' और 'प्री-सर्विस' प्रशिक्षण आयोजित किया जाना चाहिए, जहाँ वे विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के मनोविज्ञान और **'व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम' (IEP)** के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकें।
3. **जागरूकता बढ़ाना:** स्कूलों में जागरूकता शिविर आयोजित कर अभिभावकों और छात्रों को समावेशन के महत्व को समझाना चाहिए। सहानुभूति के बजाय 'समानुभूति' (Empathy) का वातावरण विकसित करना चाहिए।
4. **लचीला पाठ्यक्रम और मूल्यांकन:** पाठ्यक्रम को लचीला और विविध बनाया जाना चाहिए। आवश्यकतानुसार मौखिक परीक्षा, प्रोजेक्ट या चित्रों के माध्यम से मूल्यांकन के अवसर दिए जाने चाहिए।

www.dascoaching.in

5. **सहायक कर्मचारियों की नियुक्ति:** सामान्य शिक्षकों के साथ-साथ **'रिसोर्स टीचर' (Resource Teacher)** या विशेष शिक्षकों की नियुक्ति की जानी चाहिए, जो विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की अलग से मदद कर सकें।
6. **प्रौद्योगिकी का उपयोग:** कक्षा में सहायक तकनीक (Assistive Technology) जैसे—दृश्य-श्रव्य सामग्री (Audio-Visual Aids), स्पीच-टू-टेक्स्ट सॉफ्टवेयर आदि का उपयोग बढ़ाना चाहिए।

निष्कर्ष: अंततः यह कहा जा सकता है कि समावेशन केवल एक शैक्षिक पद्धति नहीं है, बल्कि एक सामाजिक जिम्मेदारी है। वास्तविक क्षेत्र में कई सीमाएँ होने के बावजूद, यदि बुनियादी ढांचे में बदलाव और मानसिक दृष्टिकोण में सुधार किया जाए, तो एक सच्चे समावेशी समाज का निर्माण संभव है। BSAEU द्वारा निर्देशित इस पाठ्यक्रम का सही अनुप्रयोग भविष्य के शिक्षकों को एक भेदभाव रहित कक्षा उपहार में देने में मदद करेगा।

9. Discuss the causes and preventive measures of visual impairment. দৃষ্টি প্রতিবন্ধকতার কারণ ও প্রতিরোধের উপায়সমূহ আলোচনা করুন। दृष्टि बाधा के कारणों और रोकथाम के उपायों पर चर्चा करें। **2024**

Ans: प्रस्तावना: मनुष्य की पंचेंद्रियों में नेत्र को श्रेष्ठ माना गया है। जब कोई व्यक्ति अपनी सामान्य दृष्टि खो देता है और जिसके परिणामस्वरूप उसके दैनिक सामान्य कार्य बाधित होते हैं, तो उस स्थिति को ही 'दृष्टिबाधित' (Visual Impairment) कहा जाता है। आधुनिक समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) के संदर्भ में दृष्टिहीन या अल्पदृष्टि वाले बच्चों की पहचान करना और उन्हें मुख्यधारा की शिक्षा में वापस लाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। आमतौर पर जन्मजात दोष, दुर्घटना या बीमारी के कारण यह समस्या उत्पन्न हो सकती है।

दृष्टिबाधित होने के कारण: दृष्टिबाधिता के कारणों को मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है-

1. जन्मजात कारण (Congenital Causes):

- **आनुवंशिकता:** कई बार माता-पिता के आनुवंशिक दोष या जीन में परिवर्तन के कारण बच्चा दृष्टिहीन पैदा हो सकता है।

- **गर्भावस्था के दौरान माँ की बीमारी:** यदि गर्भावस्था के पहले तीन महीनों के दौरान माँ रूबेला (Rubella), उपदंश (Syphilis) या टोक्सोप्लाज्मोसिस जैसी बीमारियों से संक्रमित होती है, तो गर्भस्थ शिशु की दृष्टि शक्ति क्षतिग्रस्त होने की संभावना रहती है।
- **असामयिक जन्म:** समय से बहुत पहले (Premature birth) बच्चे के जन्म होने और उसे लंबे समय तक इनक्यूबेटर में उच्च स्तर की ऑक्सीजन में रखने से 'रेटिनोपैथी ऑफ प्रीमैच्योरिटी' (Retinopathy of Prematurity) हो सकती है।

2. अर्जित कारण (Acquired Causes):

- **विटामिन-A की कमी:** बच्चों में अंधापन का एक मुख्य कारण आहार में विटामिन-A की कमी है, जिसके परिणामस्वरूप 'जेरोफ्थेल्मिया' (Xerophthalmia) रोग होता है।
- **संक्रामक रोग:** चेचक, खसरा, ट्रेकोमा या आँखों के विभिन्न संक्रमणों का सही इलाज न होने पर दृष्टि शक्ति नष्ट हो सकती है।
- **नेत्र रोग:** मोतियाबिंद (Cataract), ग्लूकोमा (Glaucoma), और रेटिना के क्षय संबंधी समस्याओं के कारण लोग दृष्टि खो देते हैं।
- **अपवर्तन दोष (Refractive Errors):** यदि मायोपिया या हाइपरमेट्रोपिया जैसे दोषों को समय पर ठीक नहीं किया जाता है, तो दृष्टि गंभीर रूप से कम हो सकती है।

3. दुर्घटनाजन्य और अन्य कारण: आँखों में गंभीर चोट लगने, रसायनों के प्रवेश करने या पराबैंगनी (UV) किरणों के प्रभाव से आँखों को गंभीर नुकसान हो सकता है। इसके अलावा, वर्तमान युग में लंबे समय तक मोबाइल या कंप्यूटर स्क्रीन को देखना भी आँखों की समस्याओं का एक बड़ा कारण है।

<u>दृष्टिबाधिता रोकने के उपाय</u>: दृष्टिबाधिता को रोकने के लिए मुख्य रूप से तीन प्रकार की सावधानियां बरतनी आवश्यक हैं-

क) प्राथमिक निवारण (Primary Prevention):

- **संतुलित आहार:** बच्चों के आहार में प्रचुर मात्रा में विटामिन-A युक्त खाद्य पदार्थ (जैसे- गाजर, पालक, पका पपीता, दूध) शामिल करना आवश्यक है।

- **टीकाकरण:** गर्भवती माँ और जन्म के बाद बच्चे को निर्धारित समय पर रूबेला और खसरे का टीका लगवाना चाहिए।
- **जागरूकता:** आम लोगों को आँखों के स्वास्थ्य और स्वच्छता के बारे में जागरूक करना चाहिए।

ख) माध्यमिक निवारण (Secondary Prevention):

- **त्वरित पहचान:** स्कूल के शिक्षकों या अभिभावकों को बच्चे की आँखों में कोई भी असामान्यता (जैसे- बार-बार आँखें मलना, बहुत पास से किताब पढ़ना) दिखने पर तुरंत डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिए।
- **नियमित नेत्र परीक्षण:** साल में कम से कम एक बार नेत्र विशेषज्ञ से आँखों की जाँच करानी चाहिए।
- **सही उपचार:** मोतियाबिंद या ग्लूकोमा जैसी बीमारियों के मामले में शीघ्र सर्जरी या सही दवाओं के प्रयोग से अंधेपन को रोका जा सकता है।

ग) तृतीयक निवारण (Tertiary Prevention):

- **चश्मे का उपयोग:** दृष्टि दोष के अनुसार सही पावर के चश्मे या कांटेक्ट लेंस का उपयोग करना।
- **सहायक उपकरणों का उपयोग:** जिनकी दृष्टि बहुत कम है, उनके लिए ब्रेल पद्धति (Braille), बड़े अक्षरों वाली किताबें या ऑडियो-विजुअल सामग्री की व्यवस्था करना।

निष्कर्ष: दृष्टिबाधिता केवल एक व्यक्तिगत समस्या नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक समस्या भी है। हालांकि, सही समय पर जागरूकता और उपचार के माध्यम से लगभग 80 प्रतिशत अंधेपन को रोका जा सकता है। एक शिक्षक के रूप में, समावेशी कक्षा में इन छात्रों के प्रति संवेदनशील होना और उनकी क्षमताओं के अनुसार शैक्षिक वातावरण तैयार करना हमारा नैतिक दायित्व है। उचित अवसर और वातावरण मिलने पर दृष्टिबाधित छात्र भी समाज की संपत्ति बन सकते हैं।

10. Write down the recommendations of NCFTE-2009 for teacher preparation in inclusive education. Briefly describe the different types of SLD. অন্তর্ভুক্তিমূলক শিক্ষার জন্য শিক্ষক প্রস্তুতির ক্ষেত্রে NCFTE-২০০৯-এর সুপারিশগুলি লিখুন। বিভিন্ন ধরণের SLD (সুনির্দিষ্ট শিখন অক্ষমতা) সংক্ষেপে বর্ণনা করুন। समावेशी शिक्षा के लिए शिक्षक तैयारी हेतु NCFTE-2009 की सिफारिशों को लिखिए। SLD (विशिष्ट शिक्षण अक्षमता) के विभिन्न प्रकारों का संक्षेप में वर्णन कीजिए। **2025**

Ans: <u>प्रस्तावना:</u> समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) एक ऐसी आधुनिक व्यवस्था है जहाँ सामान्य बच्चे और विशेष आवश्यकता वाले बच्चे एक ही कक्षा में बिना किसी भेदभाव के शिक्षा ग्रहण करते हैं। वर्ष 2009 में 'नेशनल काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन' (NCTE) द्वारा प्रवर्तित NCFTE-2009 (National Curriculum Framework for Teacher Education) ने शिक्षक तैयारी के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तनों की बात कही। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को इस तरह कुशल बनाना था कि वे कक्षा की विविधता को बाधा के रूप में नहीं, बल्कि एक संसाधन के रूप में स्वीकार करें।

<u>समावेशी शिक्षा में NCFTE-2009 की सिफारिशें:</u> NCFTE-2009 ने शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में समावेशी संदर्भ में कई महत्वपूर्ण सिफारिशें प्रदान कीं:

1. **दृष्टिकोण में परिवर्तन:** शिक्षकों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान देना पर्याप्त नहीं है, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति उनका सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना होगा। सहानुभूति और संवेदनशीलता बढ़ाने के लिए विशेष मॉड्यूल शामिल करने की बात कही गई है।
2. **पाठ्यक्रम सुधार:** शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में 'समावेशी शिक्षा' को एक अनिवार्य विषय के रूप में रखने की सिफारिश की गई है। इसके माध्यम से शिक्षकों को बताया जाएगा कि सामान्य पाठ्यक्रम को लचीला बनाकर विशेष बच्चों के अनुकूल कैसे बनाया जाए।
3. **विविधता की पहचान:** कक्षा में जाति, लिंग, धर्म या शारीरिक अक्षमता के बावजूद जो विविधता होती है, उसे उत्सव के रूप में मनाने का कौशल हासिल करना होगा। शिक्षक को यह समझना होगा कि प्रत्येक बच्चा अलग है और उनके सीखने के तरीके भी अलग हैं।
4. **सहयोगी शिक्षण रणनीतियाँ:** प्रशिक्षण में **पियर-टीचिंग (Peer-teaching)**, सहकारी शिक्षण और समूह कार्य पर जोर दिया गया है। शिक्षक कक्षा में बच्चों के बीच पारस्परिक सहयोग का वातावरण बना सकें, यह कौशल अनिवार्य है।
5. **मूल्यांकन प्रणाली में बदलाव:** पारंपरिक लिखित परीक्षा के स्थान पर **सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE)** और लचीली मूल्यांकन पद्धतियों का उपयोग सीखना होगा। बच्चों की क्षमता के अनुसार मूल्यांकन उपकरण तैयार करने का प्रशिक्षण शिक्षकों को देना होगा।
6. **सहायक उपकरणों का उपयोग:** आधुनिक तकनीक और **ICT (Information and Communication Technology)** के माध्यम से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए सीखने को कैसे सरल बनाया जाए, इस पर व्यावहारिक प्रशिक्षण देने की बात कही गई है।

www.dascoaching.in

सुनिधिष्ट अधिगम अक्षमता (Specific Learning Disability - SLD): SLD एक तंत्रिका संबंधी समस्या है जो किसी व्यक्ति की सूचना प्राप्त करने, संसाधित करने और व्यक्त करने की क्षमता को प्रभावित करती है। यह सामान्य बौद्धिक अक्षमता नहीं है। इसके मुख्य प्रकार हैं:

1. **डिस्लेक्सिया (Dyslexia):** यह पढ़ने संबंधी अक्षमता है। प्रभावित बच्चों को अक्षर पहचानने में कठिनाई होती है, वे तेजी से नहीं पढ़ पाते और वर्तनी की गलतियाँ करते हैं।
2. **डिस्ग्राफिया (Dysgraphia):** यह लेखन संबंधी समस्या है। इसमें बच्चे की लिखावट बहुत अस्पष्ट होती है, शब्दों या अक्षरों के बीच का अंतर ठीक नहीं रहता और लिखने में बहुत मेहनत लगती है।
3. **डिस्कैलकुलिया (Dyscalculia):** यह गणितीय समस्या है। बच्चों को संख्या पहचानने, पहाड़े याद रखने या सामान्य जोड़-घटाव करने में भारी कठिनाई होती है।
4. **डिस्प्रेक्सिया (Dyspraxia):** यह मांसपेशियों के संचालन या शारीरिक समन्वय की कमी है। हाथ और आँख के सही समन्वय न होने के कारण बच्चा छोटे काम (जैसे—बटन लगाना, कैंची चलाना) ठीक से नहीं कर पाता।
5. **ऑडिटरी प्रोसेसिंग डिसऑर्डर (APD):** इसमें बच्चा जो सुनता है उसे मस्तिष्क सही ढंग से संसाधित नहीं कर पाता, जिससे निर्देश समझने में समस्या होती है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, NCFTE-2009 समावेशी शिक्षा के प्रसार के लिए शिक्षकों को केवल 'सूचना प्रदाता' के रूप में नहीं, बल्कि एक **'सुविधाप्रदाता' (Facilitator)** के रूप में विकसित करना चाहता है। दूसरी ओर, SLD से प्रभावित बच्चों की सही समय पर पहचान और उनके अनुकूल शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग ही वर्तमान समावेशी विद्यालयों का मुख्य लक्ष्य है। शिक्षकों का उचित प्रशिक्षण ही एक भेदभाव रहित और समृद्ध शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकता है।

www.dascoaching.in

11. Write short notes. I) Salamanca Statement. II) IEP. সংক্ষিপ্ত টীকা লিখুন: ১) সালামাঙ্কা বিবৃতি (Salamanca Statement)। ২) IEP (ব্যক্তিগত শিক্ষা পরিকল্পনা)। संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए: I) सालामान्का वक्तव्य (Salamanca Statement)। II) आई.ई.पी. (IEP) **2025**

Ans: 1. सालामांका विवरण (Salamanca Statement, 1994):

<u>प्रस्तावना:</u> समावेशी शिक्षा के इतिहास में सालामांका विवरण एक युगांतरकारी कदम है। 7 से 10 जून 1994 तक स्पेन के सालामांका शहर में यूनेस्को (UNESCO) और स्पेन सरकार के संयुक्त तत्वावधान में 'विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा' पर एक विश्व सम्मेलन आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में स्वीकृत घोषणापत्र को 'सालामांका विवरण' के रूप में जाना जाता है। इसमें विश्व के 92 देशों और 25 अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने भाग लिया था।

<u>मुख्य लक्ष्य और आदर्श:</u> सालामांका विवरण का मुख्य लक्ष्य था— **"सभी के लिए शिक्षा" (Education for All)**। इसका मूल दर्शन यह है कि प्रत्येक बच्चे को शिक्षा का मौलिक अधिकार है और उनमें से प्रत्येक की अपनी क्षमताएं, रुचियां और सीखने की ज़रूरतें अलग-अलग होती हैं। इसलिए, सामान्य शिक्षा प्रणाली के भीतर ही विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को शामिल किया जाना चाहिए।

<u>प्रमुख विशेषताएं:</u>

1. **समावेशन (Inclusion):** विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए अलग स्कूलों के बजाय सामान्य स्कूलों में ही उनकी शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए।
2. **विविधता की स्वीकृति:** प्रत्येक बच्चे की सीखने की शैली अलग होती है, इसलिए पाठ्यक्रम को लचीला बनाया जाना चाहिए ताकि वह प्रत्येक बच्चे की जरूरतों को पूरा कर सके।
3. **शिक्षक की भूमिका:** शिक्षकों को समावेशी शिक्षा के बारे में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि वे विविध आवश्यकताओं वाली कक्षाओं का संचालन कर सकें।
4. **सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव:** यह विवरण दिव्यांग बच्चों के प्रति समाज के नकारात्मक दृष्टिकोण को बदलकर उन्हें मुख्यधारा में वापस लाने की बात करता है।

www.dascoaching.in

निष्कर्ष: सालामांका विवरण ने दुनिया भर में समावेशी शिक्षा के लिए कानूनी और नैतिक आधार स्थापित किया। इसने सिद्ध कर दिया कि समावेशी विद्यालय ही भेदभाव को दूर करने और एक न्यायपूर्ण समाज के निर्माण का मुख्य हथियार हैं।

2. IEP (व्यक्तिगत शिक्षा योजना - Individualized Education Program):

प्रस्तावना: समावेशी शिक्षा प्रणाली में प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की ज़रूरतें समान नहीं होती हैं। विशेष रूप से **विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN)** के लिए उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार जो विशेष शिक्षा योजना तैयार की जाती है, उसे ही **व्यक्तिगत शिक्षा योजना (IEP)** कहा जाता है। यह एक लिखित दस्तावेज़ है जो विद्यार्थी, शिक्षक और अभिभावकों के समन्वय से तैयार किया जाता है।

IEP का महत्व और उपयोगिता: IEP मुख्य रूप से एक विद्यार्थी के वर्तमान शिक्षण स्तर का विश्लेषण करता है और उसके भविष्य के लक्ष्य निर्धारित करता है। यह विद्यार्थी की सीमाओं पर नहीं, बल्कि उसकी संभावनाओं पर जोर देता है।

IEP के मुख्य घटक:

1. **वर्तमान शिक्षण स्तर (PLAAFP):** विद्यार्थी के वर्तमान कौशल और ज्ञान के स्तर का मूल्यांकन करना।
2. **वार्षिक लक्ष्य:** एक वर्ष के भीतर विद्यार्थी कितनी प्रगति करेगा, इसका एक विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित करना।
3. **विशेष सेवाएँ:** विद्यार्थी को किस प्रकार की थेरेपी (जैसे- स्पीच थेरेपी या फिजियोथेरेपी) या सहायक उपकरणों की आवश्यकता है, उन्हें लिपिबद्ध करना।
4. **मूल्यांकन पद्धति:** विद्यार्थी अपने लक्ष्यों को कैसे प्राप्त कर रहा है, इसकी जाँच के लिए नियमित मूल्यांकन प्रणाली की रूपरेखा।
5. **समय सीमा:** कौन सी सेवा कितने समय तक चलेगी और कब शुरू होगी, इसका उल्लेख।

IEP बनाने की प्रक्रिया: यह एक सामूहिक प्रयास है। इसमें स्कूल के प्रधानाचार्य, विशेष शिक्षक (Special Educator), कक्षा शिक्षक, मनोवैज्ञानिक और अभिभावक भाग लेते हैं। हर साल इस योजना की समीक्षा (Review) की जाती है और आवश्यकतानुसार बदलाव किए जाते हैं।

www.dascoaching.in

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, IEP **समावेशी शिक्षा की रीढ़** है। यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी बच्चा अपनी शारीरिक या मानसिक सीमाओं के कारण शिक्षा से वंचित न रहे। उचित योजना और सही कार्यान्वयन के माध्यम से प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी अधिकतम क्षमता के अनुसार शिक्षित करना ही इसका मुख्य उद्देश्य है।

*****

आपको यह ई-बुक कैसी लगी, या यदि आपके पास कोई फीडबैक या सुझाव है, तो कृपया नीचे दिए गए संचार माध्यमों से हमें बताएं या नीचे दिए गए गूगल फॉर्म को भरें। हमें आपके फीडबैक का इंतज़ार रहेगा!

Email: contact.dascoaching@gmail.com
WhatsApp / Arattai: +91 9339697099

FOLLOW OUR WEBSITE REGULARLY FOR MORE UPDATE

www.dascoaching.in Or, https://bedcourse.dascoaching.in/

Send Your Feedback (Your feedback inspires our progress.)**>> Feedback Here**

📢 Join Our Community
Stay connected with "**DAS Coaching**" on your favourite platform:

📱 Join DAS Coaching Official Channel (Arattai) 📢

Thank You

www.dascoaching.in

DAS Coaching Standard Copyright & Disclaimer

Copyright © 2026 DAS Coaching (Education Service)

All Rights Reserved.

*This publication is the intellectual property of **DAS Coaching (Education Service).***

No part of this publication may be copied, reproduced, stored, translated, distributed, transmitted, or published in any form or by any means, whether electronic, digital, mechanical, photocopying, recording, or otherwise, without prior written permission from the publisher, except where permitted under applicable copyright law.

This material has been prepared solely for educational and academic purposes. While every effort has been made to ensure the accuracy and quality of the content, readers are encouraged to consult official university notifications, syllabus updates, and academic guidelines wherever applicable.

*Some language editing, formatting, and translation support may have been provided using Artificial Intelligence (AI)-assisted tools. However, the final content, editorial review, academic structure, and publication have been prepared, verified, and approved by **DAS Coaching.***

The publisher shall not be held responsible for any direct or indirect loss arising from the use of this publication.

Publisher

DAS Coaching (Education Service)

🌐 ***Website:*** *https://dascoaching.in*

📧 ***Email:*** *contact.dascoaching@gmail.com*

www.dascoaching.in